अंतिका सँ चयनित आत्मकथा

(8)

अपना नजरि मे

संपादक

केदार कानन



अनलकांत (गौरीनाथ) द्वारा संपादित 'अंतिका' मे 'अपना नजरि मे' नाम सँ एक टा स्तंभ छपैत रहल अछि, जाहि मे अनेक रचनाकारक संक्षिप्त आत्मकथा प्रकाश मे आयल। आब ओ केदार काननक संपादन मे पुस्तकाकार आबि रहल अछि।

मैथिली मे आत्मकथा आ जीवनीक लेखन बड़ विरल अछि। एहना स्थिति मे एतेक रास रचनाकारक आत्मकथात्मक इतिवृत्तक प्रकाशन परम संतोषक विषय थिक।

लेखक द्वारा रचित संसार आकर्षक होइत अछि; लेकिन लेखकक अपन जीवन तँ पाठक लेल अतत्तह रहस्यमय आ विस्मयकारी होइत अछि। लेखक के अंतरंग जीवन के झलक पयबा लेल पाठक मे भारी उत्सुकता रहैत छै। साहित्य मे जाहि जादुई भव्यताक दर्शन ओ करैत अछि, तकर मूल धरि पहुँचबाक लेल ओ लेखकक जीवन-सागर मे उतरय चाहैत अछि। ओहि अतल तल केँ स्पर्श करबाक लेल व्यग्र रहैत अछि, जतय साहित्य रूपी मोतीक स्रोत आ प्रेरणा नुकायल छै।

ई पोथी पाठकक ओहने चिर संचित अभिलाषा केँ परिपूर्ण करैत अछि।

—सुभाष चंद्र यादव

'अंतिका' अपन प्रकाशनक थोड़बा कालखंड मे जे अविस्मरणीय काज सब क' सकल ताहि मे 'अपना नजरि मे' स्तंभक बहुत महत्त्व छै। 'अपना नजरि मे', मने स्वयं अपना जीवन केँ देखबाक, लेखकक नजरिया। अपना समयक कृतकार्य लेखक लोकनि सँ ई लिखबाओल जाइत छल। खूब मन सँ लोक लिखितो छला।

परिभाषा मे जँ बान्हब तँ जीवनक एक अर्थ होयत। मुदा, वास्तविकता मे जँ देखब तँ तते विविधता भेटत जे बुझू बेहोश केँ होश मे आनि क' ठाढ़ क' देत। जीवन-दर्शन, जीवन-मूल्य आ जीवन-दृष्टि जें कि हरेक सचेत लोकक भिन्न-भिन्न रहैत छै, जे अपन पृष्ठभूमि आ परवरिश सँ प्रोग्राम्ड भेल रहै छै, तँ आदमी बदलने पूरा परिदृश्ये बदलल देखाइत अछि, भने एक्के मिथिला मे किऐ ने सब क्यो विकसित भेल होथि आ एक्के मैथिली मे सब क्यो लिखने होथि। जाहि समय मे ई अंक सब आयल रहय, बहुत ललक संग एहि आत्मकथ्य सब केँ पढ़ल गेल आ हमरा पक्का भरोस अछि, आजुक पाठक सेहो एहि रचना सब केँ साँस रोकि क' पढ़बा जोग पौता। जीवन जते रोमांचक होइ छै, ताहू सँ बेसी रोमांच छै जीवन-कथा पढ़बा मे।

—तारानंद वियोगी

अनलकांत (गँ
नजरि मे' नाम
अनेक रचनाक
आब ओ केदा
रहल अछि।
मैथिली
विरल अछि।
आत्मकथात्मक
विषय थिक।
लेखक द्व
लेकिन लेखक
रहस्यमय आ वि
जीवन के झलव
छै। साहित्य मे
तकर मूल धरि
मे उतरय चाहैत
लेल व्यग्र रहैत
प्रेरणा नुकायल
ई पोथी प
परिपूर्ण करैत अ

'अंतिका' अप
अविस्मरणीय क
मे' स्तंभक बहु
अपना जीवन
समयक कृतकाय
छल। खूब मन सँ
परिभाषा मे
मुदा, वास्तविकत
बेहोश केँ होश
जीवन-मूल्य आ
भिन्न-भिन्न रहैत
प्रोग्राम्ड भेल रहै
देखाइत अछि,
विकसित भेल हो
होथि। जाहि समय
संग एहि आत्मव
भरोस अछि, आ
रोकि क' पढ़बा
ताहू सँ बेसी रोमां

अपना नजरि मे

ार।
मे श
(जीव
निशांत
क मैथि
भूमिव
ाटी' अ
मेनन'
ी अनु
ल्प'
पोथी
। अ
दित र
ार स
विद्या
निवृ

अनलकांत (गौरी
नजरि मे' नाम सँ
अनेक रचनाकार
आब ओ केदार
रहल अछि।
मैथिली मे
विरल अछि। ए
आत्मकथात्मक
विषय थिक।
लेखक द्वार
लेकिन लेखकक
रहस्यमय आ वि
जीवन के झलक
छै। साहित्य मे ज
तकर मूल धरि प
मे उतरय चाहैत
लेल व्यग्र रहैत अ
प्रेरणा नुकायल छै
ई पोथी पा
परिपूर्ण करैत अ

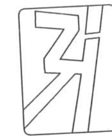
'अंतिका' अपन
अविस्मरणीय क
मे' स्तंभक बहुत
अपना जीवन क
समयक कृतकार
छल। खूब मन सँ
परिभाषा
मुदा, वास्तविक
बेहोश कैं होश
जीवन-मूल्य अ
भिन्न-भिन्न रहै
प्रोग्राम्ड भेल रहै
देखाइत अछि,
विकसित भेल ह
होथि। जाहि सम
संग एहि आत्म
भरोस अछि, अ
रोकि क' पढ़ब
ताहू सँ बेसी रोम

अपना नजरि मे

(अंतिका चयनित आत्मकथा)

संपादक

केदार कानन



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-88799-83-6
अपना नजरि मे

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2021

मूल्य : 275.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : विनय अम्बर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

APNA NAJARI ME (A Collection of Maithili Autobiography Collected from Antika Magazine) Edited by Kedar Kanan
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 275.00

अंतिका दिस सँ

'अंतिका' केँ सब दिन हम एक टा सामूहिक प्रयासक प्रतिफल मानैत रहलहुँ अछि। किछु सहयोगी जाइत-अबैत रहलाह, मुदा ई अभियान अपन सोच संग सतत चलैत आबि रहल अछि। यात्रा मे नव-नव सहयोगी जुड़ैत रहलाह आ 'अंतिका' एक टा पत्रिका सँ प्रकाशन संस्थाक रूप मे विकसित होइत एक दिन दू भाषा मे लगातार काज करबाक स्थिति मे आबि गेल। कैक बेर पत्रिकाक वर्ष मे दू टा कि एक टा अंक किएक ने आयल, मुदा हमरा सभ 'अंतिका' केँ एको दिन लेल कहियो बिसरलहुँ नइँ। तेँ 'अंतिका'क कार्य-क्षेत्र सेहो बढ़ैत गेल। कार्यक्रम आकि पोथी सेहो एही अभियानक अंग रहल अछि। समग्र रूप मे 'अंतिका' हमरा मन मे आ जीवन मे तेना घुलल-मिलल रहल जेना ई हमरा कल्पनाक एक टा अनिवार्य अंग होअय। रसेरस कोना ई हमर जीवन-जीविकाक अंग सेहो बनि गेल, हमरा बुझबा मे नइँ आयल। आइ तेँ ई हमरा सभक मान-सम्मान आ पहिचानक पर्याय सेहो भ' गेल अछि। हमरा जनैत एहन अभियानक ई अनिवार्य नियति हेबाके चाही, तखने ओ गतिमान रहि सकैत अछि।

'अंतिका'क एहि यात्रा मे रचनाकार लोकनिक सहयोग सब सँ महत्त्वपूर्ण थिक आ तेँ हुनक श्रेष्ठ रचनाक संकलनक ई विनम्र प्रयास कयल जा रहल अछि। 'अंतिका' मे प्रकाशित कविताक संकलन 'नवमल्लिका' खंड-1 (सं. कमलानंद झा) मे आरंभिक 25 अंक (जनवरी-मार्च,1999 सँ अक्टूबर-दिसंबर, 2007 धरि) सँ चयनित 34 कविक डेढ़ सयक करीब कविता अछि। आगामी 25 अंक सँ चयनित कविक कविता, जे अगिला साल आओत, 'नवमल्लिका' खंड-2 मे रहत।

'सप्तला' खंड-1 (सं. रामदेव सिंह) मे रामदेव झा, धूमकेतु, राज मोहन झा, उषाकिरण खान, सुभाष चंद्र यादव, महाप्रकाश, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, विभूति आनंद, कुमार पवन, रामदेव सिंह, विभा रानी, सुस्मिता पाठक, तारानंद वियोगी, रमेश रंजन, सविता, श्रीधरम आ शुभेन्दु शेखरक 'अंतिका' मे प्रकाशित कथा सभ मे सँ श्रेष्ठ कथा चयनित आ संकलित भेल अछि। एहिना एकर खंड-2,

जे आगामी वर्ष मे आओत, मे मायानंद मिश्र, सोमदेव, धीरेंद्र, जीवकांत, उपेंद्र दोषी, मन मोहन झा, साकेतानंद, नीरजा रेणु, प्रदीप बिहारी आदि करीब डेढ़ दर्जन नव-पुरान कथाकारक बीछल कथा संकलित हैत।

'अपना नजरि मे' (सं. केदार कानन) एही नामक 'अंतिका'क स्तम्भ मे छपल बलराम, जीवकांत, अग्निपुष्प, रामलोचन ठाकुर, नरेंद्र झा, उषाकिरण खान आ नरेंद्रक आत्मकथाक महत्त्वपूर्ण संकलन थिक।

'किसान आंदोलन आ मिथिला समाज' (सं. गौरीनाथ) 'अंतिका'क अलग-अलग अंक मे एहि विषय पर छपल महेंद्र नारायण कर्ण, अनिल ठाकुर, अरुण प्रकाश, अरविंद मोहन, नरेंद्र झा, अग्निपुष्प, रामाज्ञा शशिधर, पुष्पराज सन जानल-मानल समाजशास्त्री, पत्रकार, लेखक लोकनिक दस्तावेजी आलेखक संकलन थिक।

निकट भविष्य मे हरिमोहन झा, यात्री, राजकमल चौधरी आ आलोचना-संस्मरण आदि पर 'अंतिका' मे छपल महत्त्वपूर्ण सामग्रीक अलग-अलग कैक टा पुस्तकाकार संकलनक योजना अछि। सब योजनाक कार्यान्वयन आ सफलता पाठक लोकनिक सहयोगे पर निर्भर करत। 'अंतिका'क संकलन सभक संपादन मे महत्त्वपूर्ण योगदान देब'वला रचनाकार मित्र-अग्रज लोकनिक कठिन परिश्रम आ सहयोग 'अंतिका'क संबल थिक। हिनका लोकनिक महत्त्वपूर्ण सहयोग लेल आभार शब्द छोट बुझाइत अछि। सब काज मे संग दैत आबि रहल श्रीधरम तँ अंतिका-पारिवारिक अभिन्न अंग अछि। 'अंतिका'क समस्त शुभचिंतक-पाठक लोकनि कें एहि लेल शुभकामना जे ई सब हुनके बल पर संभव भ' रहल अछि।

अंत मे 'अपना नजरि मे'क मादे किछु बात साझी करब जरूरी अछि। 'अंतिका' मे एहि स्तंभक शुरुआतक योजना भाइ साहेब (राज मोहन झा)क संग बनौने रही। हमर इच्छा छल जे एकर आरंभ हुनके सँ होअय। मुदा ओ अनेक तरहें एकरा टारैत गेलाह। तखन एहि लेल पहिने माया बाबू, बलराम, जीवकांत सन अनेक गोटे सँ आग्रह कयल। सब सँ पहिने बलराम जी लिखलनि, मुदा छपैत काल हुनक आग्रह भेल जे एकरा कथा-संस्मरण रूप मे प्रस्तुत कयल जाए। तकर कारण आत्मकथा पढ़ैत पाठक स्वयं बूझि जेताह। तकरा बाद जीवकांतजी फेर अग्निपुष्प फेर...। कुल मिलाक' सात गोट लेखकक सहभागिता भेल। मुदा हमरा प्रसन्नता अछि जे एहि स्तंभ मे जतबे आत्मकथा छपल, सब टा बहुत दिन धरि स्मरण राखल जायत। माया बाबू आ भाइ साहेब सँ नइँ लिखा सकलहुँ तकर अफसोस जरूर अछि। आशा करैत छी, भविष्य मे सेहो ई स्तंभ जारी रहत। पुस्तकक संपादन-भार वरिष्ठ कवि आ अंतिका परिवारक अनन्य सदस्य केदार कानन स्वीकार कयलनि, एहि लेल हम हुनक आभारी छी।

—गौरीनाथ

अपना नजरि मे

मैथिली साहित्य मे आत्मकथा वा आत्मसंस्मरण लिखल तँ गेल अछि मुदा से पर्याप्त नहि अछि। जकरा कहबैक, लेखनक दीर्घ परम्परा, से तँ नहिए जकाँ अछि। किछु सजग संपादक एहि दिशा मे अपन-अपन प्रयास कयलनि आ फलस्वरूप किछु लेखक मनोयोग सँ अपन जीवनक कतेको महत्त्वपूर्ण प्रसंग कें लिखैत रहलाह अछि। 'अंतिका'क दृष्टिवान संपादक गौरीनाथ कें एहि दिशा मे सफलता प्राप्त भेलनि, जकर प्रतिफल थिक 'अपना नजरि मे'।

पाठकक एक विशाल समुदाय छैक जे लेखकक अंतरंग जीवन सँ परिचय प्राप्त करय चाहैत अछि। जाहि लेखकक ओ रचना बरमहल पढ़ैत रहैत अछि, तकर जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन, जीवन-क्रम, रहन-सहन, वैचारिक-वैभवक संग-संग ओकर जीवनक आत्मीय आ नीक-बेजाय सब तरहक नुकायल प्रसंग सभ सँ परिचित होब' चाहैत अछि। ओ अपन प्रिय लेखकक जीवन आ अतीत प्रसंगक सभ टा रहस्यक संगहि आत्मालोचनक साहस देख'-गम' चाहैत अछि।

यैह कारण थिक जे आन-आन भाषाक साहित्य मे आत्मकथा आकि आत्मसंस्मरण आब एक विशिष्ट विधाक रूप मे सम्मानित भेल अछि आ निश्चित रूप सँ साहित्यक ई विधा अपन रचनात्मक उत्कर्ष कें स्पर्श करैत अपार लोकप्रियता प्राप्त कयलक अछि। एक तरहें आत्मकथा सर्वाधिक पढ़ल जाइवला विधा थिक, मुदा मैथिली मे ई एखन अपन चास-बास ताकिए रहल अछि। जतबा लिखल गेल अछि से निस्संदेह महत्त्वपूर्ण थिक। लेखको लोकनिक क्रमहि आब एहि विधा पर ध्यान गेलनि अछि, मुदा एतबे पर्याप्त नहि। महत्त्वपूर्ण कथाकार-आलोचक अरुण प्रकाश अपन पुस्तक 'गद्य की पहचान' मे आत्मकथा पर विचार करैत लिखैत छथि, ''जे आत्मकथा लेखक आत्मालोचनक डगर चुनि लैत अछि, ओकर नायक अंततः विजयी होइत अछि, किएक जे पाठकक सहानुभूति ओकरे संग होइत छै। आत्मालोचन वर्गांतरण आ वर्णांतरण जकाँ बहुत कष्टदायक प्रक्रिया थिक।'' कहबाक आशय जे 'आत्मप्रशंसा'क संग 'पर-निंदा' करैत कथा गढ़ि क' अहाँ कनेकाल लेल पाठक

जे आगामी वर्ष मे आओत, मे मायानंद मिश्र, सोमदेव, धीरेंद्र, जीवकांत, उपेंद्र दोषी, मन मोहन झा, साकेतानंद, नीरजा रेणु, प्रदीप बिहारी आदि करीब डेढ़ दर्जन नव-पुरान कथाकारक बीछल कथा संकलित हैत।

'अपना नजरि मे' (सं. केदार कानन) एही नामक 'अंतिका'क स्तम्भ मे छपल बलराम, जीवकांत, अग्निपुष्प, रामलोचन ठाकुर, नरेंद्र झा, उषाकिरण खान आ नरेंद्रक आत्मकथाक महत्त्वपूर्ण संकलन थिक।

'किसान आंदोलन आ मिथिला समाज' (सं. गौरीनाथ) 'अंतिका'क अलग-अलग अंक मे एहि विषय पर छपल महेंद्र नारायण कर्ण, अनिल ठाकुर, अरुण प्रकाश, अरविंद मोहन, नरेंद्र झा, अग्निपुष्प, रामाज्ञा शशिधर, पुष्पराज सन जानल-मानल समाजशास्त्री, पत्रकार, लेखक लोकनिक दस्तावेजी आलेखक संकलन थिक।

निकट भविष्य मे हरिमोहन झा, यात्री, राजकमल चौधरी आ आलोचना-संस्मरण आदि पर 'अंतिका' मे छपल महत्त्वपूर्ण सामग्रीक अलग-अलग कैक टा पुस्तकाकार संकलनक योजना अछि। सब योजनाक कार्यान्वयन आ सफलता पाठक लोकनिक सहयोगे पर निर्भर करत। 'अंतिका'क संकलन सभक संपादन मे महत्त्वपूर्ण योगदान देब'वला रचनाकार मित्र-अग्रज लोकनिक कठिन परिश्रम आ सहयोग 'अंतिका'क संबल थिक। हिनका लोकनिक महत्त्वपूर्ण सहयोग लेल आभार शब्द छोट बुझाइत अछि। सब काज मे संग दैत आबि रहल श्रीधरम तँ अंतिका-पारिवारक अभिन्न अंग अछि। 'अंतिका'क समस्त शुभचिंतक-पाठक लोकनि केँ एहि लेल शुभकामना जे ई सब हुनके बल पर संभव भ' रहल अछि।

अंत मे 'अपना नजरि मे'क मादे किछु बात साझी करब जरूरी अछि। 'अंतिका' मे एहि स्तंभक शुरुआतक योजना भाइ साहेब (राज मोहन झा)क संग बनौने रही। हमर इच्छा छल जे एकर आरंभ हुनके सँ होअय। मुदा ओ अनेक तरहें एकरा टारैत गेलाह। तखन एहि लेल पहिने माया बाबू, बलराम, जीवकांत सन अनेक गोटे सँ आग्रह कयल। सब सँ पहिने बलराम जी लिखलनि, मुदा छपैत काल हुनक आग्रह भेल जे एकरा कथा-संस्मरण रूप मे प्रस्तुत कयल जाए। तकर कारण आत्मकथा पढ़ैत पाठक स्वयं बूझि जेताह। तकरा बाद जीवकांतजी फेर अग्निपुष्प फेर...। कुल मिलाक' सात गोट लेखकक सहभागिता भेल। मुदा हमरा प्रसन्नता अछि जे एहि स्तंभ मे जतबे आत्मकथा छपल, सब टा बहुत दिन धरि स्मरण राखल जायत। माया बाबू आ भाइ साहेब सँ नइँ लिखा सकलहुँ तकर अफसोस जरूर अछि। आशा करैत छी, भविष्य मे सेहो ई स्तंभ जारी रहत। पुस्तकक संपादन-भार वरिष्ठ कवि आ अंतिका परिवारक अनन्य सदस्य केदार कानन स्वीकार कयलनि, एहि लेल हम हुनक आभारी छी।

—गौरीनाथ

अपना नजरि मे

मैथिली साहित्य मे आत्मकथा वा आत्मसंस्मरण लिखल तँ गेल अछि मुदा से पर्याप्त नहि अछि। जकरा कहबैक, लेखनक दीर्घ परम्परा, से तँ नहिए जकाँ अछि। किछु सजग संपादक एहि दिशा मे अपन-अपन प्रयास कयलनि आ फलस्वरूप किछु लेखक मनोयोग सँ अपन जीवनक कतेको महत्त्वपूर्ण प्रसंग केँ लिखैत रहलाह अछि। 'अंतिका'क दृष्टिवान संपादक गौरीनाथ केँ एहि दिशा मे सफलता प्राप्त भेलनि, जकर प्रतिफल थिक 'अपना नजरि मे'।

पाठकक एक विशाल समुदाय छैक जे लेखकक अंतरंग जीवन सँ परिचय प्राप्त करय चाहैत अछि। जाहि लेखकक ओ रचना बरमहल पढ़ैत रहैत अछि, तकर जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन, जीवन-क्रम, रहन-सहन, वैचारिक-वैभवक संग-संग ओकर जीवनक आत्मीय आ नीक-बेजाय सब तरहक नुकायल प्रसंग सभ सँ परिचित होब' चाहैत अछि। ओ अपन प्रिय लेखकक जीवन आ अतीत प्रसंगक सभ टा रहस्यक संगहि आत्मालोचनक साहस देख'-गम' चाहैत अछि।

यैह कारण थिक जे आन-आन भाषाक साहित्य मे आत्मकथा आकि आत्मसंस्मरण आब एक विशिष्ट विधाक रूप मे सम्मानित भेल अछि आ निश्चित रूप सँ साहित्यक ई विधा अपन रचनात्मक उत्कर्ष केँ स्पर्श करैत अपार लोकप्रियता प्राप्त कयलक अछि। एक तरहें आत्मकथा सर्वाधिक पढ़ल जाइवला विधा थिक, मुदा मैथिली मे ई एखन अपन चास-बास ताकिए रहल अछि। जतबा लिखल गेल अछि से निस्संदेह महत्त्वपूर्ण थिक। लेखको लोकनिक क्रमहि आब एहि विधा पर ध्यान गेलनि अछि, मुदा एतबे पर्याप्त नहि। महत्त्वपूर्ण कथाकार-आलोचक अरुण प्रकाश अपन पुस्तक 'गद्य की पहचान' मे आत्मकथा पर विचार करैत लिखैत छथि, "जे आत्मकथा लेखक आत्मालोचनक डगर चुनि लैत अछि, ओकर नायक अंततः विजयी होइत अछि, किएक जे पाठकक सहानुभूति ओकरे संग होइत छै। आत्मालोचन वर्गांतरण आ वर्णांतरण जकाँ बहुत कष्टदायक प्रक्रिया थिक।" कहबाक आशय जे 'आत्मप्रशंसा'क संग 'पर-निंदा' करैत कथा गढ़ि क' अहाँ कनेकाल लेल पाठक

केँ भ्रमित क' सकैत छी, मुदा टिकाऊ वैह आत्मकथा हैत जाहि मे सही अर्थ मे आत्मालोचनक प्रयास हैत। सेहो ओहन आत्मालोचन जे लिखनहार केँ भीतर सँ पवित्र करै मे मदति करय। जेना गांधी आ राहुल सांकृत्यायनक आत्मकथा। अरुण प्रकाश जी 'पर-निंदा' आ 'आत्मप्रशंसा' केँ एहि विधाक शत्रु मानैत आगाँ लिखैत छथि, ''आत्मकथाक एक टा आरो शत्रु अछि—अतीत-आतुरता आकि नॉस्टेल्जिया। अतीत-आतुरताक सुख आत्मकथा लेखक लेल भनहि 'अक्लांत गौरव' होनि, मुदा जँ ओ अतीत पाठकक अपूर्ण संसार मे किछु नव नहि जोड़ैत अछि तँ पाठक ओकरा खारिज क' दैत अछि।''

'अंतिका'क संपादक गौरीनाथ मैथिली मे एहि तरहक आत्मकथाक कमी अनुभव कयलनि जत' आत्मालोचनक प्रमुखता होइ आ तँ ओ लेखक लोकनि केँ प्रेरित-उत्प्रेरित क' हुनका सँ आत्मकथा लिखबौलनि, जे समय-समय पर पत्रिका मे प्रकाशित होइत रहल आ पाठकक अपार लोकप्रियता प्राप्त कयलक। आनो-आनो मैथिली पत्रिका मे एहि तरहक किछु प्रयास होइत रहल अछि आ लेखक लोकनि अत्यंत उत्साह सँ लिखैत रहलाह अछि। मुदा मैथिली मे आत्मकथा-लेखन पर तेना विचार-विमर्श एखन धरि नहि शुरू भेल अछि।

'अपना नजरि मे' आत्मकथाक अंतिका सँ चयनित किताब थिक, जे पहिल बेर पत्रिका सँ उतरि, किताबक रूप मे आयल अछि। एहि किताब मे सात टा लेखकक आत्मकथाक अंश प्रकाशित भेल अछि।

वरिष्ठ कथाकार बलराम 'बहत्तरि हाथक अँतड़ी' मे बहुत रोचक ढंग सँ अपन जीविकाक केन्द्र-स्थलक वास्तविक ओ मार्मिक चित्रण कयलनि अछि। परम्परा सँ खुटेसल, जातीय उन्माद मे डूबल, तीन-तेरह करबा मे माहिर, छल-छद्मक प्रत्येक कला मे प्रवीण एक समूह विशेषक यथार्थ विश्लेषण-रेखांकन करैत ओ अपन बात सहजता सँ कहि गेलाह अछि। ओ मैथिलीक विशिष्ट कथाकार छथि, 'बहत्तरि हाथक अँतड़ी' मे सेहो हुनक कथाकारिताक स्वाभाविक प्रकटीकरण भेल अछि आ कथा-रस मे डूबल हिनक आत्मकथाक ई अंश प्रभावशाली बनि पड़ल अछि। मैथिलीक पाठक केँ एक नव तरहक दुनिया सँ परिचित करबैत छथि बलराम।

'आरतक पात लाल' वरिष्ठ कवि-कथाकार जीवकांतक जीवनानुभव थिक। ओ अध्यापन, प्रशिक्षण, स्कूली वातावरण सँ गप आरंभ करैत अपन आरंभिक लेखनक विषय मे विस्तारपूर्वक कहैत छथि। कोनो लेखक आ पाठक लेल हुनक आत्मकथांश परम उत्सुकताक निर्माण करैत अछि। लेखन सँ जुड़लाक बाद ओ अनेक वरिष्ठ-कनिष्ठ लेखक सँ अपन जुड़ावक कथा कहैत छथि, जाहि मे रामकृष्ण

झा किसुन, राजकमल चौधरी, धूमकेतु, सोमदेव, कुलानंद मिश्र, प्रभास कुमार चौधरी, मणिपद्मक संग-संग अनेक-अनेक लेखकक झलक भेँटैत अछि। उपरोक्त लेखक सभक स्पष्ट आ साफ चित्रांकनक संग लेखकक आत्मीय अनुराग एहि अंश केँ विशिष्ट बनबैत अछि। ओ अपन कथा कहैत-कहैत बहुत रास महत्त्वपूर्ण लेखकक विषय मे विरल आ बेछप कथा कहि जाइत छथि, जे एहि आत्मकथांश केँ पढ़बाक लालसा जगबैत अछि।

'अकथ कथा' चर्चित कवि अग्निपुष्पक आरंभिक संघर्ष आ ओहि सँ पलायनक कथा थिक, जे मिथिलाक गाम आ टोल सभक एक टा निश्चित-निर्धारित यात्रा करैत कलकत्ता महानगर धरि जयबाक कथा केँ बहुत विस्तारपूर्वक आ धैर्यक संग कहैत छथि। हुनक एहि आत्मकथांश मे जन-संघर्ष आ तकरा लेल समग्र समर्पण, नुका-छिपी, दौड़-भाग आ अपन आरंभिक लेखनक रूझानक संगहि कलकत्ता महानगर आ ओहिठामक साहित्यिक परिवेश, पत्रिका 'शिखा'क प्रकाशनक विस्तृत चर्चा भेल अछि। अग्निपुष्पक ई आत्मकथा एक्के संग उत्सुकता, जिज्ञासा, रहस्य-रोमांच आ भयक संचरण करैत अछि आ अंत-अंत धरि पाठक केँ बन्हने रहैत अछि।

रामलोचन ठाकुर मैथिलीक पैघ फलकक कवि छथि। 'जे कहब साँच कहब' मे स्पष्टतः ओ स्वीकार करैत छथि जे हुनक जीवनक आरंभ निचाट दरिद्रता सँ भेल आ डेग-डेग पर हुनका अथक संघर्ष करय पड़लनि। अपन माक औदार्यक एक विराट छवि ओ पाठकक हृदय मे अंकित क' सकलाह अछि, जे हिनक एहि आत्मकथांश केँ निजत्व आ विश्वसनीयता प्रदान करैत अछि। अपन जीवनक प्रत्येक उत्थान-पतन केँ, अपन संघर्षगाथाक ओर-छोर केँ, मैथिलीक तत्कालीन स्थिति केँ, कलकत्ताक विराट मैथिल जीवन आ रंगमंच केँ, मैथिली आन्दोलन आ ताहि मे अपन सार्थक हस्तक्षेप केँ, मिथिला मिहिरक संग अपन संबंध केँ संपूर्ण इतिवृत्तिक संग ओ अभिव्यक्त कयलनि अछि। हुनक एहि संघर्ष-गाथा केँ पढ़ने-बुझने बिना समग्रता मे रामलोचन ठाकुर केँ नहि जानल जा सकैत अछि। कथात्मक रस सँ उबडुब करैत हिनक आत्मकथा पढ़बा लेल विवश करैत अछि।

'चपल चरन चित चंचल भान' मे नरेन्द्र झा अपन, अपन कुल-खूट, तकर वैभव आ मिथिलाक प्रसिद्ध गाम तरौनीक विषय मे ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विवरणक संग कथा कहब शुरू करैत छथि आ अपन जीवन, अपन संघर्ष आ अपन अध्ययनक संग जीविका प्राप्ति धरिक संपूर्ण वृत्तांत इत्मीनान आ कुशलताक संग कहैत छथि। आइ जतय ओ पहुँचल छथि, तकर नेपथ्य मे कतेक औनाहटि आ डेग-डेग पर संघर्ष रहलनि अछि, तकरा बुझबा लेल हिनक आत्मकथा पढ़ब आवश्यक अछि।

एहि सभक अतिरिक्त मैथिली मे हिनक प्रवेश आ मैथिली भाषा-आंदोलनक प्रति अनन्य सम्बद्धताक विस्तृत आयामक कथा सेहो एहि मे व्यक्त भेल अछि, जे एकरा स्मरणीय बना दैत अछि।

'जल दर्पण-स्वच्छ नयन' मे उषाकिरण खान कोसी आ कोसिकन्हाक विस्तृत आ प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करैत छथि। अपन माता, हुनक स्वाभिमान, अपन पिता आ हुनका द्वारा कयल अनेक उल्लेखनीय कार्यक सांगोपांग वर्णन करैत छथि। कोसी कातक गामक भयावहता, जीव-जंतुक उत्पात, नेनपनक जीवन आदिक नीक चित्र उरेहलनि अछि। मझौलियाक मगन आश्रम, तरवाराक आश्रम आदिक उल्लेख आनोठाक प्रसंगवश आयल अछि। अपन साहित्य प्रवेश पर, अनेक आख्यानक संग, ओ विस्तृत रूपें कहि जाइत छथि। हुनका विषय मे एकठाम एतेक सामग्री कें पढ़ब प्रीतिकर थिक।

'नयन-उपनयन' मे संघर्षशील चेतनाक कवि नरेन्द्र अपन जीवनक वास्तविक चित्रांकन करबा मे सफल भेल छथि। एखनुक क्रूर समय मे ओ ओहि अतीतक पृष्ठ सभ कें उनटबैत छथि, जकरा एखन क्यो व्यक्त करबा सँ परहेज करत। मुदा खोंइछा छोड़ा क' इमानदारी सँ ओ सभ टा आख्यान सुना जाइत छथि, तखन पता लगैत अछि जे कोन-कोन स्थिति-परिस्थिति आ झंझावात सँ गुजरि, निरन्तर संघर्ष करैत, क्यो कोना नरेन्द्र सन कवि बनैत अछि। सीअनि उघड़ल सामाजिकता आ संस्कृतिक अन्हार मे बौआइत लोक कें अंततः की भेटि पबैत अछि—सारहीन, तथ्यहीन जीवन। मुदा ओहि जीवन सँ जिजीविषा ग्रहण करैत नरेन्द्र झपसू ककाक चित्र उरेहि, मोन राख' योग्य चरित्र मे परिवर्तित क' देलनि अछि। शाखाक अंदरूनी कथाक विकट-विद्रूप रूप कें जेना नरेन्द्र परत-दर-परत उघाड़ कयलनि अछि, से हिनके सँ संभवो छल। हिनक आत्मकथा अनेक अर्थ मे मर्मस्पर्शी आ वास्तविकता सँ भरल मनोहर आख्यान थिक।

'अपना नजरि मे' मैथिली पाठकक लेल एक विलक्षण आ महत्त्वपूर्ण कृतिक रूप मे अवश्ये समादृत होयत। प्रत्येक लेखकक अपन आत्मीय आ निजी रंग, विभिन्न छवि-छटाक संग, अपन संपूर्ण आभा आ वैशिष्टयक तरंग एहि मे व्यक्त भेल अछि। एहि कृतिक सुवास सँ मैथिली साहित्य सुवासित होयत, एहि मे संदेह नहि।

—**केदार कानन**

अनुक्रम

बहत्तरि हाथक अँतड़ी

बलराम

अपन जिला-जेबार मे नोकरी भेटि जाय, से ताहि दिन के नहि चाहैत छल! अपने गाम मे, कि घरक अगुआर-पछुआर मे जोगार बैसि जाय तँ आर उत्तम, घीओ सँ चिक्कन। एही लोभ मे अपना दिसक एक टा जगजियार संस्था मे अप्लाइ क' देलिऐक। हीतमीत सुनलनि तँ आपस मे कनफुसकी कर' लगलाह। किछु गोटे कहलनि—'ओहि संस्था मे निछच्छ एक्के जातिक संख्या छैक, सफाइकर्मी पर्यंत ओही जातिक, माने मेहतर केँ किछु ल' द' क' सफाइ करौलक आ दरमाहा अपने घटोसि गेल। ओकरा 'पवित्र भोजनालय' बुझू। 'प्रवेश वर्जित' क साइनबोर्ड तँ नहि लागल छैक, मुदा आनक लेल छैक धरि सैह।' एक गोटा तँ उपदेशक मुद्रा मे आबि गेलाह—'डेग आगू बढ़ौला सँ पहिने ठेकानि लेबाक चाही जे जत' डेग राखब से जमीन ठोस छैक कि दलमलाइत छैक। भविष्यक प्रतीति नहि भेलैक तँ लोक खत्ता खाइए।'

कोना भ' जेतैक एना! एहनो कतौ भेलैए! गाम-घर सँ लगाइत स्कूल-कालेज धरि ओही जातिक संग घनिष्ठता, नोत-पिहानी, पुश्तैनी हेमछेम, इष्ट-मित्र सभ ओही जातिक, आपकता ओकरे संग। कहियो कोनो भेद-भावक दरस-परस नहि। विश्वास नहि भेल जे एहनो भ' सकैए। कृष्ण गोसैंया भ' सकैत छैक, ग्वालबाल तँ रहतैक ओहिना। पहिने एक-दू ठाम नोकरी मे रही तँ कहियो ई अनुभूति नहि भेल जे नीक-बेजाय, हानि-लाभ जातिगत आधार पर सेहो भेल करै छै।

राम-राम क' ओत' पहुँचलहुँ तँ जेना उनटन भ' चुकल छलैक। भेल जे कलियुगक प्रवेश भ' चुकल छै आ परीक्षित अचंभित ठाढ़ छथि। अंतर्वीक्षा मे ठोपवला दू-तीन टा अधिकारीक वर्चस्व। प्रश्न कम, आभिजात्यक प्रदर्शन बेसी। थोड़ेक काल खौंझाहटि भरल अप्रासंगिक पूछा-आछी, बेसीकाल धरि नीचाँ सँ उपर हमर सौंसे शरीरक निरीक्षण करैत रहलाह, जेना कोनो चिक खस्सी-पाठीक मांउसक

ओजन ठिकियबैत होइक। सनक्रम ई जे ई 'राड़-पजियार' कोम्हर सँ! अध्यक्ष वा संस्था-प्रधान निरपेक्ष भावें सभ टा सुनैत, बजैत किछु ने, चुपचाप अभ्यर्थी सभक जीवन-वृत्त उनटबैत-पुनटबैत। मज्जर भेला सँ पहिनहि फल पाकि चुकल छै, अनुमान सैह भेल।

एक मासक बाद संस्था-प्रधानक कार्यालय सँ फोन पर अप्रत्यशित सूचना भेटल जे हमरे चयन भेल अछि, दू-चारि दिन मे आबि संस्था-प्रधान सँ भेंट करियनि। दस दिन बाद पहुँचलहुँ तँ ज्ञात भेल जे ओ हृदयरोग सँ ग्रस्त भ' कोमा मे पड़ल छथि। हुनक अनुचर सभक सलाह जे निर्देश अछि तँ दू-चारि दिन देखि लियौ, कनियों निकें हेताह तँ भेंट क' क' जायब, ओना डाक्टर निरसि देने छनि।

पता लागल जे मुख्य कार्यपालक आ हुनक गिरोह संस्था-प्रधानक एहि चयन पर खौंझायल-पितायल अछि। एकरा विरुद्ध ठेहुनियाँ रोपने अछि। हुनका बेर-बेर ई बात बुझेबाक प्रयास कैल गेल छनि जे अइ जातिक लोक केँ बहत्तरि हाथक अँतड़ी होइत छैक। एकर प्रवेशक मतलब भेल संस्थाक अंतक प्रारंभ। संपूर्ण संरचना खंड-पखंड आ संस्थाक सत्यानाश। हमरा बुझने हुनका लोकनि केँ एक टा आर कटगर बात कहब बिसरा गेल छलनि। हमरा जातिक प्रसंग संस्कृत मे एक टा श्लोक गढ़ल छैक। आशय जे एहि जातिक लोक गर्भे मे अपन मायक कोंढ़-करेज खा जाइत, यदि ताहि समय ओकरा दाँत रहितैक।

कॉरीडोर मे अनचोके कार्यपालक जी अभरि गेलाह। सुरेबगर देहयष्टि, रोबदार चेहरा, सर्जक नवका सूट, तकर विपरीत रंगक टाइ, गरा मे रत्नक माला, लाल ठोप झरि क' ठोपक सिरखार बतबैत। हमरा पर नजरि पड़िते 'मेरे अंगने में?' वला स्टाइल मे हूथब शुरू क' देलनि—'कत' जाइ, कत' नहि जाइ, कोनो विचारे ने? औ, अइ संस्थाक अपन परंपरा छैक, रीति-नीति छैक, एक टा मर्यादा छैक। बूढ़ा तँ छोड़ि रहल छथि संसार, अहाँ कोन भरोसे नुड़िया रहल छी? देखू, जातिए टाक बात नहि छैक, ऊँच मूल-पाँजि, नीक कुल-खूंट, वंशगौरव चाही। जाहि पदक गप्प आछि, ओहि लेल अपन लोक चाही, यस्मैन—उठ तँ उठ, बैस तँ बैस—जाहि सँ हमरा लोकनिक काज मे अवरोध नहि आबय, सभकथू सुचारू रूपें चलैत रहय।' फेर लगभग धमकी दैत, मुँह कोंचियबैत बजलाह—'एत' हम जे चाहब, सैह हैत। पटना-दिल्ली सभठाम हमरे लोक बैसल अछि। कँकर दिन छिऐक जे...'

आब जखन 'अमल हमारा दोनों पार' तँ जमीन बचलैक कत'?

गुनधुन मे मैदान मे बैसल रहलहुँ।

संस्था-प्रधानक निर्देश जे भेंट क' क' जाथि आ हिनका हमरा देखितहि खौंत फूकि दैत छनि। अजब धर्मसंकट! संस्थाक सभ लोक केँ बात बुझल रहैक। किछु

लोक सहानुभूति प्रकट करैत बजलाह—'बूढ़ा कोमा मे गेला सँ पूर्व अहाँक काज क' गेल छथि। हुनक मरणासन्न स्थिति देखि ई सभ एकरा भजब' चाहैए। बुझैए जे जातियो गमा रहल छी आ स्वादो ने पाबि रहल छी।'

'एना रहितैक तँ हम सभ डीहो डाबर बेचि क' ई पद प्राप्त क' लितिऐक।' जतेक मुँह ततेक बात। गिरोहक एक व्यक्ति कान मे कहि गेलाह जे मन माफिक चढ़ौआक प्रबन्ध क' सकी तँ बात बनि सकैए। आब हम एहि स्थिति मे जे तट पर ठाढ़ नदीक बेबहार देखि रहल छी, मुदा धरिया खोलि पार उतरबाक मोन नहि बना पाबि रहल छी।

संस्थाक ई ऐतिहासिक परिसर कहियो एहि क्षेत्रक सांस्कृतिक गतिविधिक प्रसिद्ध केन्द्र रहल अछि, न्याय-मीमांसा, धर्मशास्त्र-पुराण विषयक निरंतर शास्त्र-चर्चाक गढ़,...वसुधैव कुटुम्बकम्...पापाय परपीड़नम्...। सोझाँ मे ठाढ़ विशाल राजप्रासादक मोहक, निर्मल छवि बाहरे सँ आगन्तुक केँ आकर्षित करैत। मुदा भीतर? भितरका मलिनता बाहर एको रत्ती हुलकी नहि दैत। बाहर आ भीतर मे संतुलनक काज प्रकृति त्यागि देने अछि। प्रायः ई काज ओ मनुष्यक विवेक पर छोड़ि देने अछि।

हम विदा भ' गेल रही तँ घटही गाड़ी मे भरि राति जीवन-मूल्य आ जीविकाक मोलक बीच मचैत घमासान सँ आतंकित रही। स्टीमर पर भोरक बसात मोन फरिच्छ क' देलक। संस्था-प्रधानक देहावसान भ' गेल छलनि। हुनका जगह पर दिल्ली सँ एक टा छद्मवेशी 'विद्वान' अयलाह जे अपनहि पाछू बेहाल। फज्झति मे पड़ि असमय पदच्युत।

डेढ़ वर्षक बाद समाचार पढ़लहुँ जे एक टा ख्याति-प्राप्त वरिष्ठ आइएएस अधिकारी केँ ओहि संस्थाक प्रधान नियुक्त कयल गेल अछि। पटना मे हुनका सँ भेंट क' सभ वृत्तान्त कहलियनि आ लिखि क' देलियनि। एकर पड़ताल करबाक आश्वासन दैत दस दिन मे पटने मे भेंट कर' कहलनि। निर्धारित दिन पहुँचलहुँ तँ ओ क्षोभ व्यक्त करैत बजलाह जे ओहि संस्थाक लीला अपरंपार बुझाइए। अंतर्वीक्षा सँ संबद्ध कागतपत्र निपत्ता भ' गेल छैक। अधिकारी लोकनि कहलनि जे विज्ञापन, कि अंतर्वीक्षा कहियो भेले नहि छलैक। फूसि बजलाह। डिस्पैच रजिस्टर साफ बतबैत छैक जे अभ्यर्थी केँ निबंधित डाक सँ एहि लेल पत्र गेल छलनि। कोनो सूत्र सँ ईहो बुझलिऐक जे अंतर्वीक्षा भेल छलैक आ ककरो चयन सेहो भेल छलैक। जे-से, फेर सभ केँ पत्र जेतैक, पन्द्रह दिन मे अंतर्वीक्षा हेतैक। औपचारिकता आवश्यक छैक।

पुनः अंतर्वीक्षा लेल पहुँचलहुँ तँ भवनक मुँहें पर अधिकारी लोकनि ठाढ़।

आजिज सन होइत हुकुम देलनि—'मुँह की तकै छी, हॉल मे परीक्षा मे बैसू।' अगिले कतार टा खाली रहैक। दुसिट्टा बेंच पर एक कात बैसलहुँ। उत्तर-पुस्तिका भेटल। कवर पर नाम-गाम लिखलहुँ। संस्था-प्रधान प्रश्नपत्रक बंडल नेने हॉल मे प्रवेश कयलनि। हमरा दिस नजरि पड़लनि तँ लग मे बजा, बुझौलनि—ई निम्नवर्गीय लिखित परीक्षा भ' रहल छैक। पाँच बजे साँझ मे अहाँ सभक अंतर्वीक्षा हमरा प्रकोष्ठ मे हैत।

अंतर्वीक्षा मे मुख्य प्रश्नकर्त्ता संस्था-प्रधाने रहथि। अधिकारी लोकनिक पारी आयल तँ हमर बान्ह-छान शुरू कैलनि। एक-दू टा अवांतर आ उज्झट प्रश्न पुछलनि, कि संस्था-प्रधान डाँटि देलथिन—'डॉण्ट प्रैट्ल नॉनसेंस!' अंत मे संस्था-प्रधान ठामहि निर्णय सुना देलनि—'अहाँक चयन कैल गेल। ग्रहणावकाशक प्रबंध क' पंद्रह दिन मे ज्वाइन करू।' हम सुखद आश्चर्य सँ अभिभूत। संस्था-प्रधान ओही जातिक जकर संस्था मे वर्चस्व रहैक। दिवंगत संस्था-प्रधान जे एक बेर पहिनहुँ हमर चयन कैने रहथि, सेहो ओही जातिक। हम आब जातिवादक नव परिभाषाक तलाश मे बेहाल।

एक बर्ख बीतल। संस्था-प्रधान निम्नवर्गीय सहायक मे आन जातिक जतेक लोक बहाल कैने रहथि गोट-गोट क' पड़ाय लागल। हम बाँचल रही तँ एहि कारण जे संस्था-प्रधान लग हमरा निर्बाध प्रवेशक सुविधा छल आ हुनक कठोर भंगिमा सँ सभ डेरायल रहैत छल।

एक दिन ओ अपन आवास सर्किट हाउस मे बजौलनि आ कह' लगलाह—'हम व्यक्तिगत कारणें ई संस्था छोड़ि रहल छी। ओना एहि ठामक मानसिकता बड़ विकृत छैक, कोना की सकब से कहि ने, मुदा कायर नहि बनी। अहाँ एहि ठाम रहि जाइ तँ संस्था लेल नीक हेतैक। अहाँ दरखास्त दियौ, हम अपन विशेषाधिकारक प्रयोग क' अहाँ केँ स्थायी क' दैत छी, नोकरी थोड़ेक सुरक्षित रहत।' हम बलिदानक छागर जकाँ केवल मूड़ी डोलबैत रहि गेलहुँ।

एके बरख मे विशेषाधिकार सँ स्थायीकरणक एहि पहिल घटना सँ संस्था मे उठल जुड़पित्ती देखबा-सुनबा जोग। क्यो बाजल, एहन इमानदार अधिकारी भठि गेल, क्यो कहलक जे ई बहत्तरि हाथक अँतड़ीक कमाल थिक।

संस्था मे एकछेहा एके जातिक संख्या बढ़ैत रहल। सत्ताक आजुक खेल मे जातिक उत्थान-पतनक चक्र दुर्निवार, मुदा बहाली सँ पहिने व्यक्तिक योग्यता-क्षमताक सामान्यो आकलन तँ हेबाक चाही। से सभ किछु ने। एकदम भेड़ियाधसान। ई सोचबाक ककरो पलखति नहि जे असामाजिक तत्त्वक कोनो जाति नहि होइत छैक। ई कोनो दिन बिसा जाइत छैक। असल मे जातिवादक लुक्का ठाढ़ क' किछु

अधिकारी आ हुनक गैंग अपन स्वार्थसाधन सुरक्षित रूपें कर' चाहैत छल। आ वाह रे जातिवाद! जातियोक लोक मे एकवाक्यता नहि। खंड-पखंड। पाँच गोटेक एक टा गुट तँ सात गोटेक दोसर गुट। एक गुटक कने बेसी स्वार्थपूर्ति भेल तँ दोसर गुट हल्लागुल्ला पर बिर्त, दोसर गुट केँ अधिक लाभ भेलैक तँ पहिल गुट तरुआरि भँजैत। अनुशासन शब्द जेना क्यो सुननहि नहि, दायित्वक कतहु कोनो लेश नहि। अहाँ अपन दायित्वक निर्वाह लेल फिफियाइत रहू, मैदान मे रौद तपैत, बसात पिबैत, कैंटीन मे चाह सुड़कैत, पान खा क' पागुर करैत कर्मी लोकनिक नेहोरा-मिनती करैत रहू, ओवरटाइमक लोभ दैत रहू। क्यो दस दिन नहिएँ आयल तँ अहाँ बिढ़नी खोता पर ढेप किएक फेकब। अहाँक अपन व्यक्तिगत काज अछि तँ टेबुले-टेबुल बौआइत रहू, अवरोधक कोनो ने कोनो बहन्ना अधिकारियो ताकिए लेताह। संस्था-प्रधान लगले लागल बदलैत रहथि। कहुना समय काटि लेब' चाहथि। चक्रव्यूह-भेदनक विचारो करथि तँ ओहि सँ बहरेबाक ज्ञान अपूर्ण बुझाइन।

हमरा लेल हरदम दू मोर्चा पर लड़ैत रहबाक बाध्यता। दायित्वक निर्वाह आ अपना विरुद्ध बुनल जाइत जालक प्रति साकांक्ष रहब। समय-समय पर निराधार उकबा उठौल जाइत, मनोबल तोड़बाक सतत प्रयास। भयावह दुष्चक्र।

संस्था मे राज सँ दान मे भेटल सोनक बहुमूल्य घड़ी आ चानीक घोड़ा पाँच ठाम ताला तोड़ि, सिक्कड़ काटि चोरा लेल गेलैक। दस-प्रन्दह दिन अखबार सभ रंगल रहल। पटना-दिल्ली सँ पुलिस दलक आबाजाही तेज भ' गेल रहैक। हम ओहि दिन नहि रही। दोसर दिन बाहर सँ अयलहुँ तँ पता लागल जे मुख्य अभियुक्त हमरे बना देल गेल अछि। तर्क ई जे ओहि दिन संग्रहालयक बरंडा पर परीक्षाक गणनकार्य चलैत रहैक जकर प्रभारी हमहीं रही। संस्था-प्रधान केँ बुझा देल गेल रहनि जे ओत' ई काज करेबाक निर्णय हम अपने मोने नेने रही आ यैह बात ओ पूछाआछी मे पुलिस केँ कहि देने रहथिन। एकर मतलब जे हमर उद्देश्य छल घड़ी-घोड़ा चोरेबाक उपाय ठिकियैब—कोन-कोन ताला तोड़बाक हैत, कोन बाटें जायब, कोन बाटें आयब, कत' की बाधा हैत आ तकर की सामाधान करब।

भोरे उठि गणनकार्य ओतहि करेबाक परीक्षाबोर्डक लिखित निर्णय संस्था-प्रधान केँ देखा देलियनि। ओहि पर हुनक अपनो हस्ताक्षर रहनि। ओ उचिती बघार' लगलाह, मुदा तीर तँ छुटि गेल छल। कौआ खेहारैत पुलिस पछुआयब शुरू कयलक। पुलिस इंस्पेक्टर धमकी देब' लागल जे हमहीं असली अपराधी छी। बुझायल जे किछु झोर' चाहैत अछि तँ झाड़' पड़ल—'औ दरोगा जी, अहाँ जज नहि छी जे हमरा अपराधी घोषित क' देब। अहाँ लग हमरा विरुद्ध प्रमाण रहय तँ आरोपपत्र दाखिल करू, हम कोर्ट कचहरी मे बुझि लेब।'

डेराइते पुलिस कप्तान सँ भेंट क' कहलियनि जे ओ घड़ी-घोड़ा आन दुर्लभ वस्तुक संग हमहीं राज सँ आन' गेल रही। देबाकाल कोनो लिखा-पढ़ी नहि भेल रहैक। हमरा लेबाक रहैत तँ बाटे मे ठेला पर सँ उठा लितहुँ। एहि लेल अन्हरिया राति मे ताला तोड़ि पचास किलो भारी वस्तु ल' क' पड़ैबाक जहमति किएक उठबितहुँ। आ देहदशा देखितहि छी, पचास किलो उठा क' पड़ैबाक दम अछि हमरा? कप्तान साहेब केँ हँसी लागि गेलनि। संस्थाक संबंध मे तेहन कटु उद्गार व्यक्त कर' लगलाह जे लिखल नहि जा सकैए। कहबाक आशय जे राजक देल बहुमूल्य दरी-जाजिम, टेबुल-कुर्सी, झाड़-फनूस, गाछ-बिरिछ सभ अपने चोराबैत अछि आ नाम लगबै छै अनकर। ओ आश्वस्त कैलनि जे अहाँक विरुद्ध कोनो प्रमाण नहि अछि, ने प्राथमिकी मे नाम अछि। तैयो तीन मास धरि दौड़ैत रहलहुँ, पूछाआछी होइत रहल।

कार्यकर्त्ताक आवास सभक विस्तार होम' लगलैक। हमरो आवासक विस्तार लेल आगू मे न्यों लेल गेल, गहींर खाधि खुनल गेल, तँ हमर पड़ोसी आपत्ति उठौलनि जे अइ सँ हुनका आवासक प्रकाश आ वायु-संचरण मे बाधा पड़तनि। कार्यपालकजी हुनक पक्ष लेलनि। एहना समय हुनक आभिजात्य भक द' जागि उठनि। ओ बिसरि जाथि जे जखन अपने जातिक कारण ओ जाँच आयोगक फाँस मे फँसलाह तँ हम दिनराति परिश्रम क' हुनक उत्तर तैयार क' देने रहियनि। ओ बिसरि जाथि जे हुनक कार्य-संपादन मे हम बरोबरि मनोयोग सँ हुनक मदति करैत रहलियनि।

से दू-तीन मास धरि हमरा डेराक आगाँ खाधि खुनले रहल। राति मे डेरा सँ बहरायब कठिन, धोखा सँ खाधि मे खसि ने पड़ी। जाँच भेलैक तँ कार्यपालक अभियंता हमरा पक्ष मे रिपोर्ट देलनि, तैयो कार्यपालकजी व्यवधान उपस्थित कर' लगलाह। संस्था-प्रधान बुझौलथिन जे आब जातिवादक आरोप लागत तँ विस्तारक काज आगू बढ़ल।

एक बेर एक गोटे गाय कीनि हमरा आवासक आगाँ बथान बना लेलनि। तत्कालीन संस्था-प्रधान जातीय रंग मे कने बेसिए रंगल आ पाइ दिस परिकल लोक। कहलनि—'अइ जाति केँ गोसेवाक सनातनी अधिकार छैक।' पुछलियनि—'अपना द्वारि पर बथान बनेबाक अधिकार छनि, कि अनका द्वारि पर?' जवाब नहि फुरेलनि। अपना स्तर सँ दबाव बना समाधान कर' पड़ल। कार्यकाल पर्यंत एहन-एहन घटनाक अंबार।

चौदह टा संस्था प्रधान मे एक टा एहनो एलाह जे अधिनायक-तंत्रक नव अधिष्ठाता बुझाथि। शिक्षा केँ व्यापारिक दृष्टि सँ देखनिहार, मुल्ला तकैत, अपना लाभ लेल बलजोरी अनका सँ अनुकूल मंतव्य लिखेबाक अभ्यासी। अड़लहुँ तँ

निलंबनक धमकी, हमर दुर्भाग्य जे वित्तक प्रभारी रही। अपन मोन माफिक मंतव्य लिखैबा लेल बजौलनि। एक टा कुत्सित व्यापार कर' चाहैत छलाह। बड़ी काल अड़लहुँ, मुदा ओ हमरो सँ बेसी अड़ल। मंतव्य लिखैत रही आ भीतर अँतड़ी कुलबुलाइत रहल। भाषाक व्यूह मे मंतव्य केँ तेना ओझरैबाक प्रयास करैत रहलहुँ जे हुनको संतोष भ' जाइनि आ हमरो कात-करोट सँ अपन सुरक्षाक बाट भेटि जाय। घोल-घपच्चा भेल आ हुनका विरुद्ध राजभवन जाँच बैसौलक। सत्र न्यायाधीशक विशेष न्यायालय मे बरख दिन सुनबाइ होइत रहल। भाषाक ओ व्यूह हमर रक्षा क' गेल।

संस्थाक जे अधिकारी सेवानिवृत्त होथि, हुनका जगह पर क्यो एबे नहि करैक। सभक प्रभार हमरे भेटैत रहल। बर्खक बर्ख सात टा अधिकारीक प्रभारक दंश भोगैत पताइत रहलहुँ। आश्चर्य जे तैयो पंचानवे प्रतिशत कर्मी आ शिक्षकक प्रियपात्र बनल रहलहुँ (बरु उपरे सँ किएक ने, भीतर पैसि क' के देखैत छैक!)। बुझिऐक यैह जे जातिक ओतेक बात नहि छैक, बात छैक जातिक मठाधीशक, जातिक नाम पर अपन खेती कर' वलाक।

आ ई अध्याय समाप्तो भेल तँ एक टा अप्रिय अनुभूति सँ। नियत तिथि सँ दस दिन पहिनहि हमरा सेवानिवृत्त क' देल गेल। विरोध कयला पर भ्रम हेबाक तर्क देल गेल। निरर्थक हरान भेलहुँ सुधारक पाछाँ।

जीवनक बोखार घटि गेल अछि। बोखारक तेज मथदुक्खी आ कँपकँपी खतम भ' गेल अछि। त्रासदायक उखाड़-पछाड़ सँ मुक्त भ' गेल छी। तँ लगैए, ओहि अधिकारीक बहत्तरि हाथक अँतड़ीक बात एक अर्थ मे एकदम साँच। ई पतित समय आ पपियाह व्यवस्था! बहत्तरि हाथक अँतड़ी जकरा नहि छैक, तकरा लेल ई भवसागर पार करब कठिन।

अंतिका, जनवरी-मार्च, 2001

आरतक पात लाल

जीवकान्त

मुजफ्फरपुर मे तिरहुत कमिश्नरीक विज्ञान शिक्षक सभक एक सेमिनार आयोजित भेल रहै। पुरना तिरहुत। तकर पुरना चारि जिला—मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारन, आ चम्पारन। कदाचित पचास-साठि गोटे रहथि शिक्षक लोकनि। बेसी लोक नव अवस्थाक, आ अप्रशिक्षित शिक्षक लोकनि।

मुखर्जी सेमिनरी--ई नाम रहै विद्यालयक। जकर सभा कक्ष (हॉल) मे हमरा लोकनि, परिचर्चाक सहभागी लोकनि, अपन-अपन दरी आ झोड़ा ल' क' पड़ल रही। सुतबा काल दरी पसारि दी आ तकियाक बदला माथ तर झोड़ा अड़ा दिऐ। फागुन रहै, एक टा ओढ़ना चद्दरि पएरक औंठा सँ नाक धरि तानि दिऐक, आ सूति रही। मच्छड़ रहै, मच्छड़दानी क्यो ने रखने छल। दू टका प्रतिदिन भोजन लेल भेटै, लोक घूमि-घूमि क' केबिन आ होटल जा क' क्षुधा शान्त क' आबए।

एहि मे सभ नापक शिक्षक रहथि। बेसी बी. एससी. थोड़ेक एम.एससी., थोड़ेक आई.एससी.। हम आई.एससी. धरि पढ़ने रही। हाइ स्कूल मे विज्ञान पढ़बैत हम पाँच-छओ साल काटि लेने रही। पढ़यबा मे मोन लगाबी। हमरा लोकनिक दू घंटा औपचारिक क्लास होअए, सात बजे सँ नओ बजे धरि। तकर बाद विद्यालयक कक्षा शुरू भ' जाइक। बालक विद्यालय छल। भीड़ होइक। चहल-पहल होइक। हमरा लोकनि ओ समय हॉल मे सूति क' काटि दी अथवा शहर मे घूमि-घामि क' बिता दी।

सेमिनरीक प्रधान अध्यापक निदेशक छलाह। घरबैयो छलाह। हुनके सक्रिय सहयोग सँ ई आयोजन चलि रहल छल।

कहियो काल हमरा सभक कक्षा केँ संबोधित करथि। एक टा पाठ मे कहने रहथि— गाम-गाम मे स्कूल फुजैत छै। घेरि क' सभ बालक केँ स्कूल धरि लए अनैत छै। जे पढ़निहार छै, से पढ़तै। जे नहि पढ़ए चाहत, तकरा के पढ़ाओत? एहेन विद्यार्थी ने अपने पढ़त, ने अनका पढ़ए देत।

स्पष्ट रहै जे ओ शिक्षाक सार्वजनिकताक विरोध नहि करैत छलाह। शिक्षाक गुणवत्ता केँ बचएबाक हेतु आग्रहशील छलाह। छात्र सभक अनुशासन आ अध्ययनशीलताक वातावरण केँ ओ नष्ट होएबा सँ बचाबए चाहैत छलाह।

एहने पाठ मे ओ एक दिन कहने रहथि—मास एजुकेशन इज घास एजुकेशन (सार्वभौम शिक्षा शिक्षा केँ घास अर्थात तुच्छ बना देत)। पचास बर्खक बाद ई उक्ति मोन पड़ल अछि, जनाइत अछि प्रिंसिपल महोदयक कथन मे कतेक दूरदर्शिता छल।

एक दिन ओ हमरो सभ पर एक मार्मिक टिप्पणी कएने छलाह। हम सभ तिरहुत कमिश्नरीक प्रतिनिधित्व करैत रही। तिरहुत कमिश्नरी माने उत्तर बिहारक आधा भाग। आ ई कमिश्नरी संपूर्ण बिहारक (झारखंड समेत) चतुर्थांश छल।

ओ कहलनि—ओ बिहार मे बहुत दिन सँ नोकरी करैत छलाह आ शिक्षा विभाग मे छलाह। ओ निरीक्षण कएलनि जे बिहारक शिक्षक स्वयं ने पढ़ैत छथि, आ ने हुथिअओला सँ पढ़ए लेल तैयार होइत छथि। जाहि ठाम शिक्षक लोकनिक ई मानसिक स्तर, ततए छात्र सभ सँ अहाँ कतबा आशा क' सकैत छी।

प्रिंसिपल साहेब कोनो भासल कथा नहि बाजल छलाह। अपन मार्मिक कष्ट केँ ओहि मंच सँ ओ वाणी देने छलाह। बिहारक छात्रक कोन कथा, एहि ठामक शिक्षक समुदाय पढ़बाक नाम पर मास मे पाँच टका नहि खर्च करैत अछि।

ओ कहलनि बी.एससी. क' ओ शिक्षक भेलाह। फेर ओ नोकरी मे रहैत एम.ए. कएलनि। तकर बादो विश्राम नहि। ओ पीएच.डी. करए लगलाह। ओ कहलनि हुनक शोधक विषय थिकनि, कंट्रीब्यूशन औफ तिरहुत टू जैनिज्म एंड अहिम्सा (जैन धर्म आ अहिंसा मे तिरहुतक अंशदान)। ओ कहलनि, साल-दू साल मे ओ रिटायर करितथि। रिटायरमेंट मे सेहो पढ़बा-लिखबाक हुनक अनेक योजना छलनि।

हम अपन गुण-दोष दिस ताकल।

आई.एससी. पास कएना छओ साल बीति गेल छल। नोकरी धरबा सँ पहिने सोचैत रही, एक साल नोकरी क' लैत छी। नोकरी छोड़ि देब। कोनो शहर धए लेब। नाम लिखा क' पढ़ब। खर्चा लेल ट्यूशन (पार्ट-टाइम ट्यूशन) ताकि लेब। से सोचब छल, जे पूरा नहि भेल।

शिक्षक लोकनि मे एक छोट समूह छल जे प्राइवेट सँ परीक्षा दैत छल आ एहि तरहेँ बी.ए., एम.ए. क' जाइत छल।

हमरा लेल एहू मे बाधा छल। आई.एससी. क बाद पहिने आई.ए. परीक्षा

करू। फेर आगाँ लेल बैसबाक अनुमोदन भेटत। अर्थात डगर बहुत पैघ छल। एक बेर आई.ए.। तखन बी.ए.। तखन...असाध्य आ जबदाह बुझाइत छल। देहात मे शिक्षक रही। विश्वविद्यालय आ महाविद्यालय पचीस-पचास माइलक यात्रा पर छल।

अनेक दिन विचारैत रहलहुँ। प्रिंसिपल लग अपन समस्या राखी। सेमिनार मे ई सवाल उठाएब ठीक नहि छल। उघाड़ होएबाक, अपमानित होएबाक भय हमरा लजकोटर बना देने छल।

स्कूलक बाद एक दिन हम हिम्मत बान्हि हुनक आवास पर गेलहुँ। विद्यालय परिसरे मे प्राय: हुनक आवास छल।

पहुँचलहुँ, तँ ओ दर्शन देलनि, बैसओलनि। कहलियनि, हम पढ़ए चाहैत रही, नहि भ' रहल अछि। हम की करी।

हम कहलियनि, हम आई.एससी. क' लेने छी।

ओ कहलनि, अहाँ बी.ए. क परीक्षा प्राइवेट सँ दिअ'। फेर अगिला परीक्षा लेल प्रयत्नशील होएब। ओ कहलनि, एहि साल विश्वविद्यालयक सिनेट पास कएलक अछि, आई.एससी. पास छात्र बी.ए. परीक्षा लेल अनुमोदन लए सकैत अछि। नो क्वालिफाइंग एग्जामिनेशन (योग्यता परीक्षाक बाधा नहि)।

हमरा लेल ई सूचना नव छल। हमरा ई बात के कहैत?

ओ आगाँ कहलनि, एहि ठाम बगल मे विश्वविद्यालयक ऑफिस छै। कालि्ह दस बजे अहाँ जाउ। परीक्षा-विभाग मे पूछबै। फेर अहाँ कोर्सेज ऑफ स्टडीज कीनि लेब। किछु सालक प्रश्नपत्र बिकाइत छै। किछु सेहो कीनि लेब आ अभ्यास करब। संभव होअए, तँ सिलेबस देखि क' किछु किताबो कीनि लेब, आ पढ़ब शुरू क' देब।

उठबा सँ पूर्व हमरा सँ ओ वचन लेल जे अगिला बर्ख हम बी.ए. परीक्षा मे बैसब।

हम प्रयत्न मे लागल रहलहुँ। बी.ए.क परीक्षा पास भेलहुँ। हिंदी मे विशिष्टता (डिस्टिंक्शन) देल गेल।

समय बचैत छल। लिखबाक बात मोन मे आबए। मैट्रिक परीक्षाक तैयारी लेल हम कविता लिखब बन्न क' देल। ओहि सँ पूर्व हम हिंदी मे तुकबंदी करी। कम काल करी। आर्यावर्त दैनिक मे पठाबी, तँ छपि जाए, आश्चर्य सँ अपन नाम अखबार मे देखी।

ओहि बीच मिथिला मिहिर नियमित छपैत छल, ओकर प्रतीक्षा नहि करैत छलहुँ। भेटि गेल, तँ उनटा-पुनटा क' देखि लेलहुँ। नहि भेटल, तँ नहि भेटल। किएक ओहि लेल पुछारि करब।

मोन मे आबए, हम कविता लिखैत छलहुँ। से हम छोड़ने छलहुँ। प्राय: दस साल सँ छोड़ने छलहुँ। कोनो चीज छोड़ि देलाक बाद छुटि जाइत छैक। फेर सँ शुरू करब कठिन होइत छैक। बुझू जे फेर नव डेग उठाबए पड़ैत छैक। डेगाडेगी चलए पड़ैत छैक आ थाहि-थाहि क' चलएं पड़ैत छैक। एहि अवस्था मे मार्गदर्शकक प्रयोजन होइत छैक। क्यो आँगुर सँ हाथ लगा लिअए, आ खसबा सँ, तलमलयबा सँ, बचएबा मे मदति करए। से नहि छल।

हम जाहि वातावरण मे रही, से बहुत विचित्र छल। स्कूल मे छात्रावास कहि चारि कोठली। आठ गोट शिक्षक। बारह गोट छात्र। बीस गोटे। एक गोट मेस। मेस मे एक ठीकेदार आ तकर एक टहलू।

दिन मे दू बेर भोजन कराबए। जलखै करब जरूरी होइ, तँ रोडक कात मे हलुआइक छोट दोकान रहै। ओहि ठाम लोक चूड़ा-दही खा आबए। स्यो-बुनियाँ सेहो भेटि जाए।

स्कूल चारि गामक बीच एक निरन्त स्थान मे। दिन मे विद्यार्थी सभक रहला सँ हलचल रहैक। मुदा चारि बजे साँझ सँ अगिला दिनक दस बजे दिन धरि ओ जगह सुन्न आ उदास भ' जाइक।

ताश ओहि एकरसता केँ नष्ट करैक। बेसी काल चारि गोटे 'ट्वेंटी एट' खेलए। इशारा होइ, हल्ला होइ। मुदा फुसियाही हल्ला। चिकरा-चिकरी। स्टडी पीरिएडक बाद रातियो मे खेल शुरू भ' जाइक। कहियो काल भोर भ' जाइक। खेल आ जुआ मे बैसब आसान छैक, ओहि ठाम सँ उठब कठिन छैक।

स्कूल नव छल, दस बर्ख पहिने स्थापित भेल छल। शिक्षको सभ नव छलाह। सभक पहिल नोकरी रहनि। सभ गोटे गाम पर परिवार छोड़ि आएल रहथि। माता-पिता, भाइ-भातिजक संग संयुक्त परिवार सँ आएल हमरा लोकनि अपन तुच्छता आ व्यर्थता केँ बिसरबा लेल ताश मे अपन कष्ट-मुक्ति देखी।

हमरा ताश मे छोड़ि देअए, तँ नीक लागए। संग क' लिअए, तँ दुख होअए। कोशिश मे रही, नव खेलाड़ी आबए आ तकरा हम ताशक पत्ती पकड़ा दिएक।

हम किछु करए चाहैत रही। हम नव सँ पत्रिका सभ केँ पढ़ब शुरू कएलहुँ। की लिखल जाइत छैक आ कोना लिखल जाइत छैक, ताहि पर ध्यान देल करी। लेखक बनबा लेल हम अपन प्रशिक्षण कदाचित सजग रूपेँ शुरू क' देने रही। स्कूल पुस्तकालय मे बड़ थोड़ पुस्तक छल। पोथी 'ईशू' कराबी आ यत्न सँ उनटाबी।

लेखक कतेक आसानी सँ कोन बात लिखि गेल अछि, ताहि पर विचार करी।

मैट्रिक मे छात्र रही, तँ किताब पढ़बाक आदति लागि गेल। कोनो पोथी भेटि जाए, तँ पढ़ि जाइ—अंत धरि पढ़ि जाइ।

मिथिला मिहिर पढ़बा मे नीक लागए लागल। भाषा-प्रेम आ भाषा-आन्दोलन पर उद्‌बोधन अबैक। समाचार अबैक, भाषण आ सन्देश अबैक।

कलकत्ता आ बांग्ला भाषाक चर्चा बेसी काल होइक। रवीन्द्रनाथ ठाकुर बांग्ला मे लिखलनि। माइकेल मधुसूदन दत्त अंग्रेजी छोड़ि बांग्ला मे महाकाव्य लिखलनि। से बात प्रेरित करए।

हम मैट्रिक मे पढ़ी, तँ एतबा नहि बूझी जे लिखी, तँ मैथिली मे लिखी। हिंदी मे लिखी। ई नहि बूझी जे हिंदी मे किएक लिखैत छी। हिंदी मे पाठ्य पुस्तक छल। हिंदी मे प्रश्नपत्र अबैत छल। हिंदी मे प्रश्नोत्तर देबए पड़ैत छल। तँ हिंदी लिखब सोझ लगैत छल। हिंदी लिखब सिखाओल गेल छल। बहुत मेहनतिक बाद हिंदी मे पढ़बा-लिखबाक क्षमता हम अर्जित कएने रही। तँ हिंदी मे लिखब स्वाभाविक छल, आकस्मिक नहि छल।

मैथिली हम पढ़ि सकैत छलहुँ, आ पढ़बो करी। मुदा मैथिलीक पोथी नहि भेटए (एखनो नहि भेटैत छैक!)। मैथिली पढ़ए आबए, मैथिली पढ़ाबहु आबए। एना होइक जे कोनो शिक्षक छुट्टी पर जाथि, तँ हुनक क्लास शिक्षक सभ केँ लेबए पड़ैक। तँ कहियो-कहियो मैथिलीक खाली क्लास लेबए पड़ए। पढ़ा सकैत रही, रस-पूर्वक पढ़ा दिऐक। हमरो लाभ होअए। पाठ्यचर्या मे मैथिलीक नव-पुरान लेखक सभक रचना पढ़यबाक अवसर भेटैक। पाठ केँ पढ़बैत विभिन्न लेखकक विशेषता आ विलक्षणता परिचित भ' जाए। तँ अज्ञात लेखक ज्ञात लेखक भ' जाथि, यद्यपि ओ लेखक परिचित नहि होथि, सुपरिचित तँ नहिए होथि।

मैथिली लिखब एक फूट बात रहैक। जाहि लेल प्रयास करए पड़ल। सिखबा लेल मोन देबए पड़ल। मैथिली पत्रिका मे भाषाक वर्तनी देखि अचंभित होइ। भिन्न-भिन्न लेखक अपन इच्छानुसार वर्तनी रखने रहथि। एक अनुच्छेद मे एके शब्द दू बेर अबैक, तँ दुनू बेर फूट-फूट वर्तनी मे लिखल देखाइक। वर्तनीक एकरूपता नहि छल, पत्रिका सभ प्रयास करैत छल जे एकरूपता होइक। प्रायः वर्तनीक क्षेत्र मे एखनो अराजकता व्याप्त अछि। नव-नव प्रयोग हमेशा होइत अछि। एहेन प्रयोग हमरो सभ करैत छी, आ ताहि मे ककरो सँ कम दोषी नहि छी।

धीरे-धीरे मोन मानि गेल जे हमर मातृभाषा मैथिली थिक। एहि भाषाक रक्षा करबाक अछि। हम कविता लिखबैक, आ हम एहि भाषा मे कविता लिखबे नहि करबैक, तँ ई भाषा कोना बचतैक। से बात स्पष्ट भ' गेल।

लिखब शुरू करबाक बात एक कठिन काज छल। शुरू करब, से निश्चित भ' गेल। कहिया पहिल रचना लिखब, से अनिश्चित छल। क्यो दोसर धक्का दैत, तँ गाड़ी स्टार्ट भ' जाइत। से नहि छल। आकाशक नीचाँ, आ धरती सँ उपर हम एकसर छलहुँ। हमरा अपनहि धक्का मारबाक छल आ अपनहि वेग पकड़बाक छल।

पहिल रचना लिखबाक ओ क्षण मोन पड़ैत अछि, तँ आश्चर्य होइत अछि।

क्रिसमसक छुट्टी घोषित भेल। दिसंबरक तेसर-चारिम सप्ताह मे रेल पकड़ि, गाम अएलहुँ। अधरतिया मे गाम पहुँचलहुँ। सूतए गेलहुँ। जमीन पर किछु ओछा क' सूती। एक बर्ख पूर्व गाम पर भयानक अगिलग्गी भेल रहए। खाट-चौकी सभ वस्तु जरि गेल रहए। एक बर्ख बितलाक बादो साधारण वस्तु जमा कएल नहि भेल रहए।

ओहि राति मे हमरा भेल जे एखन एक टा कविता लिखैत छी। डिबिया लेसबाओल। टाँगल कुरताक जेबी सँ कागतक एक पुर्जी बहार कएल, कलम बहार कएल। पीठ पर सीड़क लदने जाड़क शीत मे हाथ बहार क' पचीस-तीस शब्द छोट-पैघ पाँती मे लिखल। एक छोट कविता लिखल। डिबिया मिझा देल।

एहेन भेल जे कविता लिखी, पत्रिकाक पता पर कविता केँ डाकघर मे छोड़ि आबी। दू सप्ताहक बाद देखी जे कविता छपि क' आबि गेल अछि।

कविता लिखब प्रधान काज भ' गेल। बाट चलैत काल अनेक चीज देखिऐक, ताहू मे यत्र-तत्र कविताक विषय, कविता लेल सरिआ क' बनैत बिम्ब झलकए लागए। वर्ग मे विषयक प्रस्तावना करी, मुख्य विषय धरि आबी, ओहि बीच कोनो शब्द, कोनो सोझराइत काव्य-बिम्ब, कोनो नव विचार आबि जाए आ तंग करए जे ओकरा नोट करी। सभ काज स्थगित क' ओहि चेतनाक सही-सही शब्द मे अंकित करबा लेल मोन अओनाए लागए।

विषय आबए, विषय बिसरा जाए। दस गोट बात मे कोनो एक गोट बात दू दिनक बादो मोन रहए।

नव ढंगक कविता लिखी। ओहि मे छंद, तुक, लय, प्रवाहक कोनो बखेड़ा नहि रहैक। तँ ई कविता कलमक नोक सँ अबाध गति सँ बहराए लागल।

कविता केँ मंच चढ़ि, पढ़ए पड़ैत छैक, से बात जखन ध्यान मे आएल, तँ भेल जे कविता लिखब भारी झंझटि थिक।

पहिल बेर प्रायः कविता पाठ करबा लेल बसुआरी गेलहुँ। से रामकृष्ण झा 'किसुन' (सुपौल)क आमंत्रण पर।

ओहि समय मे किसुनजी बहुत सक्रिय छलाह। सुपौल सहरसाक प्रत्येक साहित्यिक-सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक सभ सँ महत्त्वपूर्ण कार्यकर्त्ता छलाह। आर्यावर्तक संवाददाताक रूप मे हुनक प्रवेश गरीबक खोपड़ि सँ महासंपन्न लोकक तिनमहला भवन धरि छल। कविता, कथा, लेख लिखैत हुनक प्राण तृप्त होइत छलनि। हम नवागन्तुक रही। हमरा पर विशेष अनुराग छलनि। जँ कहियो दूओ गोट पत्र ओ लिखथि, तँ एक पत्र ओ हमरा नामे लिखथि।

बसुआरी हमरा गाम सँ दू कोस पूब। बसुआरी गाम सँ आधा कोस पूब गेला पर जिला सहरसा (आब सुपौल) शुरू भ' जाइत छलै। हमर गाम आ बसुआरीक बीच कोनो बस्ती नहि। एकबद्धू छलहुँ, बसुआरी लेल। स्कूल मे पढ़ैत रही, तँ बसुआरी कतोक कारणें जाइ।

यादव लोकनिक गाम बसुआरी मे विद्यापति पर्व। मैथिली कवि-सम्मेलन। आयोजक पक्ष सँ किसुनजीक हस्ताक्षर। सभ टा अजगुते छल।

सोझ बात ई जे किसुनजीक हाइ स्कूल मे बसुआरीक एक छात्र पढ़ैत छल। छात्र कपिलेश्वर हुनका सँ प्रेरित भ' मैथिली-भक्त भ' गेल। ओ चाहलक जे ओकर गाम मे (बसुआरी मे) मैथिली चेतनाक जागरण होइ। किसुनजी लग ओ निवेदन रखलक। किसुनजी मानि लेलथिन। विद्यार्थीक हाथ मे दस टाका नहि। तथापि ओहि ठाम मैथिलीक चर्चा होअए। ओ हमरा खबरि क' देलनि। ओ खगड़िया-समस्तीपुर बाटेँ रेल पर घुमैत बसुआरी अएबाक भारी कष्ट उठओलनि।

धनकटनीक समय रहैक। संभवतः बड़ा दिन (क्रिसमस)क छुट्टी रहैक। बाध मे एक पोखरिक मोहार पर बैसारक ओरिआन छल। दस-पन्द्रह गोटे केँ किसुनजीक छात्र कपिलेश्वर एकट्ठा कएने।

मैथिली मातृभाषा थिक। मैथिली लेल हमरा लोकनि संघर्ष करी। से सभ बात भेल। दूए गोटे रही। किसुनजी आ हम। कतेक बाजब। कतेक काव्य-पाठ करब।

विद्यार्थी कपिलेश्वर पढ़ि क' पटना हाइकोर्ट मे अधिवक्ता भेलाह। लालूजीक शासन मे ओहि गामक सुरेन्द्रजी एम.एल.ए., एम.पी., एम.एल.सी. इत्यादि भेलाह।

मुदा बसुआरी मे मैथिलीक जागरण जहिना आ जतबा छल, ततबे रहि गेल। मैथिलीक चर्चा वार्षिक अधिवेशन मे संस्था सभ जतबा काल करैत अछि, ततबा काल बहुत ठीक लगैत अछि। आयोजनक समाप्तिक बाद भाषा, साहित्य, मातृभाषाक सभ सवाल गौण भ' जाइत अछि।

ओहि क्षण अनुभव भेल जे कवि-सम्मेलन मे कवितापाठ एक निरर्थक प्रयास

थिक। श्रोता धरि कवि अपन कथ्य नहि पहुँचा पबैत अछि। कवि अलग निराश होइत अछि, श्रोता अलग निराश होइत अछि।

हमरा सभक समाज नाटक-नौटंकी बुझैत अछि, नाच-गान बुझैत अछि। मुदा कविता नहि बुझैत अछि।

एखन जे समय छैक, ताहि मे आर्केष्ट्रा बहुत लोकप्रिय अछि। ओहि ठाम ढाठतोड़ भीड़ जमा होइत अछि। भीड़ नियंत्रित करबा लेल पुलिसक ड्यूटी लगैत छैक। तथापि जतए कतहु सुनब जे आर्केष्ट्रा मे मारि भेलैक। किछु लोक मारल गेल। मोकदमाबाजी भेल।

किसुनजी लगभग बीस साल हमरा सँ जेठ छलाह। मुदा हमरा लेल बहुत आवेश रहनि। हम अपन एहि आवेशक दुरुपयोगो कएने छी, से मोन पड़ैत अछि। एक बेर ओ पत्र लिखलनि, गप्प करबाक मोन होइत अछि। हम लिखि देल, अहाँ डेओढ़ चल आउ। आश्चर्य जे ओ रेल सँ सहरसा-समस्तीपुरक प्रदक्षिणा करैत डेओढ़ आबि गेलाह। बाद मे पश्चाताप भेल जे हम अनेरे हुनका एतबा कष्ट देल।

ओ सुपौल मे नवकविता पर सेमिनार आयोजित कएलनि। ताहि मे हम सम्मिलित भ' बहुत अनुभव प्राप्त कएल। राजकमल चौधरीक संग सहभागिता कएल। कीर्त्तिनारायण मिश्र सँ भेंट भेल। सेमिनारक संकल्पानुसार कलकत्ता सँ आखर पत्रक प्रकाशन भेल।

नवकविताक मैथिली मे बहुत उपेक्षा होइत छल। परंपरित कविताक आक्रामकताक विरोध मे हमरा लोकनि प्रत्याक्रामकताक उपयोग करैत रहलहुँ। राजकमल चौधरी आ रामकृष्ण झा 'किसुन' अल्पायु मे दिवंगत भेलाह।

नवकविता आ परंपरित कविताक बीच एक शीतयुद्ध छल। बाद मे हम एहि शीतयुद्ध मे एहि कविताक ध्वजवाहक भेलहुँ। तँ अविश्रान्त रूपेँ वक्तव्य दैत, आक्रमण करैत, हम अपन ऊर्जा एहि काज मे झोंकल।

सुपौलक नवकविता सेमिनारक बहुत सुखद दू दिन बिता क' हमरा लोकनि सुपौल रेलवे स्टेशन पर अएलहुँ। राजकमल प्रस्ताव देलनि हमसभ हुनक गाम महिषी चली। कीर्त्तिनारायण मिश्र कलकत्ताक टिकट कटओलनि। हम, रमानन्द रेणु आ डा. धीरेन्द्र सहरसाक टिकट कटा महिषीक बाट धएलहुँ। राजकमलक संग हुनक एक ग्रामीण युवा मित्र छलथिन।

हमरा लेल खुशीक बात छल जे राजकमलक संग रही। हम राजकमलक गामक यात्रा क' रहल रही।

एतेक हँसैत-बजैत लोक हम कम देखने छी। ई बात स्मरणीय जे ओ समय राजकमलक अन्तिम समय छल। फरवरी मे हमरा लोकनि हुनक संग हुनक गामक उग्रतारा शक्तिपीठ जा रहल रही, ओकर तीन मास बाद जून मे हुनक देहान्त पटनाक अस्पताल मे असाध्य रोग सँ भ' गेलनि।

ओ हमरा बहुत मान दैथि, अपन अंतरंग बात कहए चाहथि। हुनका संग हमर परिचय मात्र डेढ़ बर्खक पुरान छल। हमर लेखकीय आयु मात्र दू बर्ख छल। एही डेढ़ बर्ख मे राजकमल हमरा दू-तीन दर्जन पत्र लिखलनि जे आत्मीय आ महत्त्वपूर्ण छल।

बाट मे हम सहरसा शहर जकरा ओ 'शहर नहीं, शहर-सा' कहैत छलाह, देखल। कात सँ बरियाही शरणार्थी शिविर देखल। बनगामक बस्ती देखल, लक्ष्मीनाथ गोसाँईक कुटी देखल, धेमुड़ाक मरणे धार देखल।

बाट मे ओ अपन ग्रामीण मित्रक संग चिलम भरि लेथि, चिलम केँ ओ 'पात्र' कहथि, पात्र-पान करथि। हमरा कहथि संग देबा लेल। हम कहलियनि, हम ठाढ़े खसि पड़ब। हमर उपहास करैत कहलनि, भने तों मास्टर छलाह, गुरुजी बनल छलाह, तों लेखक सभक समूह मे आबि किएक घोंसिआ गेलाह।

दू मास पूर्व हुनक पिताक मृत्यु भेल छलनि। ओ कहलनि—हम पिता केँ कहने रहयनि, हम अहाँ केँ आगि नहि देब। से हम पालन कएल। हम, हुनका आगि नहि देल।

गुरुजी सँ हुनक घृणा बूझल जा सकैत छल। हुनक पिता अपना समयक धुरंधर आ विख्यात हेडमास्टर (हाइ स्कूल मे) छलाह। ओ अपन पिता केँ कहियो पसिन्न नहि कएलनि। माइक स्नेह हुनका भेटबे नहि कएलनि। स्वाभाविक स्नेह हुनका नहि भेटल। ओ तकरा तकैत छलाह, जीवनक अन्तिम कालक किछु अपन महत्त्वपूर्ण कविता मे ओ तकर आख्यान कएने छथि।

मनुक वचन छनि (संभवत:)—प्रवृत्तिरेषां भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला। मनुक्ख प्राकृतिक जीव थिक, ओकरा मे स्वाभाविक छैक अनेक बात। एही वचनक पूर्व भाग मे कहल गेल छैक—ने मांस-भक्षण मे दोष छै, आ ने मदिरा आ मैथुन मे कोनो दोष छैक। सभ जीव मे एहि दिस स्वत: प्रवृत्ति (आकर्षण) छै। निवृत्ति (त्याग) क' सकी, तँ से श्रेयस्कर (महाफला) थिक।

राजकमलक जीवन मनुक्खक आदिम जैविक आ शारीरिक भूख सँ परिचालित छल। ओ मनुक्खक एहि आवश्यकता आ विवशता केँ सहज भावेँ अभिव्यक्त

कएलनि। मैथिल एवं भारतीय जीवन मे बहुत पाखंड अछि। से हुनक लेखनी सँ आहत भेल। गरीबक जीवन आ धनिकक जीवन मे कम पाखण्ड छैक, से सभ देश मे, आ सभ काल मे रहलैक अछि। मुदा मध्यमवर्ग आ विशेष क' निम्न मध्यम वर्ग पाखण्ड मे जिबैत अछि, विधि-निषेध मे जिबैत अछि, वर्जना मे जिबैत अछि।

ठीक एहने विचार कथाकार, डी.एच.लारेंस अपन उपन्यास 'दि संस ऐंड लभर्स' मे व्यक्त कएने छथि। राजकमल बहुत बेसी पढ़ल गेलाह। हुनक विरोधियो सभ हुनक उत्सुक पाठक छल। तँ राजकमल कोनो नव बात नहि कहलनि। राजकमल अपन कथ्य केँ बहुत सावधानी सँ आ बहुत साहस सँ उठओलनि।

मैथिली मे ओ अद्वितीय छथि। अपन विषय वस्तु, अपन शैली, अपन वाक्य-विन्यास, अपन शब्दावली, अपन मोहाविरा मे ओ विलक्षण आ अनन्य छथि।

हमरा सभ केँ कोसीक बान्ह पर लए गेलाह। राति मे बान्ह कतेक आकर्षक (सुनसान) होइत छैक, से प्राय: कहलनि। उग्रतारा मंदिर परिसर मे हमरा सभ किछु समय (पर्याप्त समय) बिताओल। मंडन मिश्रक डीह देखओलनि। प्रसिद्ध पनिभरनी-इनार देखओलनि। मंदिरक चारू कात क्योड़ाक काँट वला झाँखुड़ सभ देखओलनि। मंदिरक बाहर सुन्न जगह मे धूनी रमाकए बैसल एकाधिक अर्ध-नग्न तांत्रिक साधु सभ केँ सेहो देखल।

उग्रतारा ग्रामीण समाज आ विशेषत: ग्रामीण महिला लोकनिक दैनंदिन जीवन मे बहुत जगह छैकने छलीह, से सभ देखल।

राजकमल उग्रताराक चर्चा करैत भावावेश मे आबि जाइत छलाह। प्राय: हुनका एहि देवी मे माए, मदिरा आ मैथुन—सभ एक ठाम भेटि जाइत छलनि।

एक बेर पटना सँ एक पत्र मे ओ लिखलनि, उग्रतारा पियासलि छथि। ओ मदिरा मँगैत छथि।

ओ कहलनि, रातुक शून्य मे उग्रतारा अपन परिसर मे घुमैत छथि, कारी रंगक एक छौंडी पायल पहीरि गर्व सँ (गौरव सँ) छमकि-छमकि-चलैत छथि, से कतोक गोटे कतोक बेर सुनलक अछि।

हुनक नवनिर्मित दलान मे राति मे सुतल रही। स्तब्ध आ निशब्द राति ओ हमरा उठओलनि। कहलनि, अमावस्या थिकै। उग्रतारा केँ भैरवी-चक्र मे पूजए जाइत छी। चलह, देखिहह...

हमरा डर आ अवचंक भेल। तंत्र-साधनाक बारे मे जतबा जे बूझल छल, से हमरा रोकलक आ हम क्षमा माँगि लेल। भिनुसरबा मे फेर ओ हमरा उठा क' दरबज्जाक आगाँ धधकाओल घूर तर लए गेलाह। कहलनि, बहुत अद्भुत भैरवी-चक्र भेल। बहुत सफल पूजा भेल। तों नहि गेलह, से बूझह जे एक दुर्लभ सौभाग्य

सँ वंचित रहि गेलह। मन्दिर सँ एखनहि आबि एहि लोटा केँ घूर पर चढ़ा सादा चाय (चाह) बना क' पीलहुँ अछि।

भोर मे जलखै-पनपियाइक बाद ओ हमरा उठा क' दलानक एकान्त भाग मे लए गेलाह। फागुनक भिनुसर मे लोक रौद तपैत बैसल छल। हुनक दलानक पाछाँ बाट छलै। बाटक दोसर कात एक ओसार पर एक युवती संतुष्ट भावेँ रौद लगबैत बैसल छलीह।

हुनका दिस हमरा तकओलनि। नुका क' कहलनि, ई थिकीह हमर भैरवी।

डेढ़ बर्खक हमरा सभक मैत्रीक लघु काल मे हुनक एक कविता-संग्रह आएल रहनि, मुक्ति-प्रसंग से ओ बहुत सिनेह सँ डाक सँ हमरा पठओने रहथि। अनेक बेर ओ एहि बीच रुग्ण होइत छलाह। अनेक चिकित्सा-पद्धतिक चक्कर मे पड़ैत छलाह। ठीक होइत छलाह, दुखित पड़ैत छलाह। ओहि कष्ट आ यंत्रणाक बीच ओ बहुत लेखन कएलनि। मैथिलीक फाँट (बखरा) मे जतबा जे ओ लिखि क' देलनि, ताहू मे कतहु ओ बेइमानी नहि कयलनि।

ओ बहुत छोट जीवन पओलनि। ताहू मे रोग, अभाव, अनादर, वैमनस्य बहुत भोगलनि। बहुत प्रसिद्ध लेखक सभ अनेक भाषा मे अद्भुत लेखन कएलनि अछि, ओहि मे सँ अनेक अल्पायु भेल छथि। राजकमल एहने एक प्रतिभाशाली लेखक छलाह, जे क्षणभरि धधकि क' मिझा गेलाह।

भैरवी-चक्रक बात करैत छथि धूमकेतु। कथा लेल प्रसिद्ध भेलाह। कविता मे सेहो बात कहैत छथि। समाधिस्थ शीर्षक कविता मे कहैत छथि—'हमरा गामक प्रत्येक शाखा मे छैक गहींर अन्हार धोधड़ि/आ सभ धोधड़ि मे बसैत अछि एक टा क' सनातन शेषनाग'। गामक स्त्रिगणक मादे ओ लिखैत छथि—'एकर अंक मे उमकैत अछि डाकिनी-पिशाचिनी-योगिनी/जे प्रत्येक संभावित भ्रूण केँ मन्त्र बलें छिना दैत छैक/ आ चानि पर लेसि दैत छैक बतिहर/साबर गबैत छैक आ नचैत छैक भैरवी-चक्र मे चक्राकार नंगटे/हमरा गाम मे रहैत छैक बारहो मास कालरात्रि।' एहि कविता मे ओ गामक तुलना एक पुरान पीपरक गाछ सँ करैत छथि। एहि ठाम जे 'गाम' अछि, से समस्त मिथिला आ समस्त भारतक परम्परागत जड़ताक प्रतीत भ' आएल अछि।

अपन कथा सभ मे ओ राजकमले जकाँ दुस्साहसिक अभिव्यक्ति कएलनि अछि। स्त्री आ मैथुनक विषय मे एहि दुनू कथाकारक विचार मे साम्य अछि।

एक बेर जनकपुर-यात्रा मे धूमकेतु सँ भेंट भेल। ओ हमरा अपन डेरा पर लए गेलाह। हमहू गप्पक लोभ मे हुनक संग धएल।

ओहि समय मे ओ युवा रहथि। विशाल शरीर, पर्याप्त नमती, सुदर्शन मुखमण्डल, आँखि किछु बेसी बेधक। पहिल पत्नीक मृत्यु भ' गेल रहनि।

डेरा रहनि जनकपुर आवासीय इलाका वला छोर पर। मजदूर बस्ती अधिक। बाटक कात मे छोट पक्का मकान मे छलाह। डेरा मे माए छलथिन। उज्जर केश, साफ उज्जर धोती मे। गौर वर्ण। कृश काया। एकसर भ' गेल छोट बेटाक डेरा मे छलथिन। भानस-भातक चिन्ता वैह करैत छलथिन।

डेरा पर गेलाक बाद हुनक पएर छूबा मे, हुनक आशीर्वाद लेबा मे, प्रसन्नता भेल।

घूमकेतु केँ देखला सँ ई नहि जनाइत छल जे हुनका कोनो चिन्ता आ क्लेश छनि। बहुत आत्मविश्वास आ आह्लादक मुद्रा मे ओ तखन छलाह।

साँझबातीक बाद ओ एक पथिया मे टौफी लेने अएलाह। कहलनि—गप्पो करू आ टौफी सोहि-सोहि खाउ। हम दू-चारि टा चाकलेटक कागत हटाओल, धीरे-धीरे मुँह मे ओकर रस घोंटए लगलहुँ। ओ मरदे लगातार ओकरा फँकैत गेलाह।

से बात हमरा अद्भुत लागल। ओ कहलनि जे ओ बेसी काल एहिना खाइत छथि। काकरो सँ गप्प करबा काल टॉफी मुँह मे चिबाएब बहुत सुविधाजनक होइत छैक।

माए भीतर सँ भाँगक गोला आ लोटा-गिलास लेने अएलथिन। धूमकेतु हमरा कहलनि—हम नित्य भाँग लैत छी। अहाँ लेब?

हम कहलियनि—हम भाँग नहि पिबैत छी।

ओ पुछलनि—नहि पिबैत छी, से फूट बात थिक। जँ कहियो काल पिबैत होइ, तँ लिअ'। नीक लागत।

घर सँ हुनक माए विरोध करैत कहलथिन—देखिऔ, ई एहि बच्चा केँ (अर्थात हमरा) तंग करए लागल। बच्चा कहैत छनि, नहि पिबैत छी, तखन कतहु जबरदस्ती कएल जाइ।

धूमकेतु माइक बात पर कान नहि देलनि। ओ कहलनि—नहि किछु होएत, कहियो काल पिबैत होइ, तँ नीक लागत। गप्प करबा मे सुविधा होएत।

धूमकेतु घोरलनि। एक गिलास हमरा दिस बढ़ा देलनि। हम सक्कदम। घोलक रंग गाढ़ हरियर। अर्थात् गाढ़ घोल।

हम कहलियनि—हम नहि पीब।

ओ कहलनि—पी लिअ'। एतबा सँ की होएत। एकर दोबर, तेबर हम लैत छी।

हम गिलास नहि उठाओल।

ओ कहलनि—थोड़बा निकालि दैत छिऐक। आधा निकालि दैत छिऐक।

से ओ आधा नहि निकालि, थोड़बा भाँग, बुझू जे नाम लेल (देखएबा लेल) थोड़बा भाँग बहार क' लोटा मे खसा देल।

ओ ई खलिया कएल गिलास हमरा हाथ मे दए देल। कहए लगलाह—चढ़ाउ। चढ़ा दिऔ। किछु ने होएत।

भाँग हम पी लेल। देह सिहरि गेल।

घर सँ हुनक माए प्रतिरोध कएलथिन—कहू, ई अन्याय होइ? बच्चा (अर्थात् हम) आएल गप्प करबा लेल। भाँग पिआ देलकनि। दू दिन पहिने हमर जमाए आएल छलाह। तनिको ई एहिना भाँग पिआ देने छलनि। जमाए बाबू कें डाक लए गेलनि (भाँग बहुत लागि गेलनि)। तखन डाक्टर बजा क' हुनक दवाइ कराओल गेलनि। कहू, ई कतहु होइक? आइयो एहि बच्चा कें तहिना भाँग पिआ देलकनि। नहि सुधरत हमर बेटा। नहि मनुक्ख होएत।

हमरा सन धैर्यवान श्रोता हुनका भेटल। थोड़बा मैथिली मे, किछु अंग्रेजी मे, गप्प शुरू भेल। ओ हमरा बुझबए लगलाह।

ओ बहुत विस्तार सँ जे कहलनि, तकर सारांश ई जे एक टा टापूक कल्पना करू। निर्जन टापू। ओहू पर दूए गोटे अछि। एक नर, दोसर नारी। अवस्था भने फर्क होइक, कतबो फर्क होइक, से भ' सकैत छैक। नर-नारी मे कोनो रक्त-संबंध भैओ सकैत छैक, नहियो भ' सकैत। भ' सकैत छैक दुनू मे, तथापि दुनू मे रति भाव जगतैक, मैथुन अवश्यंभावी। ई थिक परम सत्य। जीवनक परम सत्य। मैथुन साहित्योक परम सत्य। पाखंडी साहित्यकार मैथुनक चर्चा नहि करैत अछि। कोनो स्त्री, कोनो पुरुष एहेन टापू पर कहियो आ कखनो छोड़ि देल जाइक, तँ मैथुन होएतैक, आर बात होइक की नहि...

बात जैँ कि सेक्स (मैथुन) पर होइत रहैक, गप्पक किछु अंश अंगरेजी मे फड़िछा लेल जाए।

थोड़बा काल मे भाँगक निसाँ हमरा जँतलक। हमरा गप्पो नहि सुनाए। कान सन-सन करए। घर उनटैत-पुनटैत अनुभव होँअए।

हम हुनका कहल—हमरा एही चौकी पर मसहरी लगा दिअ'। हम पड़ि रहब। मोन घुमैए।

भीतर सँ माए हाक्रोश करए लगलथिन—हम कहैत छलिऐ। भाँग खुआ देतनि। बच्चा कें भुखले राखि देतनि। बच्चा पहिल बेर अएलाह। एक मुट्ठी खा

लितथि, सूति रहितथि। अभोग क' देलकनि। घर बजा क' कतहु एहि तरहेँ कएल जाइक...

धूमकेतु हमरा आग्रह कएलनि—किछु खा लिअ'। फेर मसहरी लगा क' सुतबाक ब्योंत क' देब।

हम चौकी सँ उठबाक स्थिति मे नहि रही। बैसबोक स्थिति मे नहि रही। हम टाँग पसारि देल आ बड़बड़ाए लगलहुँ—हम सूति रहब। खाएब नहि। मसहरी लगाउ।

धूमकेतु मसहरी लगएबा लेल बत्ती सभ कें चौकीक पौआ मे अड़ाबए लगलाह। हम आधा अंग्रेजी, आधा मैथिली मे फकड़ए लगलहुँ—फेंटास्टिक। एक आदमी सूतल। दोसर आदमी मसहरी लगा रहल। फेंटास्टिक। वन्डरफुल...इत्यादि।

भीतर मे माइ बड़बड़ाइत रहथि—कहू तँ कथी लेल हम एतबा भात रान्हि लेल। कथी लेल तरकारी एतेक परिश्रम सँ बनाओल। की भेल बना कए। कथूक जोग नहि छथि हमर बेटा। कहिया हिनका ज्ञान हेतनि...।

धीरे-धीरे हमरा चारूकातक स्थिति बिलाइत गेल। लालटेमक इजोत रहैक, से नहि बुझाए। बूढ़ी माए बजथिन तकर कोनो-कोनो शब्द पर कान जाए। माथ घूमए। अन्हार लागए। तारू सुखाएल अनुभव होअए। कदाचित एही विकलता मे हमरा निन्न भ' गेल।

ताड़ी छल, दारू छल। ई सभ कवि सोमदेवक जीवन मे सहज रूप मे छल। हम जाहि परिवेश मे बढ़लहुँ, जाहि वातावरण मे नोकरी करैत लेखन दिस यत्नशील भेलहुँ, ताहि मे एहि सभ वस्तु लेल ने पाइ छल, आ ने अनुमति छल।

सोमदेवक संग रही, तँ हुनका संग दी। बेसी काल अनठाबी। बेसी काल बर्दास्त करी।

ओहि समय मे हुनक 'कालध्वनि' कविता संग्रह आएल रहनि। मैथिलीक संस्कार मे 'स्वरगंधा' कें विजातीय मानल गेल, 'कालध्वनि' कें विजातीयक लेबुल सँ थोड़ेक आर निच्चाँ वला लेबुलक योग्य बूझल गेल। ई सभ कविता संग्रह तेहने हाहाकार मचा देने छल जेना हनुमानजी अपन नाँगरि मे लहरल अगि सँ सौंसे लंका मे धधरा धधका देने होथि। आश्चर्यक बात छल जे यात्रीक 'चित्रा'क विरोध छल, मुदा यात्री लेल अपनत्व आ आदर बहुत छल। ई बात फूट जे यात्री कें मैथिलीक प्रभावशाली गुट कहियो पएर रोपबाक जगह नहि देलकनि। उपहास करैत रहलनि।

सोमदेव घरक दरबज्जे पर बोर्ड लगा क' छोट-सन काउंटर रखने छलाह।

ओहि ठाम गेलहुँ। हुनका सँ दू गोट पोथी लेल—'कालध्वनि' आ 'भोरुकवा'। रसीद कटबा लेल नाम हमर पुछलनि। हम अनठाओल। बहुत जोर देलनि। हम कहलियनि—लिखू, जीवकान्त झा। ओ कहलनि—जीवकान्त झा, बी.ए.।

हमर दू-तीन गोट कविता-लेख इत्यादि मिथिला मिहिर मे छपल छल। ताहि मे हमर नाम जाइत छल जीवकान्त झा, बी.ए.।

हमरा आश्चर्य भेल, जे एतबो कम काज कएला उत्तर सोमदेव हमर नाम सँ परिचित भ' गेल छथि।

ओ कहलनि—बगए अहाँक देहाती-सन अछि। चलि सकैए। नहियो चलि सकैए। जीवकान्त झा नाम वला अहाँक ई देह-दशा देहाती मुखिया जकाँ लगैए। कवि जकाँ नहि।

फेर किछु बिलमि सोमदेव कहलनि—हमर बात मानब? सोझे जीवकान्त लिखू। पुछरी हटा दिऔ। तखन कनेक बुझाएत जे एक नव कवि छथि। कवि जकाँ नाम लागत।

सोमदेवक ई प्रस्ताव हमरा मान्य भेल। हम पता मे छपए दैत रही खजौली हाइ स्कूलक नाम। हम अपन पतो केँ छोपि क' छोट क' देल। हमर पता भ' गेल—खजौली (दरभंगा)। अर्थात् पोस्ट ऑफिस आ जिला। बाद मे ओहि स्थानक जिला बदलि गेल। बाद मे फेर पोस्ट ऑफिस सभ लेल 'पिन कोड' निर्धारित भेल।

ओ कविता मे अनेक प्रयोग करैत छलाह, ओकरा संग ओ जीविका मे, व्यवसाय मे, जीवन-पद्धति मे सेहो अनेक प्रयोग करैत छलाह।

नित्य दस-पाँच नवीन योजना बनबैत छलाह। आदर्श आ उदात्त योजना। साहित्य आ पत्रिकाक योजना, राजनीतिक पार्टीक योजना, बौद्ध बनबाक योजना, यात्राक योजना, इत्यादि-इत्यादि...

हुनका लग किछु जमीन छल, से खतम भ' गेलनि। पाइ छल, अथवा नहि छल, तकर रखबाक अवगति नहि।

छओ गोट संतान जखन स्कूल जयबाक योग्य भेलनि, तँ किताब लेल पाइक कोन कथा, जे भातक हंडी दुनू साँझ चूल्हि पर चढ़तनि, ताहि लेल चाउर नहि। नोकरी नहि, ठीकेदारी नहि, खेती नहि। आमदनी नहि।

ओही बीच हम पत्नीक इलाज लेल दरभंगा जाइ, तँ हुनके परिवार मे बिलमि जाइ। ओही भोजन-संकट मे हमरो सभ दू बेर भोजन क' ली। मुदा, दुनू परानी एहेन संकटक अभ्यस्त। कखनो ई भाव नहि आबए देथि, जे ओ बहुत अभावग्रस्त छथि।

ओ हमरा उपन्यास लिखबा लेल प्रेरित कएलनि, हम एक उपन्यास लिखि हुनका लग राखि देल।

यात्री सेहो हुनक डेरा पर विश्राम करबा लेल जाथि। यात्री केँ ओ हमर उपन्यासक पाण्डुलिपि देखए देलथिन। यात्री विचार देलनि, हमरा कहबा लेल जे हम ओकर हिंदी अनुवाद क' दी आ हिंदी मे छपबा लेल दए दी।

बाद मे हमरा यात्री जी सँ भेंट भेल। ओ हमरा प्रेरित करथि जे हम इलाहाबाद जाइ, ओहि ठाम छोट-छीन नोकरी धए ली। हिंदी मे काज करी। यात्रीजी चाहथि जे हमर दृष्टि आ अनुभवक विकास आ विस्तार होअए। ओहि समय प्रयाग उत्तर भारतक साहित्यिक राजधानी छल, प्रयाग एक प्रकारेँ लेखक सभक अध्ययन आ निर्माण लेल एक जरूरी आ महत्त्वपूर्ण जगह छल।

मुदा, से नहि होएबाक छल। ने हम अपन छोट नोकरी छोड़बाक कल्पना करैत छलहुँ, आ ने मैथिली छोड़बाक कोनो कारण बुझाइत छल। तँ हम ओहि महान कविक कोनो विचार आ प्रस्ताव लेल अपना केँ बदलि नहि सकलहुँ।

हमर एक गोट उपन्यास पटनाक प्रेस मे छपैत छल। सोमदेवक प्रबन्ध मे। ओहि बीच कवि रामकृष्ण झा 'किसुन' पटना अएलाह। प्राय: पूरक परीक्षाक परीक्षक नियुक्त भेल रहथि। ओ कहलनि, हम अहाँ केँ (अर्थात् हमरा) कहए आएल छी, अहाँ सोमदेवक संग नहि रहू, डेरा फुटा लिअ'। हम सभ सुनलहुँ। अहाँ हिनका संग छी, सुपौल मे हमसभ चिन्तित भेलहुँ।

फेर एक दिन किसुनजी हमरा गांधी मैदानक निकट एक सिनेमा हाल लए गेलाह। मुदा, 'शो'क टिकट नहि भेटलनि। तँ काफी हाउस लए गेलाह। ओ हमरा वी. शान्तारामक फिल्म 'बूँद जो बन गई मोती' देखाबए चाहैत छलाह। ओ सोमदेव केँ कहलथिन, अहाँ जीवकान्तजी केँ फिल्म दरभंगा मे देखा देबनि। सोमदेव तकर पालन कएलनि। किछु दिनक बाद ई फिल्म दरभंगाक एक टाकिज मे लागल। सोमदेव खजौली जा हमरा संग कएलनि। हम आ सोमदेवजी तथा हुनक परिवार दरभंगा जा ओ फिल्म देखल।

कवि-सम्मेलन होइत छलै। जाइत रही। पुरना ढंग, नवका ढंग, सभ ढंगक कविता पढ़ल जाइ। कवि सम्मेलनक मंच पर पाँच-छओ घंटा बैसब स्वास्थ्य लेल हानिकर छल। मानसिक रूप सँ थकाबए वला होइत छल। लोक नाच देखए आबए। कविता बला पाठक नहि रहैत छल अथवा कम रहैत छल।

पटना मे इमरजेंसी मे आ तकर पछाति भारतीय नृत्य कला-मंदिर मे किछु काव्य-पाठ कएल। बहुत शानदार कार्यक्रम भेल। बहुत विशेष श्रोता सभ छल। सुनलक आ प्रशंसा कएलक। कविता-पाठ करब नीक लागल।

मुदा, सोमदेव छलाह रसिया। अखाड़ेबाज छलाह। कोनो मंचक भय नहि। कोनो श्रोता-वर्गक उपहासक परवाहि नहि। मंच पर ओ बहुत पैघ भ' जाइत छलाह।

पचासो तरहक ओ प्रयोग कएलनि जे मंचक आगाँ बैसल लोक संच-मंच भ' कविता सुनए। सभ प्रकारक लोकगीत गाबए अबैत छलनि। हुनका कोनो मंच उखाड़ि नहि सकैत छल।

लहेरियासराय मे पत्नीक इलाज लेल गेल रही। हम सोमदेवजीक संग दवाइ लेबए टावर पर एक दोकान मे पैसलहुँ। दोकानदार कैँ दवाइक पुर्जा बढ़ा देल। सोमदेव सड़के पर टहलैत रहलाह। दवाइक दाम जोड़लाक बाद दोकानदार हमरा कान मे कहैत छथि—अहाँ नीक लोक छी। मुदा, अहाँक संगी जे छथि, हिनका संग अहाँ किएक छी? हम कहल—ओ हमर मित्र छथि। दोकानदार कहलनि—अहाँक मित्र नीक लोक नहि छथि, एक नम्बर 'स्मगलर' छथि।

एक बेर कुलानन्दजीक डेरा पर गेलहुँ। ओ भागीरथी लेन मे एक सस्त आवास मे रहथि। बाहर दिस सँ एक कोठली रहैक। गेस्ट रूम जकाँ बीच मे खाली जगह जे आँगन जकाँ लगैत छलैक। तकर बाद दू टा बेड रूम, भनसाघर इत्यादि।

ओ कहलनि, ओहि डेराक बाहर वला कोठली मे यात्रीजी मध्याह्न बितबैत छलाह। एक दिन नहि, एक मास नहि, अनगिनत मास।

यात्रीजी एकसर ओहि कोठली मे रहैत छलाह। बन्न क' देला पर ओ कोठली बौद्ध भिक्षु वला शून्य गुफा भ' जाइत छलैक। ध्यान करबा लेल अत्यन्त उपयुक्त।

कुलानन्दजी कहलनि जे यात्रीजी जएबा काल एक घड़ी (हाथ घड़ी) आ एक ट्रांजिस्टर रेडिओ दए गेलाह। ई दुनू वस्तु हुनका अलभ्य लाभ जकाँ बुझाइत छलनि। जखन यात्रीजी पटना मे रहथि, तखन लिखए-पढ़ए लेल एकान्त चाहथि। बौद्ध भिक्षु वला जीवन भोगि क' छोड़ि आएल रहथि।

घड़ी राखथि, गुफा मे रहैत, बाहर सड़क पर की गतिविधि रहल होएतैक, से जनबा लेल। बन्न-निमुन्न घर कालक हलचलक सूचना नहि दैत अछि। छोट-सन घड़ी से काज करैत छल। ट्रांजिस्टर रेडिओ मे ओ बी.बी.सी.क उर्दू-हिंदी समाचार सूनथि। उर्दू सूनब, की बांग्ला सूनब हुनका शब्दक विविधता सँ भेंट कराबनि।

यात्रीजी वला ई दुनू सनेस ओ हमरा सभ कैँ नहि देखओलनि। यात्रीजी विदा होथि, तँ खाली हाथ। गरदनि मे झुलैत रहनि एक टा बस्ता-सन झोरा जाहि मे एक टा पोथी रहनि, जकरा सुविधानुसार उनटाबथि।

झोरा मे दोसर वस्तु रहैत छलनि, एक टा कूट वला नोटबुक। जाहि मे आवश्यकतानुसार किछु टीपथि। तरंग अबनि, तँ कविता लिखथि। कलम आ पोस्टकार्ड

(सादा) सन किछु आरो वस्तु। लटकन वला झोरा कखनो भारी नहि रहनि।

पटना हम जाइ। कविता पढ़बा लेल जाइ। चेतना समिति विद्यापति पर्व अनेक बर्ख सँ करैत आबि रहल अछि। ताहि मे निमंत्रण-पत्र जाए, तँ पटना चल जाइ। खजौली सँ अथवा डेओढ़ सँ पटना बहुत दूर छल। पहलेजाघाट जा क' जहाज पकड़ी आ महेन्द्रू घाट उतरी। फेर मोकामा वला पुल भेल। पुल कैँ कखनो बस सँ, कखनो ट्रेन सँ पार करी। मोकामा वला रस्ता घुमान छल। फेर हाजीपुर वला पुल भेल। यात्रा मुदा समय-खाऊ आ असुविधा-भोगू छल। तथापि जाइ। अपन बात कहबा लेल जाइ।

शुरू-शुरू मे पटना जाइ, तँ जंक्शनक निकट कोनो होटल मे रहि जाइ। ओहि बीच मिथिला मिहिर पटनाक आ पटना यात्राक पैघ आकर्षण छल। दरभंगा रेडिओ स्टेशन बाद मे फूजल। मैथिलीक साहित्यिक कार्यक्रम पटना रेडिओ स्टेशन सँ प्रसारित होइत छल। रेडिओ पर चेक दैत छल। देहात मे बैंकक शाखा नहि रहने हमरा सभ एक दिन पटने अटकि रिजर्भ बैंकक काउंटर पर चेक जमा करी आ नया नोट लए क' आबी। मिथिला मिहिर जाइ, ओतए सँ उठि क' कोनो होटल मे आबी, जलखै आ चाह होइक, रेडिओ वला पाइ होटल मे देला पर मात्सर्य नहि होइक।

शुरू-शुरू मे चेतना समितिक कार्यक्रम क' लोक अपन-अपन घर घुरि आबए। प्रभास कुमार चौधरी पटना मे नोकरी मे रहथि, तँ ओ एक दिन कोनो कार्यक्रम राखथि। लेखक-सम्मेलन भ' जाए। बहस होइ, भाषण होइ, अंत मे फूड पैकेट देल जाइ।

मोहन भारद्वाज पिताक डेरा पर रहैत छलाह। किछु, इष्ट-मित्र कैँ रोकि क' ओ एक साँझ विशेष भोजन कराबथि।

कुलानन्दजी चेतना समितिक गोष्ठी मे नहि जाथि। दर्शक रूप मे सक्रिय रहथि। सहभागी आ प्रतिभागीक रूप मे ओ सम्मिलित नहि होथि। मोहन भारद्वाजक आवास पर जे भोज होइक, ताहि मे आबथि। सभक सोझे भाँगक गोला चिबा-चिबा क' गीड़ि जाथि। बेलक आकारक गोला हुनक तृप्ति लेल आनल जाइ, जकरा ओ एकसरे निंघटा देथि।

ओहू ठाम भोजनक पाँत मे ओ बैसथि, मुदा गप्प-शप मे भाग नहि लेथि। गप्प सुनथि, आँखि मुनने सुनथि। हमसभ बाजी, कुलानन्दजी सूति रहलाह, तँ आँखि ताकि क' बाजि देथि—हम सभ टा सुनैत छी।

ओ प्रयत्नपूर्वक ओहि गप्प-सराका मे योग नहि देथि। हमरो सभक गप्पक कोनो एजेंडा नहि होइत छल। भेंट-घाँट भेल। कुशल-समाचार भेल। सभ कैँ प्रोत्साहित करी जे किताब छपए। किताब छपाएब कठिन रहैक। छोट-छोट नोकरी

मे लोक रहए। भोजन-वस्त्रक ओरिआने कठिन रहै, ताहि मे पोथी लेल जमा-पूजी कतए सँ बहार कएल जाइत।

किरणजी-सन प्रतिष्ठित लेखक कहथि—हम पोथी नहि छापब। किऐ छापब? जकरा काज हेतै, से छपाओत। पोथी छापब लेखकक नहि, समाजक काज थिकै। तेँ हुनक अधिकांश वस्तु मरणोत्तर हुनक शिष्य मंडली छपलक।

कुलानन्दजी औपचारिक सभा-सम्मेलन मे भाग नहि लेथि। ओ संस्था सभक स्तरीयता-स्तरहीनताक कारण अपन विरोध दर्ज कराबथि। विचारार्थ जे विषयो रहैक से संपन्न वर्गक मनोविनोद जकाँ लगै। समाज मे परिवर्तन होइ, समाजवाद अनबा लेल रक्त-क्रान्ति होइ, अमरलत्ती सभ केँ छाँटल जाए, गरीब बोनिहारक मान-सम्मान भेटै, ताहि दिशा मे बात नहि। जँ से बात नहि होइ, तँ ओ फुसियाही विमर्श सभ मे किएक पड़ितथि।

कविता सुनएबाक इच्छा होइनि, तँ किछु विशेष मित्र सभ केँ अपन आवास पर आमंत्रित करथि, भात-माछ खोआबथि, रमकी आबि जाइनि, तँ दू-चारि गोट कविता डाइरी सँ पढ़ि क' सुना देथि।

किछु वर्ष लगातार एना भेल जे पटना अएबाक समय आग्रह क' लिखि पठाबथि जे हम हुनके आवास पर रहि संस्था सभक कार्यक्रम मे भाग ली।

भोजन बहुत आवेश सँ कराबथि। अनेक बेर एहेन भेल जे माछ ओ अपना हाथेँ रान्हथि, प्रेम सँ खोआबथि आ भोजनक उत्कृष्ट प्रस्तुति सुनए चाहथि।

एतबे नहि, जाधरि पटना मे रहए पड़ए, ओ नोकरी पर अनुपस्थित भ' जाथि। चौबीसो घंटा संग देबा लेल हाजिर। पटना मे कतहु जाइ, तँ संग रहथि, रिक्शाक पाइ ओ अपन जेबी सँ चुकाबथि।

व्यक्तिगत रूप सँ हम लज्जित होइ। परिवार मे संपन्नता नहि छलनि। भोजन वस्त्र मे सेहो कटौती करए पड़नि। पाँच-सात गोट संतान रहनि। तकर पढ़ाइ लेल कोनो बजट नहि रहनि। तखन ओ अपन मित्रक पाछाँ बेहाल रहथि, आवश्यक-अनावश्यक खर्च ओ अपना दिस सँ करथि।

सभ सँ दुखी करए वला बात ई छल जे ओ मासक मास आफिस सँ अनुपस्थित रहि अपन एकमात्र आयक साधन केँ नष्ट करथि।

हठी रहथि, सभ क्यो हुनका आफिस जएबा लेल कहैत रहियनु, सुनैत रहथि। सभ एक दिस। ओ एक दिस। नहि जएबाक रहनि, तँ ओ आफिस नहिए जाथि।

मैथिली मे हमरा सभक जे लेखन रहए तकर केन्द्र मे निम्न मध्यमवर्गीय समाजक सुख-दुख छल। बेसी भाषा मे, बेसी लेखन मे, गरीब बाबू सभक संकटक खेरहा अबैत छल।

बोनिहारक कथा साहित्यक केन्द्र मे बहुत बाद मे आएल। मैथिली मे बोनिहारक हेतु चिन्ता बहुतो लेखक नहि कएलनि, तथापि ओ मुख्यधाराक शीर्ष स्थानीय लेखक परिगणित होइत रहलाह।

मैथिली कथा पर विचार करबा लेल ओ तैयार भेलाह, तँ ओ स्वतंत्रता सँ पूर्वक कथा आ कथाकार पर एक विशेष टिप्पणी कएलनि। समकालीन कथा केँ ओ विचारबाक योग्य नहि बुझलनि। तकर कारण ओहि कथा मे बोनिहारक शोषण, बोनिहारक संघटित होएब, आ सामाजिक परिवर्तन क' नव आर्थिक संरचना बनएबाक, कोनो विमर्श नहि छल।

पटना मे प्रान्तीय सरकारक मुख्यालय छैक। हाइकोर्ट, अस्पताल आ विश्वविद्यालय छैक। पटना तँ जाइए पड़ैत छलैक। मैथिली लेखक केँ तीन ठाम सँ नोंत अबैक। मिथिला मिहिर आबए लेल नहि, कथा अंक लेल कथा पठएबा लेल, आमंत्रणपत्र पठबैक। आकाशवाणी चिट्ठी दैक वार्ता प्रसारण लेल। चेतना समिति पत्र दैक विद्यापति पर्व लेल लोकक जुटान हेतु।

प्रभासकुमार चौधरीक आफिस रहनि मिथिला मिहिर आ आकाशवाणीक मध्य मे। नोकरी एहेन रहनि जाहि आफिस सँ सटल अपन कन्फरेंस हाल रहैक, गेस्ट हाउस रहैक। चपरासी सभ रहैक, अफसर सभक कार रहैक।

पटना जे अनदिनो जाए, आ समय रहैक, तँ आकाशवाणी आ मिथिला मिहिर जा क' अपरिचय मे परिचय ताकए। हरिमोहन झा, आ प्रो. आनन्द मिश्रक आवास, तहिना सुधांशु 'शेखर' चौधरीक आवास जएबाक लोक मोन बनाबए।

प्रभास एहि मे एक विशेष लोक छलाह। हुनका लग पाकेट मनी अधिक रहनि, पटना आबए वला साहित्यकार केँ सम्मान देथि, जलखै आ चाय-पान करेबा मे तृप्तिक अनुभव करथि। प्रतिवर्ष एक-दू गोट लेखक-सम्मेलन आ कथाकार सम्मेलन करबा मे ओ सफल भ' जाथि, ताहि मे उदारतापूर्वक धन व्यय करथि। चेतना समितिक आयोजनक बाद अगिला दिन ओ कार्यक्रम राखि देथि आ तकर रस लेथि।

लेखक सभ मे निकटता अबैक। सभ केँ विचार प्रकट करबाक अवसर भेटैक। लेखक सम्मानित भेल अनुभव करए। अन्य लोक लेखक केँ बजैत, धखाइत, गरजैत आ हकमैत देखए। पत्रिका पोथी मे, छापा मे, जकर लिखल शब्द लोक पढ़ए, तकरा सोझाँ-सोझी धड़फड़ाइत आ गड़बड़ाइत लोक सुनए। कोनो विशेष वक्तव्य अबैक, तँ 'पिन ड्रौप साइलेंस' भ' जाइक। कोनो लेखक व्यर्थ शब्द केँ उच्चरित करथि, तँ लोक परस्पर संभाषण मे लागि वक्ता केँ मर्माहत क' देथि।

से चलल आ दस-बीस साल चलल। खूब चलल।

प्रभास मुदा हाथी सभक धार मे उतरब देखथि, पुनः धार सँ उपर अबैत गजराजक चालि देखथि। हाथीक चिग्घाड़ सुनथि। डेराएल हाथीक दुलकी मारैत चलब सेहो देखथि।

ओ मान देथि आ उघाड़ सेहो करथि।

एक टा अद्‌भुत स्मरण-शक्ति रहनि प्रभास कें। पछिला पढ़लहा सभ टा स्मरण रहनि। तकरा ओ ठीक-ठीक उद्‌धृत क' सकथि, आ करथि। एहने दिव्य स्मरण शक्ति एखन नारायण जीक छनि। स्मरण शक्तिक कारणें ई दुनू जन ध्यान आकृष्ट करैत छथि।

मिथिला मिहिरक स्तर नीक रहैक, इंडियन नेशनक पुलिंदा संग बिहारक सभ रेलवे स्टेशन पर पहुँचि जाइक। कलकत्ता, काठमांडू, दिल्ली आ राँची मे समय पर उपलब्ध भ' जाइक।

कथाकार बहुत रहथि। स्तरीय कथाकार थोड़ रहथि। स्तरीयो कथाकारक अधिकांश कथा खलिया 'फायर' (मिसफायर) भ' जाइनि। मिथिला मिहिर कथा छापए, ओकरा पर्याप्त आ श्रेष्ठ कथा कम भेटैक।

तँ उत्कृष्ट कथा कोनो मास आबि जाइक, तँ लेखक कँ 'जश-जश' भ' जाइक। नीक कथाक चर्चा अनेक ठाम होइक आ सालक साल ओकर प्रशंसा सुनल जाइक।

मैथिलीक पाठक निम्नमध्यम वर्गक लोक छल, जे अपन कथा सुनए चाहैत छल। तेहने कथा सालो भरि लिखाइत छल।

स्त्रीक कथा लए क' राजकमल अएलाह। बहुत पढ़ल गेलाह। मध्यवर्गीय पाठक एहि अभिव्यक्ति सँ भयभीत होअए।

जन-बोनिहारक कथा नहि आबए, अयबो करए, तँ ओ अगिलेसुआ बातक चर्चा नहि करए।

इंदिरा गांधीक मृत्युक बाद देश मे अस्थिर राजनैतिक वातावरण भेल। जनवादक हवा मैथिली मे आएल। फैशन जकाँ आएल। माटि मे अपन जगह बना नहि सकल।

बाद मे जनवादी समालोचक सभक मदार्पण भेल। ओ सभ कतोक ठाम सँ उधार-पैंच शब्द आ मोहाविरा अनलनि आ लोक कँ बदलबाक प्रयास कएलनि। आलोचना अलग हकपुत्तरि करैत रहल, आ मैथिली कथा निम्न मध्यमवर्गीय समाजक दुख सँ शुरू भेल आ ताही ठाम ओ सुस्ताए लेल बैसि गेल। अगिलेसुआ लेखन काते-कात रहि गेल, मैथिली साहित्य मे ओकरा उचित 'स्पेस' नहि भेटल।

प्रभास आ आनो कथाकार अपन निम्नमध्यमवर्गीय पाठक लेल लिखैत रहल,

आलोचकक प्रीत्यर्थ ओ बाम-दहिन नहि घुसकल। बोनिहार सभ खेत जोतबा मे लागल छल। ओ अखबारक फोटो सभ देखि सकैत छल, छपलहा शब्द ओकरा लेल व्यर्थ आ अनावश्यक छल। शब्दक जंगल मे पैसबाक अभिलाषा ओकरा मोन मे कदाचित नहि छलैक।

भोज देबाक पाछाँ एक ग्रामीण मानसिकता छैक। परिचित लोक कँ डेरा धरि आनी, मान-सम्मान सँ राखी, ओकरा नीक-निकूत खोआबी। शहर गेलाक बादो लोक देहाती संस्कार नहि छोड़ैए, तकर ई एक प्रमाण थिक। पटना मे प्रभासे एहेन भोज करैत छलाह, से बात नहि। बहुत लोक छलाह। मोहन भारद्वाज, कुलानन्द मिश्र इत्यादि सेहो घैरैत छलाह। पटना मे हम भीमनाथजीक महेन्द्रू डेरा पर, हरिमोहन बाबूक आवास, अशोकक अफसर्स फ्लैट वला डेरा पर भोजन कएने छी, से मोन अछि।

हम कहियो काल हुनक कथाक कोनो अंशक अधलाह चर्चा करी आ मिथिला मिहिरक पाठकीय स्तंभ मे छपबा लेल पठा दिऐक। तकर बाद प्रभास अपन कथाक पक्ष मे तर्क देथि आ ओही पत्रिका मे छपबाबथि। अपन कथाक विरुद्ध कोनो टिप्पणी हुनका बर्दास्त नहि होनि। लोक बूझए दुनू बगड़िया मे बढ़िया खट-संवाद बाझल अछि।

आश्चर्यक बात हमर कोनो कथा पर, ओकर कोनो दोष पर, ओ कहियो टिप्पणी नहि कयलनि, प्रतिघात नहि कएलनि।

एक बेर हरिमोहन बाबूक डेरा पर रही। ओ हमरा उपराग देलनि। कहलनि, हमरो सभक समय समकालीन लेखक सभ मे मतान्तर होइक, मुदा कलहक रूप नहि लैत छलैक। ओ कहलनि जे हुनक आ समकालीन अच्युतानन्द दत्तक बीच विवाद होनि, मुदा, से दीर्घकालिक बतकट्टी नहि बनैक। प्रो. झा कहलनि जे हमरो लोकनि कलह धरि, कटुता धरि, अपन टिप्पणी कँ नहि नमराबी। हुनका जे अधलाह लागल रहनि, ताहि पर ओ बहुत व्यावहारिक आ आवश्यक परामर्श देने छलाह।

सरिसब पाही मे मैथिली साहित्य परिषदक एक अधिवेशन भेल। बहुत दिन पर ई संस्था जागल रहए। फेर ओ दीर्घ निद्रा मे चल गेल।

कवि-सम्मेलन मे हम आमंत्रित रही। नव रही। किछुए कविता पत्रिका सभ मे प्रकाशित भेल छल।

कवितावला सत्रक अध्यक्षता कएलनि कविशेखर बदरीनाथ झा। बहुत जीर्ण-शीर्ण काया छलनि। प्रायः अंतिम सार्वजनिक सक्रियता छलनि।

ई सम्मेलन एहू द्वारे मोन अछि जे एहि मे लेखक सभ केँ असौजनी मानि जे तरकारी परसल गेल, ताहि मे नोन नहि पड़ल छल। नोन मेरचाइ फूट सँ परसल गेल छल।

अर्धराति मे भोजनोपरान्त भिन्न-भिन्न कोठली मे दरी ओछा क' लोक पड़ि रहल। छोट-छोट मोमबत्ती जरा क' छोड़ल रहैक। लोक सूतत, की मोमबत्ती मिझा जइतै।

संयोग सँ जाहि कोठली मे हम स्थान लेने रही, ताहि मे मणिपद्म रहथि। मोमबत्ती लग जा क' ओ किछु पढ़ैत रहथि। हुनका मधुपजी टोकलनि—मणिपद्मजी, एखन की पढ़ै छी, भोर मे पढ़ब।

मणिपद्म कहल—आखर मे जीवकान्तक कथा पर विवाद ठाढ़ भेल अछि। पक्ष-विपक्ष मे अनेक पत्र अछि, से रहल नहि जाइए। सभ टा पढ़ि जाए चाहैत छी।

आखर मे हमर कथा छपल रहए 'टिल्हाक धुकधुकी'। बतहाक पत्नी बतहा केँ कोठली मे बन्न क' जिजीर चढ़ा दैत छै, जे राति मे बतहा ओकरा (अर्थात् पत्नी केँ) बलात् मैथुन नहि करए आबि जाइक। ओकर अएबाक आ बलात् मैथुन करबाक संभावनाक प्रतीकात्मक चित्रण रहैक। कोनो पाठक केँ एहि कथा पर आन भाषाक कोनो कथाक छाह भेटि गेल रहनि। से ओ पत्र छपबओने रहथि। मणिपद्म एहि कथाक मौलिकताक पक्ष मे पत्र लिखैत एक पैघ लेख लिखि पठओने छलाह जे आखरक नव अंक मे प्रकाशित भेल छल आ तकरे मणिपद्म ताहि समय देखि रहल छलाह।

मधुपजी केँ नहि रहि भेलनि। बजलाह—जीवकान्तो तँ एही कोठली मे पड़ल छथि।

मधुपजी सँ हम पूर्व-परिचित रही। मणिपद्म सँ दरस-परस नहि रहए, मुदा पत्राचार सँ हमरा लोकनि आत्मीय भ' गेल रही।

हम चाहैत रही सूतए। थोड़ेक लजकोटर रही। दस-पन्द्रह गोटे ओहि कोठली मे जगह दफानने रहए, ताहि मे अधिकांश लेल हम अल्प परिचित रही। तँ अनठा क' ई संवाद सुनैत रही।

मणिपद्म हहा-फुहा क' हाक देलनि—कहाँ छी बन्धु।

पतरका ओढ़ना देह पर सँ टारि हम उठलहुँ। मणिपद्म हहा क' बढ़लाह आ हमरा अपना गरा मे साटि लेलनि, भुजपाश मे हमरा धए लेलनि। हमहूँ बाँहि बढ़ा क' हुनक शरीर केँ बान्हि लेल।

मणिपद्मे टा एहेन मित्र छलाह जे भेंट भेला पर गरा सँ गरा मिला क' आलिंगन करैत छलाह। फेर दोसर क्यो नहि मोन अछि, गाढ़ालिंगन देने होअए। ई हुनक

महानता छल। हमरा सँ मात्र अठारह बर्ख ओ जेठ आ लेखनो मे करीब बीस बर्ख जेठ।

एहन निश्छल आ अहैतुक स्नेहक वर्णन नहि होअए। न भूतो, न भविष्यति।

हमर ओ विलक्षण पाठक छलाह, चिट्ठी लिखि प्रोत्साहित करथि। हमहू हुनक समर्पित पाठक रही। हुनक रचना ताकि-ताकि क' पढ़ी।

फेर एक कवि-गोष्ठी। तुमौल मे विद्यापति पर्व। मनीगाछी मे एके गोट ताँगा, ताहि पर महथौरक एक पुतहु जइतथि। किरणजी पूछए लगलथिन, तँ कनियाँ हमरा आ किरणजी केँ महथौर धरि ओहि टमटम पर जगह दए देलनि।

आर्द्रा नक्षत्र। गुमकी। सायंकाल कवि-गोष्ठी भेल। गामक कात मे बड़का पोखरिक ऊँच मोहार पर एक प्राथमिक-माध्यमिक विद्यालयक एक जर्जर भवन। राति मे आर्द्रा नक्षत्र भरि राति झहरैत रहल। चार पर टाली खपड़ा। बढ़ियाँ चुबैत रहैक। जागि क' भोर कएल।

भोर भेला पर खेत डूबल। बाट पर पानि बहैत। लोक कदबा मे हर-बड़द लए गेल। मधुपजी बहेड़ाक बाट धयलनि। धोती उछेहि क' ठेहुनक उपर कएलनि आ ठेंगा बलेँ पएरेँ विदा भेलाह।

हम, किरणजी आ मणिपद्म पएरेँ मनीगाछीक बाट धएल। किछु बाट कटला पर एक टमटम वला हमरा सभ केँ चढ़ा लेलक।

किरणजी ताहि काल मे दरभंगा मे प्रोफेसर रहथि, दरभंगा मे डेरा कएने रहथि, ओ मनीगाछी मे ट्रेन पकड़लनि आ दरभंगा गेलाह।

हम आ मणिपद्म मनीगाछीक थर्ड क्लास, चारू कात सँ उदाम, वेटिंग रूम मे बेंच पर बैसि गेलहुँ आ गपाष्टक लाधि देल। हमर घोघरडीहा जाए वला रेलगाड़ी आबए आ सीटी मारि क' फूजि जाए। बहेड़ा लेल हुनका रेल सँ सकरी धरि जएबाक रहनि। सकरी जाए वला गाड़ी आबए, सीटी मारए आ निकलि जाए। हमरा सभक बातक ओर-छोर नहि रहए आ तहिना बात नहि ओराए। ओहि दिन हद्द भ' गेल। रतुका जगरना रहए। बर्खा मे निन्न कामहि भेल रहए आ हम दुनू गोटे गप्प करबाक सूर चढ़ाओल, से चढ़ले रहल।

साँझक समय भेलै। मनीगाछी मे गाड़ी सभक क्रौसिंग भेलैक। हमरा लोकनि एक दोसरा केँ धकिया क' गाड़ी पकड़बाओल। ओ पच्छिम गेलाह, आ हम पूब गेलहुँ।

एक बेर ओ एक घटकैती मे खजौली अएलाह। हुनका कन्यादान कर्त्तव्य। एक टा लड़का भजिअओलनि, तकर बाप खजौली राटन (कुसिआर मिलक कुसिआर खरीदक जगह) पर किरानी। लड़काक पिता हमरो अपरिचित नहि। चारि-पाँच दिन

धरि बहुत घूर-धुआँ कएल। कतेक लोक केँ मध्यस्थ बनाओल, तखन गप्प करबा लेल वरक बाप तैयार भेलाह। संयोग रहै, कथा पटि गेलै।

हम छात्रावास मे डेरा रखने। जलखै करबा लेल चौक पर हलुआइक दोकान पर जाइ। भोजन करबा लेल छात्रावासक मेस दिस भागी। बेसी काल गपाष्टक। उठि क' ककरो कहिऐ, चाह मँगा दैह, कखनो उठि क' ककरो पुछिए हाट पर माछ भेटतै...। हम उठबाक चेष्टा करी, तँ मणिपद्म हमर कुर्ताक खूट पकड़ि क' घीचि लेथि, आ बैसा देथि आ बुझाबए लागथि—देखू, हम अहाँक डेरा मे गप्प करबा लेल बैसल छी! बैसू आ गप्प करू। उठब, बहराएब आ भोजन-जलपानक व्यवस्था मे अहाँ फिफिआएब, तँ भोजन नीक-बेजाए जे होएत, गप्प तँ साफ खतम भ' जाएत। बैसल रहू। मेस मे जे सभ लेल बनतै, से अहूँ खाएब, आ हमहूँ खाएब। तँ भल जानी, तँ अनठा क' बैसू। गप्प कामहि नहि होअए, से भेल असली स्वागत-सत्कार। घरबैया कतहु एतबा उट्ठा-बैसी करए। बैसू आ स्वागत करू। हमर स्वागत करबाक हो, तँ सभ काज छोड़ि क' बैसू।

भोर-साँझ संग टहलए जाइ, तँ लगातार गप्प। मणिपद्मेक संग नहि, आनो-आन दू लेखक जखन जतए एक ठाम होइए, तँ भोजन कामहि, रतुका निन्न कामहि। जागल छी, आ गप्प करैत छी। कहए वला केँ होइत छै जे कतेक बाजी। गप्पे ने ओराइत छै। सुनए वला केँ होइत छै, कतेक सुनी। सुनबा सँ अघान नहि होइत छैक।

खजौली मे स्कूलक कात मे एक टा पैघ पोखरि। मोहार सभ विशेष ऊँच। एक कोन पर दाउर राखल। हमरा सभ ओतए हाथ मटियाबी, कुड़ूर आचमन करी, स्नान करी, कपड़ा साफ करी।

घाटक उपर एक टा विशाल पीपर। बारहोमास प्रसन्न। बारहोमास नीरोग। गाछ देखा क' मणिपद्म केँ कहलियनि—बंधु, एहि पीपरक गाछ सँ हमरा डाह अछि। जखन ज्वर भ' जाइए, अथवा आन रोग-कष्ट होइए, तँ देखैत छी जे हमरा बीस टा बीमारी आ पराभव, आ ई गाछ अछि, जे बारहो मास हहाइत पातक संग, नीरोग आ प्रफुल्ल।

ओ कहलनि—अंग्रेजी उपन्यास मे कतहु एहेन प्रसंग आएल छै जतए नायक (पात्र) अपन प्रतिवेश मे जनमल कोनो गाछ सँ ओदाउद करैए।

एक दिन पुछलियनि—कहू, एहि ठाम कम्युनिज्म होएतै? ओ हँसि क' कहलनि—नहि, कथमपि नहि। एहि ठाम समानताक भाव नहि छैक। हम कायथ छी। कायथ मे बीस टा खाढी (हाइरारकी)। हम पैघ, तों छोट। कतहु कथा-कुटमैती लए क' जाएब, तँ कहि देत, अहाँ जाति मे बड़ छोट छी। दरबज्जा पर सँ उठा देत। सोझहि मे कोनो समांग केँ बजा क' कहतै—देख, एहि ठामक माटि काटि

क' फेकि दे...छोट जातिवला कायथ आबि जाइए आ माटि केँ अपवित्र क' दैए। कहू, कोना आबि गेल? कोना साहस भेलै? अनुमति लए लैत, तखन अबैत। ओकरा पानि सँ हम लघियो नहि करबै? से कथा प्रस्ताव लए आबि गेल।

मणिपद्म कहलनि—कन्या वला केँ अनेक गंजन छै। ताहू मे उच्च-निम्न वर्ग लए क' आर संकट छै। हम ऊँच, तँ हम ऊँच। आब एक जाति मे जखन समता आ भ्रातृत्वक भावना नहि छैक, तँ मानव धर्म-संस्कृतिक एहि महासागर मे, एहि देश मे, समानताक भावना केँ के लाओत?

अंतिका, जुलाइ-सितंबर, 2007

अकथ कथा

अग्निपुष्प

ओ दिन संभवत: जीवनक पहिल पलायन छल। ओना अपना केँ परतार' लेल कहल जा सकैए जे आगूक संघर्षक लेल—दू डेग आगू बढ़' लेल ई एक डेग पाछू हटब छल। ओ काल तरूआरि पर चलब छल आ सत्ता-शासनक व्यवहार कसाइ सन छल। दरभंगा मे अपन परिजन-पुरजन—नरेन्द्र, शैवाल... आ संगे रहैत दरभंगा मेडिकल कालेजक छात्र हमर परिवारक अगिला पीढ़ीक सब सँ जेठ सहमना आ सहधर्मी भ' चुकल भातिज विजय केँ छोड़ि जखन हम बिदा भेल छलौं तँ हमरो नञि बूझल छल जे हम अपन अगुआ संगीक संग कत' जा रहल छी। एतबा बूझल छल जे कोनो गाम जा रहल छी। ओ काल ई अनुमति नञि द' रहल छल जे हम बुझि सकी जे मिथिलाक कोन गाम जा रहल छी। दरभंगा सँ चलिक' बस जत' हमरा सभ केँ उतारने छल आकि हम अपन संगीक इशारा पर बस सँ जत' उतरि गेल रही ओ कोनो छोट-छीन चौक छल।

चाह-पानक दोकान, गुमटी मे स्टेशनरी दोकान, साइकिल मरम्मति करयबला सड़कक कात मे एक टा ठेला आ आसपासक गामक लोकक चहल-पहल छल ओत'। स्मृति मे एखनो ओहिना अइ ओ चाहक दोकान जत' हम अपन एकसरुआ संगी संग बढ़ि गेल छलौं।

दोकान सभक भीड़ सँ दू बाँस आगू हटि क' खूब साफ, चिक्कन-चुनमुन चाहक गुमटी छल, जकरा आगू मे दोकानक दूबगली बाँसक फट्टी बेंचक ऊँचाइ पर बाँसेक खुट्टा पर ठोकल छल। हमर संगी बहुत कम बजैत छलाह। जरूरति भरि। नञि तँ अपन हाव-भाव वा इशारा सँ काज चला लैत छला। ओ दू टा चाहक इशारा केलथिन। जतबे जगह साफ-सुथरा ओतबे साफ गिलास मे पानि आ चाह हमरा सभ केँ चौदह-पंद्रह बरखक एक टा श्याम वर्ण किशोर द' गेल। संभवत: हमर संगी अइ दोकान पर बेसी काल अबैत छला आ सूर्यास्त होयबाक प्रतीक्षा मे एतहि

बैसल रहैत छला। हम चाह पिलाक बाद तमाकू खाक' संगीक अनुमति सँ चौक पर कने घूम'-फिर' लागल रही। ईहो जिज्ञासा छल जे हम कोन जगह पर छी। अही क्रम मे बूझल जे ई हिसार कोठी कहबै-ए। एहिठाम आजादीक बादो अंग्रेज सभक कोठी छलै। एकाध पैघ हाता आ ओहि मे ढहल-ढनमनायल मकान आ झाड़-झंखाड़ सेहो देखलियै तँ बूझि पड़ल जे एहिठाम कोनो कारखाना रहल हेतै। संभवत: निलहा साहिबक कोठी आकि कारखाना रहल हेतै। मुनहारि साँझ हेबा मे एखनो आधा सँ पौन घंटा देरी छलै। संभवत: हमर संगी ओहि समयक प्रतीक्षा क' रहल छला, जखन कि लोक सभ एहि चौक पर सँ अपन-अपन घर घुमै छल आ के केम्हर गेल तकर भान ककरो नञि रहै।

एहि कालक, एहि भूमिगत जीवन-शैलीक ईहो एक टा अनुशासन छलै—मुनहारि साँझ भेलाक बाद अपन आधार गाम दिस बिदा होयब आ पौ फटै सँ पहिने गाम छोड़ि देब। ओहि समय मे 'आधार गाम' कतौ-कतौ होइत छलै। हम सभ जिम्हर जा रहल छलौं ओ बोनिहार सभक टोल छलै। गामक एकांत मे पचीस-तीस घरक टोल। तँ एकरा आधार टोल कहब उचित हैत। अपन आधार टोलक संगहि अपनो केँ सुरक्षित रखबाक लेल संभवत: ईहो अनुशासनक अंगे छल जे गंतव्य धरि जेबाक लेल मुख्य पथ केँ छोड़ि एकपेड़िया आ अनजान बाट धरी। अनजान बाट पर बढ़ैत हम एहि जीवनक अनुशासन आस्ते-आस्ते अखियासि रहल छलौं। चौक पर सँ हमहूँ सभ टोल दिस बिदा भ' गेल छलौं। एक टा धनखेती बला एकपेड़िया पर। बरखा-बुन्नीक समय छलै। खेत सभ मे भरि ठेहुन पानि लागल छलै, मुदा इजोरिया उगि गेल छलै। तँ पानि मे डूबल एकपेड़ियाक आभास पानि सँ एक आँगुर उपर उठल धानक सीस सभ करा रहल छल। एहिना आधा कोस चललाक बाद हम सभ एक टा आड़ि पर होइत चौड़गर बाट पर आबि गेल छलौं आ फेर आधा कोसक बाद छोट-छोट खोपड़ी सन घर केँ पार क' कनेक पैघ दूचारी बला घर मे आबि गेल छलौं। ओहि घर मे लालटेनक मद्धिम इजोत मे डोरीबला अंडरवियर पहिरने आ अंडरवियर मे कारी मोटगर फ्रेमक चश्मा खोसने तीस-पैंतीस बयसक व्यक्ति आह्लादित होइत हमर सभक स्वागत कयलनि। हुनका सँ भेंट भेला पर कनिये कालक बाद हमरा ई आभास भ' गेल छल जे ई एहि टोल परक खेत-मजदूर नञि छथि। हमरे सभ सन बाहर सँ आयल बौद्धिक छथि। थोड़ेक कालक बाद अंडरवियर मे खोंसल चश्मा निकालि ओ पहिर लेने छलाह।

प्रशांत व्यक्तित्व—संघर्षक अइ अशांत टोल पर। कनेक काल हमरा लागल जे साइत राजकमल चौधरी हमर सोझाँ मे छथि। राजकमल चौधरी केँ हम देखने नञि

छलियनि, मुदा हुनक फोटो तँ देखने छियनि—मोटका कारी फ्रेमक चश्मा वला फोटो आ सुनने छियनि हुनक कद-काठीक मादे। ओ राजकमल नञि छला। एहि इलाका मे मजदूर-किसान कैँ संघर्ष कर' लेल एकजुट कर' बला एक टा प्रखर बुद्धिजीवी छला। हुनक की नाम छलनि, कोन गामक छला से तखन नञि बुझि सकलौं, मुदा ओ मैथिली बजैत छला तँ बुझि पड़ल जे ओहो लगपासक कोनो गामक छथि।

किओ कटोरी मे किओ शीशाक गिलास मे, तँ कियो स्टीलक गिलास मे चाह पिलौं। आइ जइ घर मे हमर सभक सेल्टर छल ओहि घरक यैह तँ स्थिति छलै—चारि टा गिलास नञि। चाह पिलाक बाद हमरा बीड़ी पिबाक इच्छा छल, मुदा कहल गेल जे राति मे बीड़ी नञि पील जा सकै-ए तँ तमाकू खाउ। दू-तीन सेल्टर बदलैत अइ टोल पर हम बुझि गेलौं जे राति मे बीड़ी किएक नइँ पील जाइ छै।

ईहो हमरा लेल एक टा अनुशासनक पाठ छल। राति मे बीड़ी पिबा पर शत्रु पक्ष दूरे सँ बूझि जाइत छलै जे एहिठाम लोक गोलियायल अइ। किओ संगी तमाकू बना रहल छला कि मुख्य सड़क पर जीपक हेडलाइटक इजोत देखैत देरी सभ गोटे साकांक्ष भ' गेल छला आ ओत' सँ एम्हर-ओम्हर छिड़िया गेल छला। किछु दूर आगाँ जीप कैँ चलि गेलाक बाद फेर सभ जुमि गेल छला। पुलिस जीपक आशंका छल, मुदा हमरा लेल जीवनक नव-नव अनुभव अनुशासन।

ओइ टोलक लेल हम तीनू गोटे बेछप छलौं। अपन आचरण आ वेश-भूषा मे कतबो डी-क्लास भेलाक बादो बेछप। हम तँ सहजे नव छलौं। कत्तौ सँ डी-क्लास नञि भेल छलौं। साफ-धोती आ चुननदार कुर्ता। अपन मध्यवर्गीय आचरण, संस्कृति आ संस्कार सँ मिसियो भरि अलग नञि भ' सकल छलौं। जँ कनेको अपना कैँ बदलि लेने रहितौं, तँ सोलह-सतरहक ओ लड़की किएक सदिखन आँखिक सोझाँ नचैत रहैत, जे हमर झोड़ा एक टा छिट्टा मे राखि आ ओकरा उपर पुआर राखि अपना पाछाँ-पाछाँ थोड़े दूरी बना क' अनुसरण करबाक इशारा कयने छल? पौ फटै सँ पहिने। आइ ओकरे घर मे हमर सेल्टर छल, काल्हि पौ फटै सँ पहिने धरि। ओकरा सँ कोनो गप्प-सप्प नञि भेल छल। देखा-देखी दू-तीन बेर भेल छल। ओकरा घर मे आयल तीन-चारि टा संगी-साथी सभक संग भेल छल। तँ ओकरा सँ एतेक जल्दी कोनो वैचारिक लगाव भ' गेल छल, ई कहब निट्ठाह फूसि हैत। हँ, हमर झोड़ा कैँ जेना ओ पुआर सँ झाँपि क' ल' गेल छल तइ सँ हम ओकर बुद्धि-विवेक सँ अवश्य प्रभावित भेल छलौं, जे शारीरिक आकर्षण सँ होइत यौनिक लिप्सा मे बदलि गेल छल। तँ मात्र ओइ टोल पर गेला सँ अपना कैँ डी-क्लास मानि ली तँ ईहो बड़ पैघ फूसि हैत। ओइ टोल पर दू-तीन दिन आरो हम रहलौं। हमर सेल्टर बदलैत

रहल, मुदा हम ओकरा बिसरि नञि सकलौं।

दरभंगा सँ जाहि संगीक संग अइ टोल पर आयल छलौं, हुनके संग हमरा आइ साँझ मे दोसर गामक एहने टोल पर जेबाक छल। ई बात हम तखने बुझि सकलियै जखन दिन मे खेनाइ खाइत छलौं। सुरुज डूब' बला छलै। टोलक सभ लोक हमरा सभ कैँ जाइत देख' लागल। कोनटा लग ठाढ़ि जनी-जाति सेहो हमरा सभ कैँ एना देखि रहल छलि जेना कि आब फेर नञि देखि सकतीह। ओही जनी-जातिक बीच ठाढ़ि छलि ओहो युवती जे हमर झोड़ा पुआर तर झाँपि क' अनने छल। सुरुज ओकरे मुँहठान पर डूबि रहल छलै आ ओ साइत अइ आशंका मे डूबल छल जे कतौ ईहो ने शहीद भ' जाय। हमरा दुनू संगीक आगू-आगू कान्ह पर कुड़हरि रखने एक गोटे चलि जा रहल छल आ पाछू चारि-पाँच गोटे। राजकमलक चश्माक फ्रेमबला हमर संगी चश्मा लगा हमरा सभ कैँ एकपेड़िया पर जाइत बड़ी काल धरि देखैत रहला।

दू कोस सँ बेसी अज्ञात बाट पर चललाक बाद एहने कोनो गामक टोल पर हम सभ पहुँचि गेल छलौं। कच्ची सड़क सँ कने हटि क' जइ घर मे हम सभ बिलमलौं से चौबटिया सन छल। ई टोल अशांत नञि छल। अही टोल पर एखन हमरा रह'क छल आ अइ टोल कैँ संघर्षक लेल तैयार ओ आधार क्षेत्रक विस्तार करब छल। घरक बाहर माटिक एक टा छोटछीन मुदा कने ऊँच चबूतरा आ ओकर पाँजर मे सटल एक टा झमटगर गाछ छल। गाछ तरक ओ चबूतरा हमरा बड़ प्रिय लागल छल। ओही चबूतरा पर हम सभ राति मे एहि टोल पर काज करबाक योजना बनौने छलौं आ एत' सेल्टर बढ़ेबा पर गप्प कयने छलौं। भोरे हमरा संग आयल संगी कैँ शहर चलि जेबाक छलनि आ हमरा अही टोल पर रहि जेबाक छल। हमर साफ धोती-कुर्ता पहिरि ओ शहरक बाट ध' लेलनि आ हमरा संग रहि गेला अधवयसू हमर ओ संगी जिनका घर मे हमर सेल्टर छल आ हुनक कमासुत पत्नी आ हमर झोड़ा। झोड़ा मे एक खंड धोती, गमछा, एक टा पोथी आ आत्मसुरक्षाक लेल एक टा तरछेबा हाँसू। हमर ई नवका अधवयसू संगी बेसीकाल घरे पर रहैत छलाह। राजनैतिक-वैचारिक रूप सँ सेहो ओ परिपक्व नञि छलाह। हमरा लेल आब आधार टोल सिमटि क' आधार घर भ' गेल छल। दू-तीन दिन एहि घर मे रहलाक बाद हमरा बुझि पड़ल जे हमर अधवयसू संगी हमर पार्टीक समर्थक मात्र छथि, सक्रिय नञि। सक्रिय रहितथि तँ कम-सँ-कम एक्को टा आधार घरक विस्तार भेल रहैत। हमहूँ अइ दिशा मे कोनो विशेष हस्तक्षेप नञि क' सकल छलौं आ ने अपन आचरण मे कोनो विशेष बदलाव आनि सकल छलौं। राति मे नइँ तँ सांगठनिक

काज करबाक अवसर भेटल ने पढ़ि सकबाक। अइ सेल्टर पर बाहरक घर मे हम रहि रहल छलौं, जइ मे बाँसक फट्टक लागल छल आ फट्टक बोरा सँ झाँपल छल। राति मे अइ घर मे डिबियो नञि बारल जा सकै छल, तँ सबेरे सुति रहै छलौं, मुदा एक दिन अबेर क' निन्न खुजल तँ बँसबिट्टी मे रौद पसरल छल। ई टोल बबुआनक टोल सँ थोड़े दूर छल। बीच मे खेते-खेत, तँ निरापद भ' हम पोखरि दिस चलि गेलौं। ई जानि जे बबुआन टोलक किओ हमरा देखि नञि रहल-ए। हमर ई निश्चिंतता निराधार छल।

कपड़ा ने हमर मैलछौंह छल, मुदा चमड़ा केँ कोना नुका सकै छलौं! दूरे सँ पम्पिंग सेट चलबैत बबुआन टोलक किओ हमरा देखि लेने छल, मुदा अहूँ सँ हम अनभिज्ञ छलौं। ई तँ हम तखन बुझलियै जखन बबुआन टोलक एक गोटे सोझे हमर अधवयसू संगीक आँगन मे ठाढ़ भ' गेल आ कोदारि आ कि कुड़हरिक बहाने जत' हम लेटल चारूक संकलित रचना पढ़ि रहल रही ओतहि जुमि गेल। पुलिसिया रोआब मे ओ हिंदी-ए मे पुछलक—कत' सँ एलौं, कत' जायब आ अइठाम किएक छी। हमर अधवयसू संगी किछु ने बाजि सकल छला। हमहीं अपन बीमारीक बहन्ना अइठाम बिलमि जेबाक आ जयनगर जेबाक बात पर अपन तात्कालिक बचाव केने छलौं। ओइठाम सँ एक किलोमीटर नदी पर ऊँच बान्ह छल आ ओतय सँ सात-आठ किलोमीटर जयनगर रेलवे स्टेशन छल। ई बात हमर वैह अधवयसू संगी तखन कहने छला, जखन हम अइ सेल्टरक बदला ओही टोल पर दोसर सेल्टरक चर्चा कयने छलौं। ओ फेर दोसर बेर अयबाक बात कहि हमरा ई बाट देखा देने छलाह। हमरा अपन अधवयसू संगी पर तखने सँ संदेह होब' लागल छल जखन बबुआन टोलक ओ बीच आँगन मे ठाढ़ भ' गेल छल।

जइ टोल पर सँ हम अइ टोल पर आयल छलौं सेहो बड़ दूर छल आ ओइ टोल पर घूमि जेबाक आ अइ टोल पर आरो बेसी देर रहबाक साहस हम नञि जुटा सकल छलौं। ओही माँझ आँगन मे भात-दालि आ कदिमा फूलक तरुआ खाक' अपन झोड़ा उठा जयनगर दिस बिदा भ' गेल छलौं।

गौरीनाथ! ई कोनो तेहन अशांत टोल नञि छल। तैंतीस-चौंतीस बरखक बादो बुझि पड़ै-ए जे ओइ क्षण हमरा सँ चूक भेल छल। दिनो मे एकाध आन टोलबैया सँ गप्प क' ओइठाम टिकल रहबाक ब्यौंत क' सकै छलौं, मुदा मध्यवर्गीय संस्कार हमरा से नञि कर' देलक। मजदूर वर्गक किओ साइत एना नञि करैत। ओ थोड़ेक आर जूझैत, तँ हम एकरा पलायने मानैत छी।

तरूआरि पर चल' बला ओइ काल मे राजकमलीय फ्रेमक चश्मा बला हमर संगी श्रीनारायण ठाकुर ओही टोल पर शहीद भ' गेल छला जइ टोल पर हम सभ सँ पहिने गेल छलौं आ जाहि टोल पर ओइ युवतीक मुँहठान पर सुरुज केँ डुबैत देखने छलौं। दरभंगा सँ जइ संगी राजेन्द्र साहक संग ओइ टोल पर गेल छलौं, हुनक मृत्यु पटने मे टीबी सन सामान्य बीमारी सँ भ' गेल छलनि।

गौरीनाथ! एहि सँ पहिनहुँ हम अपन शहर दरभंगा मे पलायन केने छलौं। ओइ समयक हमर आदर्श पार्टी सीपीआई कसाइ सन सत्ता पार्टी कांग्रेसक संग 1972 मे चुनावी समझौता क' लेने छल। अइ समझौता सँ पूर्वहि सँ हमर आदर्श डोल' लागल छल—दरभंगाक माधवेश्वर मंदिर समूहक चहरदेवारीक बाहर उज्जर संगमरमरक बनल महाराजा माधवेश्वर सिंह, महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह, रामेश्वर सिंह आदिक मूर्त्ति पर जगजियार लिखल नारा सभ सँ। शहरक पैघ धनपति बलानीक हत्या रामेश्वर सिंहक मूर्त्तिक सोझें मे भेल छल। हम निसतुकी नञि बुझि सकल छलौं जे के अइ मूर्त्ति सभ पर नारा लिखै-ए आ के बलानीक हत्या केलक। ओना नारा लिख' वला क्रांतिकारी संगठन अपन नाम सेहो लिखैत छल।

सीपीआई मे हमर आदर्श नेता छला भोगेन्द्र झा। ओइ आदर्श मुँहें हम ई सुनि अबाक भ' गेल छलौं जे कांग्रेस हमर अंतिम लक्ष्य धरि सहयात्री नञि छी, मुदा थोड़े दूर चल' मे कोन हर्ज। एहि संसदीय बाम सँ तखने मोहभंग भ' गेल छल आ हम 'अजय भवन' सँ बाहर निकलि गेल छलौं सड़क पर । ओना तरौनी सन पंडिताउ गाम मे वर्ग-संघर्षक ओरियान मे हम लागल छलौं आ एत' वर्ग-संशयक बात सुनि रहल छी। ओना ई भिन्न बात जे हम गाम मे कतेक दूर धरि संघर्ष चला सकितौं, किएक तँ हमर पित्ती सभ हुनके ओइठाम भोर-साँझ चाह पिबैत छलाह, जिनका विरुद्ध हमर संघर्ष छल। भोगेन्द्र जीक वर्ग-संशयक अवधारणाक मुखर विरोध क' किछु युवा मित्र केँ अपना संग तँ आनिये सकैत छलौं, मुदा ल' कत' जैतौं से नञि बूझल छल। ओ बाट नञि देखल छल जइ पर सभ केँ नेने जेतौं, तँ ओहूठाम सँ हमर मौन पलायन भेल छल आ तकर बादे हमर पितातुल्य अग्रज नरेन्द्र झा हमरा अपना संग कलकत्ता नेने चलि गेल छला।

गौरीनाथ! सत्ते कहै छियौ, घोर सनातनधर्मी हमर पिता सभ दिन तेरहो अध्याय दुर्गापाठ आ पार्थिव शिवक जलाभिषेक कर'वला महाराजा कामेश्वर सिंहक मृत्यु पर कान' वला हमर पिता तैयो बहुत प्रगतिशील छला। हमरा कहियो ने रोकलथि ने टोकलथि। हुनका सँ बहुत बेसी प्रगतिशील हमर अग्रज छथि जे हमर प्रत्येक पलायन केँ विजय दिस अग्रसर क' दैत छथि। हमर एक डेग पाछू घुसकब केँ दू डेग आगू बढ़ा देब' लेल प्रोत्साहित करैत रहैत छथि—सदिखन।

कलकत्ता तँ एहि सँ पहिने सेहो गेल छलौं। माय केँ संग ल' क'। भैया ओइ समय कालेज स्ट्रीट मे रहैत छला। दरभंगा सन शांत शहरक तुलना मे सदिखन चलैत कोलाहलपूर्ण महानगर कलकत्ता केँ कौतुक सँ देखने छलौं। गाम मे बाइस्कोप मे देखल हावड़ा पुल सँ साक्षात्कार क' रहल छलौं। बड़ नीक लागल छल पहिल यात्रा। कालेज स्ट्रीट सँ एस्प्लैनेड धरि ट्राम जाइत छल। एस्प्लैनेड मे अखबार आ मैगजीनक जतेक टा स्टॉल छलै से साइते कोनो आन महानगर मे हेतै। सभ राज्यक अखबार आ मैगजीन एत' भेटि जाइत छलै। इंडियन नेशन अखबार खरीद हमहूँ डेरा चलि अबैत छलौं। डेरा कि एक कोठलीक असार-पसार आ ओहि मे अटावेश।

कलकत्ता ककरो लेल छोट कहाँ पड़ैत छै। कलकत्ताक हृदय शहीद मीनार मैदान सन आ ओइठाम रहनिहार मैथिलक हृदय सेहो तेहने, चाहे ओ गामक आकि कोनो ठामक, कोनो जातिक होथि। सरिसवपाहीक श्रीकांत मंडल होथि आकि बाबू पालीक रामलोचन ठाकुर आकि परसौनीक वीरेन्द्र मल्लिक। श्रीकांत मंडलक लेक गार्डनक एक्के कोठरीक घर मे एक कात साफ-सुथरा ओछाओन, एक कात खेनाइओ बनि जाइ छल आ नाटकक रिहर्सल सेहो। कलकत्ताक ई विशिष्टता दोसर बेरक यात्रा मे बुझि सकल छलौं। पहिल बेर तँ कॉलेज स्ट्रीट सँ ऐप्लैनेड धरि। बीच मे पड़ै छल कालेज स्ट्रीट, काफी हाउस, पार्क आ कलकत्ता विश्वविद्यालयक बाहरी चहरदेवारी सँ सटल फुटपाथ पर पुरान मुदा महत्त्वपूर्ण पोथीक पैघ बाजार। यूनिवर्सिटी सँ पहिनेक कालेज स्ट्रीट चौराहा ट्राम लाइनक चौराहा सेहो छल। ओही चौराहा लग इलाकाक मस्तान फाटाक्रिस्टोक दुर्गा पूजा बड़ चर्चित छल, जेना पटनाक डाकबंगला चौराहा परक संजीव टोनीक दुर्गा पूजा। ओइ चौराहा पर सँ एक दिस ट्राम हावड़ा स्टेशन जाइत छल तँ दोसर दिस सियालदह स्टेशन। चौराहाक पानक दोकान तक दू-तीन दिन गेलाक बाद बुझि सकलियै जे बामा कात सियालदह स्टेशन छै आ दहिना कात हावड़ा स्टेशन।

हावड़ा पुल केँ एक बेर आर देखबाक इच्छा एक दिन नञि दबा सकलौं आ दहिना कात जाइवला ट्राम सँ हावड़ा पुल धरि चलि गेलौं। हावड़ा पुल पर पैरे चलब आ ओकरा नीचाँ बहैत हुगली नदी केँ देखब बहुत रोमांचित कयने छल। गाम मे झोलिया-गतियाक दोकान पर बाइस्कोप मे देखल ह्वावड़ा पुल पर पैरे चलब स्वप्न केँ यथार्थ मे बदलि जायब सन लगैत छल। भुतिया जेबाक डरे बहुत दूर नञि जाइ छलौं।

भैया ओइ समय ठाकुर एण्ड कंपनी मे छलाह। भोरे निकलै छला ऑफिस तँ मैथिली आंदोलन कैये क' घुमैत छला। साहित्य अकादेमी आ अष्टम अनुसूची

मे मैथिली केँ स्थान जे दिएबाक छलै, 'मिथिला दर्शन', राजकमल आ ललितक पोथी जे निकालबाक छलै। हावड़ा सँ समस्तीपुर धरि जायबला एक्सप्रेस ट्रेनक नामकरण मिथिला एक्सप्रेस जे करेबाक छलै। विद्यापति पर्व आ ओइ मे नाटक जे मंचित हेबाक छलै। भौजी सेहो कलकत्ता विश्वविद्यालय मे नाम लिखा लेने छली आ माय एक टा अधवयसू विधवा बंगाली भव्य महिला शंकरक मायक संग एकालाप मे लागि जाइत छलि। माय मैथिली मे आ शंकरक माय बांग्ला मे बजैत रहैत छलि, मुदा घंटो गप्प-सप्प। संभवत: मोन मिलैतं रहै छै तँ भाषा बाधक नञि होइ छै।

पहिल बेर तँ भैया उत्तरी कलकत्ता मे छला, मुदा ऐ बेर दक्षिणी कलकत्ता मे। दुनू कलकत्ताक संस्कृति आ लोक-वेद मे अंतर। उत्तर मे बेसी मारवाड़ी आ मैथिल तँ दक्षिण मे बंगाली बेसी, लेकिन मैथिलो कम नञि। प्रो. प्रबोध नारायण सिंह दक्षिणे मे लेक गार्डन मे रहैत छला। लेक गार्डन मे मैथिल सभ छथि तकर आभास ओहि दिन भेल जहिया एक साँझ सामाक गीत गबैत जाइत मैथिलानी सभ केँ देखलौं। उत्तर-दक्षिण मे सभ सँ पैघ फरक चाहक स्वाद सँ जानल ज़ा सकैए। उत्तरक चाह मे दूध-चीनी सँ बेसी डस्टक चाह, तँ दक्षिण मे शैली कैफेक लीफक चाहक स्वाद। ई चाह कलकत्ता केँ दू टा संस्कृति मे बाँटि दै छै।

दोसर बेरक एहि यात्रा मे ई डेरा पहिल सँ बहुत बेसी पैघ छल। एक दिस रासबिहारी चौराहा तँ दोसर दिस कालीघाट पार्क एहि डेरा लग छल। छोट पार्क— कालेज स्ट्रीट पार्क सन पैघ आ भव्य नञि। पार्कक बगल मे ट्राम डिपो आ ओकर सोझ मे कलकत्ताक चर्चित कालीघाट मंदिर। ट्राम डिपो सँ मंदिर धरि दूबगली व्यस्त बाजार। ओही बाजार मे कत्तौ-कत्तौ वेश्या सभ सेहो हेती, मुदा से हम कहियो गमि नञि सकलौं। ई तँ कतेको कथा आ विशेषत: राजकमल चौधरीक कथा-संस्मरण सभ सँ जनलौं। पटना रेलवे स्टेशन लग महावीर मंदिरक सोझाँ जेना सह-सह करैत रभसैत वेश्या सभ केँ छओ बजे साँझक बाद देखल जा सकैए, तेना कहियो काली मंदिर बाजार मे नञि देखलियै आकि भ' सकैए जे ताधरि ततेक चेतन नञि भेल होइ। ईहो भ' सकैए जे प्रसिद्ध मंदिरक अगल-बगल रह'वाली वेश्या सभ कनेक बेसिये सचेत होथि। बाजार मे सह-सह नञि, सम्हरल रहैत होथि। ई नञि कहि सकै छी जे चेतन नञि छलौं। कालेज मे प्रवेश करैत देरी सीपीआईक सम्पर्क मे आबि गेल छलौं आ बाद मे पार्टी मेम्बर आ जेना-तेना बी.एस-सी. केलाक बाद पार्टीक होलटाइमरी। गाम मे रहि होलटाइमरी सेहो करैत छलौं आ पितामहक स्थापित कयल राधा-कृष्णक आरती सेहो—पैजामा पहिरने आ जे आक-धतूर भेटल तकर सेवनक बादे। पिता तीन भाइ छला। राधा-कृष्ण चारि मास हमरे पार मे रहैत

छला। ओना हमर पार मे लाल कका पूजा-आरती करैत छला, मुदा हुनका अस्वस्थ भ' गेला पर हमरे कर' पड़ैत छल। एसगरे आरती क' लेलाक बाद घड़ीघंट बजा दैत छलियै, जे दियाद-बाद बुझि जाइथि जे भगवानक आरती भ' गेलनि। ओही आरती सँ टोलक रूटीन जे संचालित छलै। आरती करैत काल कैक राति मोन होइत छल जे राधा-कृष्ण केँ पुरखाक पोखरि मे भसिया दियनि। बाबूक भैयारीक प्रेम मे सभ सँ पैघ बाधक राधा-कृष्णक प्रेम, जे मरौसी आ हालहासिल संपत्तिक बीच बाधक बनि ठाढ़ छल। बाबू दरभंगा मे आ सभ सँ छोट पित्ती पटना मे। गाम मे रह'वला माँझिल पित्तीक लेल राधाकृष्णक पूजा-आरती सब सँ पैघ हथियार छल संपत्ति पर अपन कब्जा बना क' रखबाक लेल। हम ओही राधाकृष्ण केँ भसिया देब' चाहैत छलौं, मुदा तखन धरि 'अगुरवान' नञि पढ़ल छल। अगुरवान नञि बनि पैबाक कचोट एखन धरि अइ।

गौरीनाथ! ईहो हमर ओत' सँ पलायने छल आकि यथास्थिति सँ समझौता। चेतन तँ हम छलियौ। अपन बाल संगीक जेठ बहिन संग कालेज मे पढ़ैत काल संभवतः एकतरफा प्रेम करैत छलियौ। ओ करैत छलि कि नञि से हम तहिया धरि नञि बुझि सकलियौ जहिया ओ इलाहाबाद मे अपन पतिक संग बस' लागलि छलि आ प्रभास कुमार चौधरीक बजाहटि पर इलाहाबाद यात्राक क्रम मे हम ओकर भेंट पत्नीक संग कर' गेलियै।

सीपीआई सँ मोहभंग भेलाक बादे दोसर बेर कलकत्ताक रासबिहारी चौराहा लगक भैयाक डेरा—83ए, सतीश मुखर्जी रोड—भैये संग पहुँचल छलौं। ई पता कहियो ने बिसरि सकै छी। ऐ डेरा मे भीतर एक टा पैघ कोठली छल। बाहर ओकरा सँ छोट कोठली, जाहि मे दू सिट्टा एक टा आ एक सिट्टा दू टा सोफा छल आ छल दीवान सन एक टा छोट पलंग। एकरा ड्राइंग रूम कहल जा सकैए। दूसिट्टा सोफा सँ सटल एक टा बुकसेल्फ। एक कात मे भनसाघर आ तकर बाद एक टा आरो छोट घर। यैह घर हमर घर भ' गेल छल। सक्रिय राजनैतिक जीवन सँ कोनो कोठरी मे समा जायब हमरा जेहल सन बुझि पड़ै छल। दरभंगा मे सीपीआईक जेल भरो आंदोलनक क्रम मे दस दिन हम दरभंगा जेल मे बितौने छलौं—एक टा राजनैतिक बंदीक रूप मे। ई जेल भरो आंदोलन आब निरर्थक आंदोलन बुझाय लागल छल, अहिंसक आंदोलन सन। संभवतः आब एहि तरहक आंदोलनक निरर्थकता ऐ दुआरे बुझि पड़ैत छल जे ऐ सँ पहिने हमर केमेस्ट्रीक प्रोफेसर शक्तिनाथ सेन नुकाक' माओत्सेतुंगक रेड बुक थमा देने छला आ हम ओकरा पढ़ि गेल छलौं। बहुत बात नहियो बुझैत ओ छोटछीन पोथी हमरा बहुत बेसी आवेशित क' देने छल। अपन

जेलयात्रा जतबे निरर्थक बुझायल छल ओतबे सार्थक बुझायल छल पत्नी किरणक जेलयात्रा। अरबल गोलीकांडक विरोध मे, जकरा जलियाँवाला बाग गोलीकांडक संज्ञा देल गेल छल आ पुलिस अधिकारी सी.आर.कासवान केँ जेनरल डायर कहल गेल छल, आईपीएफक अध्यक्ष नागभूषण पटनायकक नेतृत्व मे बिहार विधान सभाक घेराव करबा लेल लोकक हुजूम उमड़ल छल। जत'-तत' लोक केँ रोकि देल गेल छल। नागभूषण पटनायक केँ कोनो अज्ञात स्थान पर पुलिस सुरक्षा मे राखि देल गेल छल। अही बीच किछु नवयुवक आ किछु महिला विधानसभाक बरामदा पर पहुँचि अरबल गोली कांडक विरोध मे नारा लगब' लागल छल। ओहीठाम सभ नवयुवकक संग हमर पत्नी केँ सेहो गिरफ्तार क' लेलकनि पुलिस आ फुलवारीशरीफ जेल मे ध' देलकनि। मुदा ओहूठाम जेल मे ई सभ आंदोलन करैत रहैत छल। हम तँ दरभंगा जेल मे वार्डक सोझाँ एक टा चतरल पीपरक गाछ तरक गोलका चबुतरा पर बैसल रहैत छलौं। जेलो मे आंदोलनक कोनो अवधारणा सीपीआईक जिम्मा बचियो कहाँ गेल छल, जखन कि बहुत पहिने भगत सिंह जेलक भीतरक आंदोलन सँ बाहरक आंदोलन केँ त्वरा देबाक रास्ता देखा गेल छलथिन।

हमर ई कोठरी जँ हमरा लेल जेल छल तँ ऐ डेराक ड्राइंग रूम साँझ होइत-होइत बहुत पैघ भ' जाइत छल—गिरीश पार्क सन, जत' बड़ाबाजार इलाका मे रह'वला मैथिलीक कएक टा गोल बनि जाइत छल आ थोड़ेक काल ओहि पार्क मे रहलाक बाद मिथिलांचलक हाल-चालक आभासीय ज्ञान भ' जाइत छल। एहने सन आभासीय ज्ञान हमरा एहि ड्राइंग रूम मे तखन भ' जाइत छल, जखन अखिल भारतीय मिथिला संघ, मैथिली रंगमंच, मिथि यात्रीक संगहि नव-पुरान नाटक आ साहित्य पर गप्प शुरू भ' जाइत छल। एखन कंप्यूटर क्लास मे हमर नाम नञि लिखायल छल, तँ ड्राइंग रूमक कात मे राखल बुक सेल्फ सँ निकालि क' बेरा-बेरी मैथिली पोथी सभ हम पढ़' लगलौं। विशेष क' मैथिली कविता, कथा आ पत्रिका। पत्रिका सभक पुरना अंक सेहो—'आखर', 'सोनामाटि', 'वैदेही', 'मिथिला मिहिर'। 'मिथिला मिहिर' प्रत्येक सप्ताह एस्प्लैनेड सँ लबैत छलौं। बाद मे ओतहि सँ 'दिनमान' आ 'सारिका' सेहो लाब' लगलौं। हमरा लेल ड्राइंग रूमक खिड़की केबाड़ खुजि गेल छल। ड्राइंग रूम मे बेसीकाल वीरेन्द्र मल्लिक, श्रीकांत मंडल आ रामलोचन ठाकुर। कहियो काल कुणाल आ मोहन चौधरी। ड्राइंग रूम मे थिन अरारोट बिस्कुट आ चाह पिबैत-पिबैत बहुत रास गप्प पसरि जाइत छलै जकरा समेटै लेल वीरेन्द्र भाइक संग हमहूँ देशप्रिय पार्क दिस बढ़ि जाइत छलौं।

साहित्य चर्चा रुचिगर लाग' लागल छल। हिंदी आ बांग्लाक कविता सँ सेहो

परिचय भ' गेल छल। अही बीच विश्व-प्रसिद्ध कवि पाब्लो नेरूदाक देहांत भ' गेल छलनि। स्टेट्समैन मे हुनक कविताक अंग्रेजी अनुवाद सहित जीवन गाथा सेहो प्रकाशित भेल छल। एहि सँ पहिने भैयाक सेल्फ मे राखल—'चित्रा', 'स्वरगंधा', 'सीमान्त', 'कालध्वनि', 'दिशान्तर', 'आत्मनेपद', 'नाचू हे पृथ्वी', 'मैथिली नव कविता' आदि हम पढ़ि गेल छलौं आ ओहि सँ मैथिली कविता बूझ' लागल छलियै। जेहल मे कतेको गोटेक जिनगी मे बदलाव अबैत देखने-सुनने छलियै। मेरी टाइलर पाँच वर्ष भारतीय जेल मे बितौने छली। हुनका मे क्रांतिकारी परिवर्तन आबि गेल छलनि। 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' जेले मे लिखल गेल छल, सेहो सुनल-पढ़ल छल। हमरो जेलक जीवन मे बदलाव बुझाय लागल। जेलक खिड़की आस्ते-आस्ते खुज' लागल छल। सक्रिय राजनैतिक जीवनक खुल्लम-खुल्ला गप्प करबाक एक टा रचनात्मक माध्यम कविता बुझाय लागल छल आ कविता केँ हम हथियार बुझि ठीके भँज' लागल छलौं।

गौरीनाथ! हम एखनो एहि सँ असहमत नञि छी। मोन हेतौ, गुजरात नरसंहारक बाद कात्यायनीक कविता, जकरा मादे ओ कहने छली जे एकरा कविता नहियो मानी तँ कोनो हर्ज नञि—ओत्सवीजक बाद कविता संभवो नञि होइ छै। मुदा एहि हथियार केँ सहजे लहरेबाक जरूरति नञि छै। म्यान, मास्केट आकि होल्स्टरक भीतर रहलो पर ई अपन अस्तित्वबोध करा सकैए। ई सभ टा कविता पोथी पढ़ि गेलाक बाद हम प्रगतिवाद, अभिव्यंजनावाद, सहजतावाद, आ अकविता मे ओझरा गेल छलौं। कत' सँ ककरा अलग करू आ कोन बाट धरू से नञि बुझि पबै छलियै। सभ टा एक्के रंग बुझि पड़ै छल—शिल्प, भाषा आ विषयवस्तु मे। जे किछु, हमरा मुखर भ' जेबाक एक टा बाट भेटि गेल छल आ पाब्लो नेरूदाक जीवनगाथा कविताक सार्थकताबोध करा देलक। संगहि एहू सँ हमरा आत्मबल भेटल जे नेरूदा अपन मातृभाषा मे लिखिक' अपन बात देश-दुनिया केँ बुझा सकैत छथि तँ हमहूँ अपन बात मातृभाषा मे बुझा सकैत छी, बशर्ते बात मे दम हो। कविताक संगहि साहित्यक प्रसंग मे हमर कएक तरहक आशंका आ जिज्ञासाक कएक टा भकरार गाछ देशप्रिय पार्क लग उगि जाइत छल।

स्टेट्समैन मे प्रकाशित नेरूदाक कविताक मैथिली अनुवाद हम राति मे क' लेने छलौं आ दोसर दिन जखन वीरेन्द्र मल्लिक, रामलोचन ठाकुर आ श्रीकांत मंडल भैयाक ड्राइंग रूम मे चाह पिलाक बाद बिदा भेला तँ हमहूँ पछोड़ ध' लेलौं। आब हमरा लेल जेहलक खिड़कीए नञि केबाड़ सेहो खुजि गेल। हम तँ जेहल सँ निकलि गेल छलौं, मुदा भौजी केँ जेहल मे बन्द क' देने छलियनि। ओ हमर अबैक बाट तकैत दूसिट्टा सोफा पर पड़ि रहैत छली आ हम ताधरि डेरा नञि घुमै छलौं जाधरि वीरेनदा (ई संबोधन बहुत आपकता बढ़ि गेलाक बाद हम वीरेन्द्र मल्लिक केँ कर' लागल छलियनि) केँ बालीगंजक ट्राम पर नञि चढ़ा दै छलियनि। राति एगारहक लक-धक। कलकत्ता मे हमर एक टा आरो भौजी (वीरेन दाक पत्नी—मेनजी—मणीमाला) वीरेनदा केँ लौटैत काल तरकारी कीनि लेबाक लेल जे झोड़ा थमा दै छलथिन, से कएक दिन खालिए घर लौटैत छल। मुदा ओही देशप्रिय पार्क लगक शेली कैफे, बोदीक बेगुनी, चाह-पानक दोकान, पितौछियाक गाछ तरक चबुतरा आ नौ बजेक बाद बन्द भ' गेल दोकानक सीढ़ी पर हमर सभक त्वंचाहंच पैघ जनतांत्रिक आ रचनात्मक विमर्श भ' जाइत छल। सभ आलोचना-प्रत्यालोचना सुनै-सहै छल। अही परिवेश मे हमर काव्यक बाल्यावस्था पलल-बढ़ल छल।

डेरा जखम घुमै छलौं तँ भैया सुतल रहै छला। ओ तखनो दस बजे धरि सुति रहैत छला आ आबो दस बजे धरि सुति रहथि से हुनका नीक लगै छनि, मुदा भौजी ने खयने रहैत छली ने सुतल। हमर अयबाक आ केबाड़ खोलि देबाक बाट तकैत सोफा पर ओंघरायल रहैत छली। फेर गप्प-सप्प करैत हम सभ संगे खाइत छलौं आ तकर बाद जागि सकै छलौं। ततेक काल होइत छल जे कतेक पढ़ि लेब। किएक तँ हमरा ने मैथिली साहित्य पढ़ल छल ने हिंदी साहित्य, मुदा देशप्रिय पार्कक संगति सँ मैथिली, हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला आ पश्चिमी साहित्य, समालोचना सेहो पढ़'-गुन' लागल छलौं। आब बुझि पड़ैए जे ओहि समय मे भौजी केँ कतेक कष्ट हम दैत छलियनि। मुदा यैह कष्ट हुनको साहित्य दिस उन्मुख कयलकनि आ हमरा तँ करबे कयलक। भैया एहि सभ सँ सापेक्ष रूपेँ जुड़ल रहला आ हमरा सभ केँ प्रोत्साहित करैत रहला।

हमर नाम कंप्यूटर साइंसक प्रोग्रामिंग कोर्स मे लिखा गेल छल। पार्क स्ट्रीट मे संस्थान छल आ ओत' तीन-चारि घंटाक बाद हम मुक्त भ' जाइत छलौं। एकर बाद समय काटब मुश्किल तँ कखनो एस्प्लैनेड स्थित इन्कम टैक्स ऑफिस, जत' रामलोचन ठाकुर काज करै छला, चलि जाइ छलौं आकि लेनिनक स्टैच्यूक बगलक मैगजीन कार्नर पर। पहिने एत' लेनिनक स्टैच्यू नञि छल। संयुक्त मोर्चा सरकारक कार्यकाल मे संभवत: बनल छल। कहियो स्ट्रीटक पुरान किताबक बाजार चलि जाइ छलौं, मुदा एहि सभ सँ बेसी नीक लगै छल डेरा सँ निकलि देशप्रिय पार्क धरि जायब आ ओतय रामलोचन भाइ, श्रीकांत मंडल आ वीरेन दा केँ जुटि गेलाक बाद कहियोकाल एस्प्लैनेड जायब। बहुत रोचक होइत छल ई यात्रा। सभ सँ पहिने हम सभ के.टी. (खलासी टोला) जाइत छलौं, जत' हिंदी, बांग्लाक कवि-साहित्यकार,

नाटककार मेहनत-मजदूरी कर'वला लोकक संगहि देसी ढर्रा पिबैत छला आ वैह सभ एकर नाम के.टी. राखि देने छला। बहुत कम पाइ खर्च भेलाक बाद हमहूँ सभ ओतय सँ तखन निकलि जाइ छलौं जखन वीरेन दा कैं पित्त चढ़ि जाइ छलनि। ओहिठाम सँ निकलि मेट्रो सिनेमाक पाछू सँ बार मे हमसभ घुसिया जाइत छलौं। ओहो अद्‌भुत जगह छल। पेग बनल गिलास, पानि आ फुलायल चना टेबुल पर राखि देल जाइत छल। सभ सँ बेसी आकर्षक ई छल जे ट्रे मे चनाचूड़, चिनिया बदाम, सिगरेट आदि ओहि बार मे बेचैत लोक। वस्तु किनू आ तत्काल पाइ द' दियौ। बार सँ बेसी ओ नेहराक हाट सन बुझि पड़ैत छलै। अहूठाम बेसी खर्च नञि होइ छलै, मुदा कहियो काल अहूठाम वीरेन दा कैं पित्त चढ़ि जाइ छलनि। दिन कदिमा राति कदिमा, फकड़ा पढ़ैत ओ श्रीकांत दा संग उलझि जाइत छला आ पूर्वक सभ व्यवस्था कैं नकारि आगू बढ़बाक आह्वान करैत छला। फेर ओत' सँ उठिक' हमसभ एहि सँ नीक बार साकी चलि जाइत छलौं, जत' गेट पर सैलूट मारै छल आ भीतर नीक टेबुल आ सोझाँ मे नचैत इंद्रक अप्सरा सभ। ओहूठाम ओहि अप्सरा सभ सँ हमरा कोनो मतलब नञि रहै छल, रामलोचन भाइ कैं सेहो नञि। समवयस्क वीरेन दा आ श्रीकांत दाक बात नञि कहि सकै छी। हमर पियास किछु दोसर छल, जे कतबो पिलाक बादो कहैत छल—पी चुके बहुत मगर तिश्नगी बाकी है। हमरा भीतरक पियास किछु आरो छल। एहि संसर्ग सँ हम सब किछु जानि लेब' चाहैत छलौं—श्मशानी पीढ़ी, एलेन गिंसवर्गक कलकत्ता यात्रा, राजकमल चौधरीक कलकत्ता प्रवास, बांग्ला, हिंदी आ मैथिली साहित्यक संग समकालीन लेखन आ एहि सभक बीच अभिव्यक्तिक अपन माध्यम तकैत छलौं। तेँ प्रश्नाकुल, जिज्ञासुभाव सदिखन हमरा सजग बनौने रहैत छल। गौरीनाथ! आब आश्चर्य होइए जे एतेक काल आ अइ तरहेँ एस्प्लैनेड मे समय बितौलाक बाद हम केना 83ए, सतीश मुखर्जी रोड पहुँचै छलौं आ दूशिट्टा पर सूतल भौजी केना केबाड़ खोलै छली आ हमरा केना बर्दाश्त करै छली। गोड़ लगै छी—हमर अपराध क्षमा करब देवी—कुपुत्रो जायेत, क्वचिदपि कुमाता न भवति।...

एहि तरहें औघड़ भ' गेल छलौं अपना कैं अभिव्यक्त कर' लेल आ कहियो काल कविता सन किछु लिखा जाइत छल जे आब बुझि पड़ैए जे ओ कविता नञि होइ छल—दरभंगाक सड़क पर लगायल गेल नारा होइत छल। एखनो कविताक खोज तँ अछिए। नीक कविता कहाँ लिखि सकलौंहें एखन धरि, मुदा प्रयास तँ देशप्रिय पार्के लग सँ शुरू भ' गेल छल। 'अग्निपत्र' क दू अंक निकलि गेल छल आ हम ओहि सँ जुड़ि गेल छलौं, मुदा 'अग्निपत्र' मे छपबाक कोनो लालसा नञि

रखैत एक दिन एक टा कविता लिखि देशप्रिय पार्क पहुँचल छलौं। सुकांत ओहिठाम बहुत कम अबै छला, मुदा ओहि दिन आयल छला—'अग्निपत्र'क संपादक मंडल मे ओहो छला वीरेन दा आ रामलोचन भाइक संग। ओ ओइ दिन हमर कविताक श्रोता सेहो छला। 'नञि बिसरि सकलौं तोरा'—कविताक पाठ देशप्रिय पार्क लगक दोकान सभ बन्द भ' गेलाक बाद ओकर सीढ़ी पर बैसि हम सुनौने छलौं। हमर कविता केहन छल से नञि जानि, मुदा कोनो मित्र हतोत्साहित हमरा नञि कयलनि। एकर विपरीत ओहि कविता मे सुकान्त आ वीरेन दा दू-दू पाँति जोड़ि देलथि—आँखि जत' हरियर कंच बाधबोनक हरियरी रहै/कोपर बाँसक काइ रंगक चमकी रहै (सुकान्त)आ वीरेन दा जोड़ि देलनि—एक टा जिजीविषा/जीवन संघर्षक लेल/एक टा मिसाइल/एक टा नेपामबम। हमर कविता पूरा भ' गेल छल। गौरीनाथ! हम ओही श्रीनारायण ठाकुरक आँखि चित्रित करबाक चेष्टा क' रहल छी जे हमर पहिल आधार टोल पर शहीद भ' गेल छलाह।

वीरेन दा एतबे पर हमरा छोड़ि नञि देलथि। हम 'अग्निपत्र'क सहयात्री भ' गेल छलौं, आ वीरेन दाक संग एकर प्रकाशन मे सक्रिय रूप सँ जुड़ि गेल छलौं—प्रूफ देखब सँ बेचब धरि। ओ प्रूफ देखब सिखयबाक संगहि हमरा कविताक छन्द-मात्रा सेहो सिखा रहल छला, एहि चेतौनीक संग जे कविता नवधाराक लिखू मुदा ईहो सभ एहि दुआरे जानि लिय जे कहियो अमर जी ई नञि कहथि जे एकरा सभ कैं छन्द-मात्राक ज्ञान नञि छै तेँ ई सभ नवकविता लिखैए। एतहि सँ हमर काव्य-यात्रा आ पत्रिकाक संपादन सँ जुड़ाव शुरू भ' गेल छल।

नीक लगैत छल प्रेस मे बैसल चाह पिबैत, पान खाइत प्रूफ देखब आ साहित्य चर्चा करब। अही परिवेश मे एक दिन रामलोचन भाइक गामक हमर समवयस्क युवक भाइक संग भैयाक ड्राइंग रूम मे आयल छला। नीक मुँहठान। भावपूर्ण आँखि आ ओहि मे असहमतिक अथाह प्रश्न कुलबुलाइत। क्रमिक ओ हमर सहज संगी बनि गेल आ बाद मे सहयात्री। ओ ककरो छत्रछाया स्वीकार कर'वला नञि छल। अपन रस्ता अपने बनेबा मे विश्वास रखैत छल। एक दिन ओ एक टा हस्तलिखित पत्रिका निकालबाक प्रस्ताव हमरा लग रखलक आ झटपट ओकर डम्मी बनि गेल। मैटर तैयार भ' गेल आ लिखबाक जिम्मा ओ हमरा थमा देलक। हमहू दिन-राति लागि क' पत्रिकाक एक टा हस्तलिखित प्रति तैयार कयल। दू दिन बाद टहटहौआ रौद मे ओ डेरा पर आबि गेल एहि जिज्ञासाक संग जे पत्रिका तैयार भेलौ? हँ, एक टा प्रति तैयार भ' गेल छौ, छह घंटा लगलौ। दुनू गोटे एकरा देखिक' संतोष क' ले। औरो प्रति तैयार हेतौ तखन ने दोसर ककरो देख' देबही। एहि यांत्रिक युग मे

एतेक अव्यावहारिक काज हमरा उचित नञि बुझायल। वैह एक प्रति नेने साँझ मे हम सभ देशप्रिय पार्क लग पहुँच गेल छलौं—जत' सभ समस्याक समाधान छलै। आस्ते-आस्ते सभ दिशा सँ लोक सभ एत' आबि गेल छल। ओही मे एक टा प्राण सिन्हा छल जे वीरेन दाक भाइ छलनि आ ओ एक टा छोट सन ट्रेडिल प्रेस चलबैत छल। ओकरे एहि पत्रिकाक हस्तलिखित प्रति देख' देलियै, जे एक पन्नाक तीन फोल्ड मे छह पृष्ठ भ' जाइत छल। प्राण एकरा छापि देबाक लेल तीस रुपया खर्च बतौलक। ओहीठाम चंदा भ' गेल आ 'अग्निपत्र' सँ पृथक कु.अ.क सम्पादकत्व मे 'शिखा' मइ 74 सँ शुरू भ' गेल। कु.अ. ओना कुणाल-अग्निपुष्प छल मुदा हमसभ ओकर अर्थ देल कुव्यवस्था सँ असहमति। 'शिखा' अही अर्थ कें चरितार्थ कर' लागल। कलकत्तो मे नक्सलवादी आंदोलनक अवशेष साहित्ये मे देखाइ दैत छल। 'शिखा' सेहो अपन स्वर ओही संग मिला रहल छल। 'शिखा'क मासिक यात्रा शुरू भ' गेल छल, मुदा 'अग्निपत्र' सँ अलग भ' क' नव पत्रिका निकालब हमरा तखन 'अग्निपत्र' सँ विश्वासघात बुझि पड़ैत रहल। 'शिखा' अपन एक टा सोझ धारा ई निश्चित कयलक जे 'मिथिला मिहिर' मे छप'वला रचनाकार एहि मे नञि छपि सकैत छथि। 'मिथिला मिहिर' ओही समय मे हमरा सभक नजरि मे व्यवस्थावादी पत्रिका छल। एहि कठोर नियमक बिना नवधाराक साहित्यक जन्म, नवलेखकक वैचारिक विकास असंभव बुझि पड़ै छल।

निश्चित रूप सँ 'शिखा' नवधाराक निर्माण कलयक। गुणात्मक रूप मे भनहि ओ ओतेक सफल नञि भेल होइ मुदा तात्विक रूप मे ओ समसामयिक आ साहित्यिक अखिल भारतीय मुख्यधाराक संग अपन छोटछीन कलेवर मे संग द' रहल छल। बिना कोनो प्रतिद्वंद्विताक, सभक सहयोग सँ, 'शिखा' निकल' लागल छल। आ आस्ते-आस्ते एक टा सडोर बनि गेल छल नवपुरान लोकक। एहिना एक दिन कालेज स्ट्रीट काफी हाउस सँ निकलि क' पार्क मे बाबाक संग हम, कुणाल आ रामलोचन भाइ बैसल छलौं आ बाबा कें 'शिखाक' नवका अंक देलियनि। पत्रिकाक पाइ दैत तुरंत कहलथि—कोनो मैथिल कें मँगनी मे पत्रिका नञि दिहक। खीरा काटि क' अही पत्रिका पर नोन राखिक' खेत' जँ मँगनी मे देबहक तँ। ई बात हमरासभ लेल ऋचा भ' गेल छल। ओहुना कलकत्ता मे लोक बिनु दाम देने पोथी आकि पत्रिका नञि लैत छल। ई बात ने पटना मे छल आ ने दरभंगा मे छल। हम दुनू पत्रिका मे व्यस्त छलौं, मुदा तैयो भैया कॉस्ट एकाउंटेंसीक कोर्स मे नाम लिखा देने छला। इकोनॉमिक्स सन एकाध विषय हमरा पढ़' मे नीक लगैत छल, मुदा जखन कम्पनी लॉ उनटेलौं तँ बुझि पड़ल जे निट्ठाह क' पूजीपति वर्गक लेल ई नियम-कानून

सभ बनौल गेलए। कुणाल सेहो बी.एस-सी. क' कलकत्ता पहुँचल छल। एक दिन ओकर नाम कॉस्ट एकाउंटेसी मे लिखा क' हम मुक्त भ' गेल छलौं ओइ पढ़ाइ सँ। हमर खोज किछु दोसर दिस शुरू भ' गेल छल। कलकत्ता महानगर नक्सलवादी आंदोलनक ओहि समय मे केन्द्र छल, मुदा 1973-74 धरि कतौ कोनो चर्च नञि सुनै छलियै। साहित्यकारो सभ एहि आंदोलन पर कखनो चर्चा नञि करैत छल। सभ किछु एहि महानगरक व्यस्त जीवन मे मिझरा गेल छल। सूनल-बूझल छल जे अलीपुर जेल आ लाल बाजार (पुलिस मुख्यालय) मे क्रांतिकारी सभ कें मुठभेड़क नाम पर आकि पड़ेबाक बहन्ना बना दौड़ा-दौड़ाक' सोझाँ-सोझी मारि देल गेल छल। 16 जुलाइ, 72 कें अस्वस्थ चारू मजुमदार कें सेहो गिरफ्तार क' लाल बाजारे मे राखल गेल छल। पुलिस प्रताड़ना सँ 28 जुलाइ कें हुनक देहान्त अही जेल मे भ' गेल छलनि। मुख्य पार्टी कएक टा ग्रुप मे बँटि चुकल छल आ छोट-छोट केन्द्र अन्य राज्य मे बनि रहल छल। ई सभ जनैत एक दिन रामलोचन भाइ सँ हम जिज्ञासा कयल जे एहि महानगर सँ क्रांतिकारी सभ आलोपित भ' गेल छथि की? एक दिन ओ अपन डेरा पर एहि धाराक एक मित्र सँ भेट करा देलनि। हुनका सँ फेर कहियो भेट नञि भेल, मुदा ओ पार्टीक एक टा पत्रिका देने छला से हम सम्हारि क' रखने छलौं। एमहर हमर कोनो सक्रियता नञि। सक्रिय हम साहित्य आ पत्रिके मे छलौं। 'शिखा' आब प्राण सिन्हा नञि छापि रहल छल। आब ओ नवकरहीक कृष्णकुमार जीक प्रेस मे छप' लागल छल। संगहि आब ओ फोल्डर पत्रिकाक बदला डिमाइ आकारक पत्रिका बनि गेल छल। अही बीच इमर्जेन्सी सेहो लागि गेल छल। घरक खिड़की-केबाड़ बन्द क' हम सभ गप्प कर' लागल छलौं, मुदा पत्रिकाक तैयारी छोड़ि नञि देने छलौं।

बिहार मे जयप्रकाश नारायणक आंदोलन शुरू भ' गेल छल। एहि आंदोलन कें कोनो कम्युनिस्ट पार्टी समर्थन नञि द' रहल छल। एक मात्र पीसीसी सीपीआई (एम एल), जे बिहार मे सत्यनारायण सिंहक नेतृत्व मे चलि रहल छल, एहि संपूर्ण आंदोलन कें समर्थन देने छल। एकरे आधार बना क' 'शिखा'क अगिला अंकक संपादकीय नक्सलबाड़ी आन्दोलन पर छल। 'शिखा'क पूरा मैटर कृष्ण कुमार जी कें द' आयल छलियनि। दू-तीन दिनक बाद जखन प्रूफ लेब' हुनका प्रेस गेलौं तँ ओ मूल प्रति पर कागत लपेटि क' ई कहैत लौटा देलनि जे बड़ा बाजार मे सोसलिस्ट पार्टीक पर्चा छपैत एक प्रेस कें जब्त क' लेल गेलै। कुणाल सेहो संगे मे छल। निराश होइत कहलक जे चल, आब अपने प्रेस हेतौ तखने छपतौ। मुदा हम हारि नञि मानने छलौं। कुणाल ओहि समय मे बिहार प्रवासी छात्र निवास मे रहैत छल। ओकरा

ई कहैत जे तों होस्टल जो हम एक ठाम सँ अबैत छियौ आ 'शिखा'क पाण्डुलिपि लेने हम बाबू साहेब चौधरीक प्रेस पहुँच गेल छलौं। दोसर बेरक कलकत्ता यात्रा मे हुनका सँ कोनो सम्पर्क नञि रहि गेल छल, मुदा पहिल बेर जे एतय आयल छलौं, तखने सँ परिचय छल। बहुत आत्मीयता सँ बैसाक' चाह पिऔलनि आ अयबाक उद्देश्य पुछलथि। हम 'शिखा'क पांडुलिपि बढ़बैत छापि देबाक आग्रह संग अग्रिम सेहो थमा देने छलियनि। चौधरी जी कें मोतियाबिंद भ' गेल छलनि, तँ ओ प्रूफ पढ़ि देबा मे असमर्थता व्यक्त कयलनि। हम यैह चाहितो छलौं। ओहीठाम प्रूफ देखि सभ कागत-पत्तर झोरा मे राखि बिदा भ' जाइत छलौं जे कोनो तरहेँ ई प्रेस-झंझटि मे नञि फँसि जाय। अंततः प्रेस सँ निकलि 'शिखा' देशप्रिय पार्क धरि आबि गेल छल। 'शिखा' ल'क' वीरेन दा काफी हाउस आ नञि जानि कत'-कत' ई कहैत घुमि अयला जे—हिंदी, बांग्ला सभी भाषा की पत्रिका मर गयी, मेरी भाषा की पत्रिका देखो, सीना तान कर खड़ी है। इमर्जेन्सी मे काफी हाउस सँ बार धरि मे खुफिया विभागक आदमी रहैत छल।

चाँद आकि अवधनारायण जी हुनका ओहिठाम सँ सम्हारि क' ई कहैत निकालि देने छलथिन जे अहूठाम खुफिया विभागक लोक अइ। एकर बाद वीरेन दा विकल भ' गेल छला। 'शिखा'क प्रिंट लाइन 83ए, सतीश मुखर्जी रोड ओ भोरे-भोर पहुँचि गेल छला आ रतुका सभ टा कथा कहैत डेरा छोड़ि देबाक हिदायत देने छला, जाहि सँ कि भैया सभ झंझटि मे नञि फँसथि। दोसरे दिन रामलोचन भाइक सहयोग सँ लेक गार्डन मे एक टा कोठरी किराया पर ल'क' सभ टा साहित्य ओतय राखि आयल छलौं। मोटामोटी दू मास बीत गेलाक बाद फेर सब टा अपन डेरा ल' अनने छलौं। 'शिखा'क यात्रा अबाधिते टा नञि रहल बल्कि ओकर विकास होइत गेल। पहिने बिना कवर कें छपै छल तँ कथा अंक सँ 'शिखा' पर कवर सेहो चढ़ि गेल छल दू रंगक। हमरा आ कुणालक जिम्मा एक्को टाका रहैत छल तैयो कोनो बाधा नञि होइत छल 'शिखा' निकालबा मे। ई छल कलकत्ताक महातम।

हमर कंप्यूटरक पढ़ाइ पूरा भ' गेलाक बाद विशेष प्रशिक्षण लेल भैया आईबीएम सँ हमरा जोड़ि देने छला अइ आशाक संग जे आब एहिठाम हम किछु दिन काज करब, तकर बाद ओ अमेरिका पठा देता। अमेरिकाक एकाध मित्र सँ ओ गप्पो क' लेने छला, मुदा हेबाक तँ छलै किछु आर। बिहारक मुख्यमंत्री केदार पांडेय कलकत्ता पहुँचल छला आ ओतय धरतीपुत्रक नारा देने छला। हुनकर एहि नारा कें आधार बनाक' वाईएनबीपी संस्था, जे राज ठाकरेक महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना सन छल, बिहारी सभ कें प्रताड़ित कर' लागल। किछु बांग्ला अखबार सेहो एकरा हवा देलक।

भौजीक आ हमर पढ़ाइ तँ पूरा भ' गेल छल, मुदा बेबी, राजू, संजू एखन बड़ छोट छल। केजी-तेजी मे पढ़ै छल। भैया कें नन्दीराय कंपनीक पार्टनरशिप छलनि, मुदा बच्चा सभक भविष्य लेल ओ बहुत बेसी आशंकित भ' गेल छला। ओही बीच ओ कोनो आडिटक क्रम मे पटना आयल छला आ पटने मे बसि जेबाक निर्णय क' लेने छला। निर्णये टा नञि तैयारी सेहो क' लेने छला आ पूर्वी बोरिंग केनाल रोड मे कैथमा हाउस मे एक टा फ्लोर किराया पर ल' लेने छला। कलकत्ता घुमलाक बाद कहने छला—समान सभ बान्हू आ चलू पटना।

ओ दिन हम बिसरि नञि पबै छी, जहिया 83ए, सतीश मुखर्जी रोडक सोझाँ एक टा बड़का ट्रक लागल छल आ सभ टा समान ओहि पर लदा गेल छल—दू सिट्टा सोफा, बुक सेल्फ आ 'शिखा'क सभ टा अंक। सीढ़ी लग ठाढ़ वीरेन दा, श्रीकांत दा आ रामलोचन भाइ। कलकत्ता छोड़ि देबाक हमर व्यथा दुरगमनिया कनियाक व्यथा सन छल। सभ अग्रज कें गोड़ लगैत हम हबोढकार कनैत ट्रक पर चढ़ि गेल छलौं। राति मे चंदन नगर आबि गेलाक बाद हमरा बुझि पड़ल जे कलकत्ता आब सदाक लेल छुटि गेल—जे हमर भाषा, साहित्य आ नवविचार सँ जुड़ावक मातृभूमि छल। आगूक कथा फेर कहियो...।

अंतिका, अक्टूबर-दिसंबर, 2007 आ जनवरी-मार्च, 2008

जे कहब साँच कहब

रामलोचन ठाकुर

उचिती

जे कहब साँच कहब, साँच छोड़ि किछु नञि कहब। मैथिली मे कहबी आ फकड़ाक अमार लागल अछि। जे कोनो अवसर पर, कोनो विषय-बात पर लोक बड़ सहजताक संग एकर उपयोग करैत अछि आ ओ ततेक सटीक होइ छै जे कहल नञि जाय। एहने एगो फकड़ा छै—हम सुनरी पियबा सुनरा, गामक लोक बनरी बनरा। कहबाक आशय ई जे अपना नजरि मे केओ अधलाह होइते ने अछि, ने ओ अपने अधलाह होइत अछि ने ओकर अपन लोक अधलाह होइत छै, ने अपन काज अधलाह होइत छै। राजमद मे चूर अयोध्यापति राम संतान संभवा सीता केँ बनबास दैत आ शंबूकक घेंट कटलाक पश्चातो मर्यादा पुरुषोत्तम बनले रहलाह, अश्वत्थामा हतो—कहितो युधिष्ठिर सत्यवादी, धर्मराज बनले रहलाह। मैथिलीएक सन्दर्भ मे बात करी तँ जे सभ सँ पैघ सुतारी से स्वयं केँ सभ सँ पैघ मैथिली सेवीक रूप मे प्रचारित करैत अछि आ तहिना जकरा मिथिला-मैथिलीक संबंध किछु ज्ञाते नञि छै ओ स्वयं केँ सर्वज्ञ होयबाक स्वाँग रचैत अछि। किछु लोक तँ इतिहासक आरंभो अपने जन्म सँ मनाबक भ्रम पोसैत अछि। एहना स्थिति मे 'अपना नजरि मे' सन स्तंभे हमरा अनसोहाँत लगैछ आ तँ हम एते दिन अनठबैत रहलौं। अस्तु।

आदिकथा

एगो बाभन रहथि। बेचारे बड़ दुखी रहथि। चारि टा संतान मुदा चारू बेटिए। बेटाक अभाव मे वंश बुड़बाक चिन्ता मे दिन-राति झखैत। किछु दिनक पश्चात पत्नीक देहान्त भ' गेलनि तँ दोसर विवाह केलनि। अपन पितिऔत सँ घराड़ी बदलैन क'

हुनक बड़दघारा मे आबि गेलाह। बाभनक दिन घुरलनि। दोसर पत्नी पुत्रक जन्म देलथिन। प्रायः वसंत पंचमीक दिन छलै। बाभनक तँ जे से, टोल-पड़ोस मे सेहो जेना आनन्दक लहरि आबि गेल छल। जनकपुरक मेला सँ घुरती प्रायः सकल स्त्री-पुरुष अपन आँगन नञि जा बाभनक आँगन मे भीड़ केने—नव घराड़ी, नवकी कनियाँक भाग्यक सराहना मे पंचमुख भेल। स्वभावतः बच्चाक नाम राखल गेलै कुलपति। आ कुलपति जखन प्रायः साढ़े तीन-चारि वर्षक भेलाह तँ बाभन निश्चिन्त मने परलोकक यात्रा केलनि। वंश बुड़बाक चिन्ता आ फेर कुलपतिक जन्म बाभन केँ कर्मविमुख करबाक लेल पर्याप्त छल। ओनहुना ओ कर्मठ वा मेहनतिया कहियो ने छलाह आ शुद्धाक रूप मे जानल जाइत छलाह। ककरो सँ पचीस-पचास लेलनि आ ओ जँ तगादा केलक तँ दू कट्ठा जमीने लिखि देलथिन, आ जथा मे एक खेप हाथ लगने ओ कते दिन चलैछ? कहबी छै जे सम्पत्ति अबैत तँ सभ देखैत छै मुदा जाइत केओ नञि! तँ बाभनक मृत्युक समय अबोध कुलपति आ हुनक माइक भरण-पोषण लेल मात्र दस कट्ठा जोतसीम बनि गेल छल, ताइ मे किछु देआद-बादक कब्जा मे।

अनाथ कुलपति केँ आश्रय भेटलनि मातृकुल मे। ममतामयी नानी जीबैत छलथिन। मुदा अभावी संसार। छओ भाइक भैयारी मामक आ दू गोट पितियौतक संयुक्त परिवार। जेठ माम स्वर्गीय भ' गेल छलथिन तनिक एकमात्र पुत्र आ मामक छोट पितिऔत प्रायः कुलपतिक समवयस्क, तँ कखनो-काल झगड़ादन। परिणामतः बड़की मामी आ छोटकी नानीक व्यवहार मे कटुता जे स्वाभिमानी कुलपतिक हेतु असहनीय। तँ एक बेर जखन मा गेल छलथिन तँ हुनक पछोड़ धेने ओ मात्रिक कोकन सँ पैत्रिक बाबूपाली आबि गेलाह। एहि बीच कहिया आ केना ओ कुलपति सँ रामलोचन भ' गेलाह से ज्ञात नञि।

बेटाक व्यथा-कथा-बोध वा दमित वात्सल्यक उफान—कारण जे कोनो किएक ने हो, सारदा देवी अर्थात हमर मा हमरा ल'क' तँ आबि गेली, परंच समस्या छल हमर पेट आ पठन-पाठनक। एहना स्थिति मे बिनु खर्चक पढ़ाइ तँ संस्कृतेक संभव छल। तँ मा धेलनि चरखा आ हम करमौली-पाठशाला। परंच साँच कही तँ हमरा 'अंधकार कहै छथि हम जे वरदराज भट्टाचार्य...' घोखै मे एकदमे मन नञि लगैत छल। वर्ष डेढ़ेक पाठशाला जाइतो हम गुरुजीक प्रथमाक परीक्षा देबाक आदेश केँ सभ दिन अनठबैत रहलौं। एमहर टोल-पड़ोसक लोक सभ भिन्ने चौल करैत छल... जते छाउर कपार मे लेपैत छह से मंडैया मे देने काजो होइतह। एहूठाम लिखब आवश्यक जे मंडैया एक पोखरि थिक जकरा लोक सभ चारूदिस सँ भरि डबरा मे परिवर्तित क' देलकै। पूर्व मे ई बड़ पैघ छल आ लोक एकरा दैतक कोड़ल

होयब कहैत छलै। एकर इर्द-गिर्दक एरिया एकरे नाम पर मंडैया कहबैत अछि। एही एरिया मे हमरो पाँच कट्ठा खेत अछि। से अंततः हम पाठशाला छोड़ि कपरिया स्कूल धएल। मा धेलनि अंबर चरखा। आ एहीठाम हमरा साक्षात भेल कविता सँ। आन विद्यार्थीक हाथ मे डाँड़िवला खाता देखि सेहन्ता लागए। कीनैक उपाय तँ छल नञि। मा एक वा दू गो पाइ देथि तँ दोकान सँ एक वा दू ताओ कागत आनि सुइ-ताग सँ खाता बनाबी। एकबेर स्कूल मे देखलिऐ जे कोनो अवसर पर सांस्कृतिक आयोजन भेलै। विद्यार्थी सभ स्वरचित कविता, जकरा गीत कहब बेसी उपयुक्त होयत, गाबए। जकर सभ सँ नीक होइ तकरा खाता पेनसिल पुरस्कार मे देल जाइ। बस शुरू भ' गेलौं हमहूँ। हमर लोभ कने बेसीए भ' गेल छल। अनको बना दिऐ, शर्त एतबे जे ओ अपन पुरस्कारक खाता वा पेनसिल हमरा द' देत। सत कही तँ हमरा लेल ई पुरस्कार नोवेल वा कोनो अकादेमी पुरस्कार सँ थोड़ आनन्ददायक, थोड़ महत्त्वक नञि छल। ई भिन्न बात जे तहिया हम पाँचम वा छठम वर्ग मे पढ़ैत रही आ एहि पुरस्कार सभक नामो ने सुनल छल।

कपरिया स्कूल हमरा बहुत किछु देलक। स्कूल नव छलै। खेत सँ माटि आनि स्कूल भरबाक काजो हमरा सभ केँ करय पड़ैत छल। हमरा संग बिकाउ पासमान नामक एगो विद्यार्थी पढ़ैत छल। ओकरा मासे-मास सरकारी पाइ भेटैत छलै आ भरिसक एही दुआरे ओ कहियो-काल स्कूल अबैत छल। पढ़नाइ-लिखनाइ सँ कोनो मतलब नञि। हमरा आश्चर्य लगैत छल जे ओकरा सँ हमर आर्थिक स्थिति दयनीय अछि, क्लास मे फर्स्ट करै छी तैयो हमरा कोनो सरकारी सहयोग किऐ ने भेटैछ। ओना बाद मे स्कालरशिप भेटल छल परंच ताइ मे सँ स्कूलक डेवलपमेंटक नाम पर काटि लेल जाइत छल। तहिना छठम वर्गक वार्षिक परीक्षा मे हमरा थर्ड क' देल गेल जखनकि फर्स्ट-सेकेंड होइवला विद्यार्थी सभ हमरा सँ बड़ कमजोर छल। एकर बेस प्रतिक्रिया हमरा मे भेल। फर्स्ट केनिहार दू टा विद्यार्थी मे एक तँ हमरे गामक छल, दोसर करमौलीक। एकरा लोकनिक आर्थिक-सामाजिक स्थिति नीक छलै। संयोग सँ किछु दिनक बाद स्कूल इंस्पेक्टर आयल छलाह। ओ सातम कक्षाक भिजिट केलनि। पुछलथिन जे फर्स्ट विद्यार्थी के छथि। हुनक बगले मे छलाह प्रधान अध्यापक लालाजी। ओ हमरा ठाढ़ होयबाक इशारा केलनि। हम ठाढ़ होइत कहलियनि जे हम तँ चारिम-पाँचम क्लास मे फर्स्ट भेल रही, एहि बेर तँ थर्ड भेलौहें, फर्स्ट सेकेंड तँ ओ सभ अछि। इंस्पेक्टर साहेब प्रधान अध्यापकक मुँह दिस तकैत बिहुँसि देने छला। बाद मे ओ हमरा सँ किछु प्रश्न पुछि कक्षा सँ बहरा गेला आ ताही दिन सँ हम लालाजीक कोपभाजन भ' गेल रही। रक्ष रहल जे शिक्षा-सत्र परिवर्तनक कारणें सातम कक्षा मे हमरा लोकनि केँ छए मास पढ़ए पड़ल छल।

आठम कक्षा मे हम कलुआही हाइ स्कूल मे नाम लिखाओल जखनकि हमर गामक सकल विद्यार्थी खजौली मे पढ़ैत छल। कलुआही कुडोरि आ कने दूर सेहो पड़ैत छलै। कपरिया स्कूलक सह-प्रधान अध्यापक यमुना प्रसाद सिंह फीस माफ करा देबाक आश्वासन देने छलाह। ई हमरा बड़ मानैत छलाह आ जखन जे पोथीक प्रयोजन होइत छल पुस्तकालय सँ दैत छलाह। हम हिनका जनौ आनि दैत छलियनि ताही मे प्रसन्न रहैत छलाह। लोक सभ कहैत छल जे ई स्कूल ज्वाइन करबा सँ पूर्व नामी डकैत छलाह आ कतेको बेर जेल-यात्रा क' चुकल छलाह। पाँच हाथ नम्मा श्याम वर्ण खादी धोती-कुर्ता मे बेश भव्य देखाइ छलाह ई। हम कतेको खेप हिनका डाकूक रूप मे कल्पना करबाक प्रयास केने होयब, मुदा प्रत्येक बेर ई अपन एही भव्यरूप मे बिहुँसैत हमरा सामने ठाढ़ भ' जाइत छलाह।

1963 ई. मे मैट्रिक पास कयल। पास की कयल, परीक्षा सँ चारि दिन पूर्व गलफुल्ली-बोखार... । गाल पर जड़ी-बूट्टीक लेप आ देह पर चद्दरि देखि स्कूलक शिक्षक लोकनि परीक्षा छोड़ि देबाक सलाह देलनि—नीक विद्यार्थी छह, स्कूलो केँ तोरा सँ आशा छै आ एहि अवस्था मे तकर पूर्तिक संभावना संदिग्ध। परंच हम जनैत रही जे परीक्षाक फीस लेल हमरा दू कट्ठा खेत भरना राखए पड़ल अछि, वैद्यनाथ धाम सँ पढ़ुआ मामा पन्द्रह टाका आ कलकत्ता सँ ननूमामा ओ करिआ मामा तीस टाका पठओने छलाह। तें ऐ बेर जँ परीक्षा नञि देल तँ फेर पार नञि लागत। से परीक्षा देल आ पासो कयल—प्रथम श्रेणी मे। हमरा लोकनिक बैच नीक छल। एते नीक रिजल्ट कलुआही स्कूलक एहि सँ पूर्व नञि भेल छलै।

सामर्थ्य नञि छल, मुदा पढ़बाक इच्छा तँ छलहे। हमरो सँ बेसी इच्छा छलैक माक। स्कूल जाइत काल लोकक कौचर्य—राँड़-मसोमातक बेटा स्कूल जाइ छै। ओकरो तँ बिसरल नहिए छल होयतै। मधुबनी मे जगदीश नन्दन कॉलेज नवे बनल छलै, एगो गोदाम मे। ओकर प्रिंसिपल सँ भेट कयल। नीक लोक। कहलनि जे कोनहुना पचास टाकाक जोगार केने आउ बाँकी व्यवस्था हम क' देब। गाम घुरि मा केँ सभ बात कहलिए। एगो गम्हारिक गाछ बेचबाक ओरियान भेल, मुदा तैखन एक देआद ओइ पर अपन दाबी ठोकि देलनि। पंचैती बैसल, आ जेना सभ दिन होइत एलैए पचास टाकाक गाछ हमरा पचीस टाका मे हुनका द' देबए पड़ल। एमहर एक दिस कन्यागत लोकनिक आविर्भाव आ दोसर दिस दाइ-माइ लोकनिक सक्रियता सेहो बढ़ि गेल। अए कनियाँ, एते तँ पढ़लक बेटा, कुसमारे मे के एते पढ़ने अइ? आब तँ बियाह-दान करा दिऔ, नोकरी-चाकरी करत। अहाँक अपनो शरीर तँ ठीक नहिञे रहैए, पुतोहु अओती तँ उसास हैत। ओना दाइ-माइ कोनो फूसि नञि कहैत छलथिन। हमरा सँ पहिने ठीके केओ ओत' मैट्रिक पास नञि

केने छल। सत कही तँ लाठी-भाला आ माछ मारबाक बनसी, टापि तँ प्रायः सभ घर मे छलै मुदा पोथी नदारद। व्रत-उपवासक आधिक्य आ अम्बर चरखाक परिश्रम माक शरीर तोड़ि देने छलै। ओकरा अलसर पकड़ि लेने छलै जकर पता बड़ विलम्ब सँ चलल। आ हमर बियाह भ' गेल, नेपालक तराइ मे कल्याणपुर बाजार। आ ओही साल हमर पितिऔत शुकदेव ठाकुर गाम गेल छलाह, हुनके संग हम कलकत्ता आबि गेलौं—नोकरीक खोज मे।

आन्दोलन

भाइ साहेब अर्थात् शुकदेव ठाकुर जिनका हमरा लोकनि बौआ कहि संबोधन करैत छलियनि, ट्राम कंपनी मे नोकरी करैत छलाह। कंडक्टर छलाह। डेरा छलनि, 89 सदन एवेन्यू मे, जहाज कोठीक बगल मे, रवीन्द्र सरोबर स्टेडियमक अपोजिट। एगो छोट सन घर ताइ मे सात आदमी। बासोपट्टीक जयभद्र झा आ धनौजाक हुनक साढ़ू। बेल्हबारक बौआक ससुर संपर्कक उमाकांत झा आ कैथाहीक जटाधर झा। प्रथमोक्त तीनू व्यक्ति पंडिताइ करै छलाह आ जटाधर बाबू ट्राम कंपनी मे स्टाटर छलाह। बेल्हबारक कमलू नेशनल होमियो लेबोरेटरीज मे निम्न पदस्थ कर्मचारी छल जे डेरा मे भानस-भातक व्यवस्था करैत छल। एबज मे ओकरा घर भाड़ा आ खोराकीक पाइ नञि देबए पड़ैत छलै। एइ संख्या मे प्रायः योग-वियोग होइत रहैत छलै। ओना बाटक कात रहने ई सुविधा छलै जे अप आ डाउन बाटक बीच बेश चौड़ा रमना आ तइ पर पैघ-पैघ गाछ छलै जकर नीचा पटिया-सतरंजी ओछा लोक दुपहरिया मे विश्राम करैत छल। ओना सदन एवेन्यूक ई सुविधा अन्यत्र प्रायः नञि छलै। राजकमल चौधरी अपन कलकत्ता प्रवासक समय, जखनकि ओ पूर्व पुटिआरी मे रहैत छलाह, प्रायः साँझ-दुपहर एइठाम आबि जाइत छलाह, कहियो-काल तँ धोती कैँ लुँगी जकाँ पहिरने आ देह पर चलानी गंजी मात्र। चाह, तमाकू आ मिथिला-मैथिलीक गप्प। बौआक संग बेस आत्मीयता छलनि। ओ अपन 'स्वरगंधा'क परिशिष्ट-3 मे हिनक उल्लेख केने छथि। 'आन्दोलन'क विष्णुदेव ठाकुर बौए छथि। जे से। राति मे हमरा लोकनि सुतै छलौं बगलक रेडियो दोकानक बरंडा पर। दोकान मे बिकरी-बट्टा तँ नहिये होइ छलै, किछु भडठीक काज चलैत छलै आ ताही मे ओ दस बजे राति धरि खोलने रहैत छल। कहियो-काल तँ मालिकक जेठ भाइ जे कुबर आ कुमार छल आ दोकाने मे रहैत छल, कुरसी लगा बीच ठाम बैसि जाइत आ हमरा लोकनि टकटकी लगौने मनेमन ओकरा सरापैत रहितौं। कहबाक प्रयोजन नञि जे ताहि समय निम्नमध्यवित्त प्रवासी मैथिलक ई

स्थिति कलकत्ताक कोनो अंचल मे सहजहि देखल-पाओल जा सकैत छल।

कलकत्ता आयल छलौं नोकरीक उदेस मे। सरकारी नोकरीक वयस भेल नञि छल। प्रमाण पत्रक अनुसार पन्द्रहो नञि पुरल छल। तखन तँ भरोस प्राइवेटे नोकरीक। बौआ अखिल भारतीय मिथिला संघक वरिष्ठ सदस्य छलाह। कलकत्ता मैथिल समाजक रथी-महारथी सँ परिचय-पात छलनि, मुदा प्रयास करितो ओ हमरा कतौ पचासो टाकाक महिनाबला नोकरी नञि धरा सकलाह। मास तीनेक लेल नोपानी-निवासक एक पंडित छुट्टी पर गेल छलाह जनिक एवज मे रामायण पाठक काज कयल। संस्कृत पढ़नाइक फल प्राप्त भेल। बाद मे एक दोसर पितिऔतक प्रयासे एगो गुजरातीक दोकान मे पचास टाकाक तनखा पर नोकरी लागल। 1964 ई. कलकत्ता मे हिंदू-मुसलमान दंगा बझलै। चितपुर आ हरिसन रोडक क्रासिंग लग दोकान। सटले कलाबगान मछुआ मुसलमानक गढ़। हमर दोकानक बगले मे एगो मुसलमानक ड्राइ-फ्रुटक दोकान। एक दिन बेरिया मे दू गोट छौंड़ा केम्हरो सँ आयल आ बंद दोकानक ताला एगो छोटसन रौड सँ तोड़ि भीतर सँ एगो काँचक बुइयाम बहार क' बाट पर पटकि देलक आ पड़ायल। संगेसंग पुलिस फायर केलकै। आ कनिए लेल हम बाँचि गेल रही। होम मिनिस्टर गुलजारी लाल नन्दा ओही दिन देखिते गोली मारि देबाक आदेश देने छलथिन। दोकानक मालिक जे ओही मकानक छत पर रहैत छल, उपर सँ सभ देखैत छल। ओ आवाज देलक जे दोकान बन्द क' उपर चलि आउ। आ तकर प्राते छुट्टी भेटि गेल। स्थिति तेहने रहै जे कते दिन मे नॉरमल हेतै तकर अंदाज नञि छलै आ मालिक बैसा क' पाइ देबे किऐ करत। मुदा बीस दिन काज केने रही आ तकर मजूरी मात्र तेरह टाका देत तकर अंदाज नञि छल। बासा पर गेलौं तँ बौआ उनटे तमसएला। ओकरा लोकक प्रयोजन छलै तैँ ने तोरा रखने छलौं। तों निश्चिते काज मे फाँकी दै छलही। तों गाम चल जो, नोकरी कयल तोरा बुते पार नञि लगतौ। कमलू कैँ कहि हमर भानस सेहो बन्द करा देल गेल।

हम बासा छोड़ि देल मुदा गाम नञि जायब से निश्चित क' लेल। भोजनक समस्या गामो पर छलहे तखन कलकत्ते मे किऐ ने तकर सामना कयल जाय। कालीघाट पार्क लग सतीश मुखर्जी रोड मे बौआक छोट भाय इन्द्रदेव बंगाली कोठी मे भानसक काज करैत छलाह। मुखर्जी परिवार नीक लोक। बेर मे ओकर मकानक बहरिआ ओसारा पर मैथिल लोकनिक जुटान होइत छलै। ओइ दिन इन्द्रदेव भाइ सभ बात सुनि साहस देलनि। रातुक भोजन आ विश्रामक व्यवस्था भेल। साढ़े नौ बजे राति धरि मुखर्जी परिवार भोजन क' दुतल्ला पर विश्राम लेल चल जाइत छल। नीचाँ खाली भ' जाइत छलै। दू गोट खबास सेहो मैथिले। मेजनाइन फ्लोरक एक कमरा मे हिनका लोकनिक विश्रामक व्यवस्था। हम दिन भरि घुरि-फिरि राति दस

बजे गेट पर उपस्थित, बालचन गेट खोलि देथि आ हम चुपचाप मेजनाइन फ्लोरक कमरा मे चल जाइ। कनेकाल मे ओ खेनाइ परसने आबथि आ खायल भ' गेला पर फेर थारी-गिलास ल' जाथि। प्रात: छ सँ पूर्वहि हम घर सँ बाहर भ' जाइ। ई क्रम प्राय: मास दिन चलल। एही बीच एक दिन उदित बाबूक डेरा गेलौं। पहिने बौआक संग गेल रही तँ ओ बाद मे भेंट करैक बात कहने छलाह। बौआक संग तँ ट्राम-बस सँ गेल रही, परंच एइ बेर भाड़ाक पाइ नञि छल—तेरह टाका कतेक दिन चलैत। तँ कालीघाट सँ काशीपुर पयरे। ओ काशीपुर मे रहैत छलाह, जूट एसोसिएशनक चेयरमेन छलाह, ऑल इंडिया मैथिल संघक अध्यक्ष छलाह आ कलकत्ताक मैथिल समाज मे जे किछु पद-पाइवला लोक छल ताइ मे सँ एक छलाह। मुदा... । घुरतीकाल बड़ कष्ट भेल। अन्न-जल सँ भेट नञि, ताइ पर टहाटही रौद। शॉटकट रस्ता ज्ञात नञि। बौआक संग ट्राम सँ गेल रही तँ ट्रामे लाइन धेने जेनाइ-एनाइ। बाट मे कतौ सुस्तेबाक जगह नञि जेना कि सदन एवेन्यू मे छै। अबैत-अबैत गणेश टॉकीज लग एलौं तँ मन पड़ल तारा-सुन्दरी पार्क। गिरीश पार्क सँ लगीच। ओतै जा कने डाँड़ मोड़लौं, बाटक कल सँ भरिछाँक पानि पिलौं। आ फेर विदा भेलौं। ओइ दिन सत्ते भेल छल जे अपटीखेत मे प्राण गमेबा सँ नीक छल गामे घुरि गेनाइ। मुदा तकर दोसरे दिन एगो नोकरीक उदेस भेटल। हमर गामक जगदीश सिंह ब्लू-फॉक्स रेस्टोरेंट मे दरबानी करैत छल। ओ खबरि देलक जे स्काइरूम रेस्टोरेंट मे एक स्टोरकीपरक जगह खाली छै से भेंट करै लेल। स्काइरूम ब्लू-फॉक्सक मालिकक छोट भाइक छलै। दोसर दिन सबेर-सकाल हम पार्क स्ट्रीट पहुँचलौं आ जगदीश हमरा लेने ओकर मैनेजर साहनी साहेब लग गेल। नोकरी भ' गेल। साहनी साहेब पहलमान अर्थात् जगदीश सिंह केँ बड़ मानैत छलथिन।

स्टोर मे हमर पार्टनर छलाह दुल्लीपट्टीक रामकुमार झा। ब्लू-फॉक्सक स्टोर जे ओकर बगले मे छलै ताइ मे उछाल चचराहाक रामअशीष सिंह आ हुनक एक पितिऔत छल। हम आ रामकुमार ठीक केने छलौं जे प्रयोजने ओ कतौ जायत तँ हम ड्यूटी मे रहब आ हम जायब तँ ओ रहत। एहि तरहेँ हम रोज साँझक समय टाइप सिखबा लेल जाइ आ कहियो काल मैथिलीक आयोजन मे। महिना भेटए तँ बौआ केँ द' अबियनि जे ओ अपने संग बीमा क' देथिन। एक दिन साहनी साहेब कहलनि, पंडित तों जखन पढ़ल-लिखल छें तखन एहिठाम किऐ पड़ल छें? आइ सँ तों मेनू देखल कर आ कखनो-काल नीचा कीचेन मे जायल कर। हम तहिना कयल। पन्द्रह-बीस दिन पश्चात ओ हमरा लगेक शेहनाज होटलक बेद बाबू सँ भेट करै लेल कहलनि। तकर प्रात मेहरा साहेब जे एकाउण्टेंट हेबाक संगहि मालिकक भागिन सेहो छलाह, एगो टाइ लेने अयलाह। पेंट-शर्ट अपने छल। साहनी

साहेब अपन बाइक पर बैसा, भरिबाट संभावित प्रश्न आ तकर उत्तर बुझबैत हमरा शेहनाजक मालिक कोहली साहेबक दुआरि पर द' एलाह। हम भीतर गेलौं, इंटरव्यू देलौं आ नोकरी भेटि गेल। एक सय पचीस टाका महिना आ मनमोताबिक खेनाइ। पचास टाका सँ एक सय पचीस—जेना अलखक चान भेटि गेल हो।

खिदिरपुर अंचलक हेस्टिंग मे आइयो अछि ओ क्लाब—आर्डनेन्स क्लाब। आरमी आर्डनेन्स कोर द्वारा परिचालित विशाल क्लाब। स्वीमिंग पूल, टेनिस कोर्ट, बैडमिंटन कोर्ट, बिलियर्ड रूम, कार्ड रूम, टेबुल टेनिस रूम, हॉल, बार... । आरमीक संगहि सिविलियन लेल सेहो मेम्बरशीपक द्वार उन्मुक्त। कैटरिंग कंट्राक्ट शेहनाजक। तत्कालीन क्लाब प्रेसिडेंट कर्नल एस.एन.पंडित कोहली साहेबक विशेष बन्धु। दुनू मोना पंजाबी। एहीठाम हमर पोस्टिंग भेल, किचेन सुपरवाइजर-कम-स्टिवार्ड। बच्चा स्टिवार्डक रूप मे परिचित आ प्राय: सभक स्नेह भाजन। इएह कारण छलै जे 1969 ई. मे जखन हम आयकर विभाग मे ज्वाइन कयल तँ कोहली साहेब छोड़ै लेल तैयार नञि। हुनक आग्रह छलनि एक घंटा भिनसर आ आठ सँ एगारहक रातिक काज हम सम्हारि दिअनि, खेनाइ-पिनाइ आ तनखा जे भेटैत अछि से भेटिते रहत। एगारह बाजि गेने टैक्सी फेयर भेटत। मुदा हमरा तँ कॉलेज ज्वाइन करैक नशा छल। तँ आयकरक एक सय तीस रुपया सुक्खा पर्याप्त। ओना ऑर्डनेस क्लाबक अवदान हमरा जीवन पर्यन्त मन रहत। आर्थिक स्वाबलंबनक संगहि अंग्रेजी साहित्य, जकर भरमार एकर लाइब्रेरी मे छलै, आ अंग्रेजी शराबक ज्ञान एकरे देन थिक।

हमर आयकर विभाग ज्वाइन करैक घटना सेहो अद्‌भुत आ तँ उल्लेखनीय अछि। लिखित परीक्षा पास केलाक पश्चात मौखिक लेल बजाहटि छल। प्राय: शताधिक परीक्षार्थी। जखन हमर नम्बर आयल तँ देखल जे तीन गोट परीक्षक छथि। एगो बंगाली, दोसर सरदारजी आ तेसर आंग्ल। प्रश्नकर्ता बंगाली महोदय नाम पुछलनि। कहलियनि। दोसर प्रश्न छल—की अहाँ बिहारी छी? माथ मे ठक द' लागल। जानि ने किऐ हमरा जेना ओ गारि पढ़ैत हो। परंच नोकरीक प्रश्न छलै तँ स्वयं केँ संयत रखैत कहलियनि—पॉलिटिकली अपने हमरा बिहारी कहिए सकैत छी मुदा वास्तव मे हम मैथिल छी, मैथिली भाषी। हमर बात सुनिते जेना भद्रलोकक मुँह पर एक अपूर्व आभा देखना गेल। ओ विभोर सन होइत पुछलनि—ओ विद्दापती! विद्दापतीक देश। बंगाली लोकनि द्यक उच्चारण द्द सन करैत छथि आ 'ति' लिखितो 'ती' बजैत छथि। हमर छोटसन 'हँ' उत्तर सुनैत ओ पुछलनि जे हमरा विद्यापतिक कोनो गीत अबैए कि नञि? हमर उत्तर छल—सैकड़ो गीत अबैए। फेर ओ एगो सुनेबाक आग्रह केलनि। आ हम हुनका 'आजु नाथ एक व्रत... ' सुना देल। तखन इएह गीत मन पड़ल। संगहि पता ने कोना फुरायल, ईहो कहलियनि जे ई

विद्यापतिक पहिल गीत रचना थिकनि। फेर गीतक अर्थ कहै लेल कहल गेल, कारण दोसर आ तेसर परीक्षक केँ बोधगम्य नञि भेल छलनि। आ अर्थ कहलाक बाद हमरा सधन्यवाद विदा कयल गेल। सरकारी ऑफिसक किरानीक नोकरी आ विद्यापतिक गीत! मन गुन-धुन करैत छल। मुदा दस दिनक भितरे बहालीक पत्र भेटि गेल।

आयकर ज्वाइन केलाक पश्चात कॉलेज ज्वाइन कयल। लेकरोडक चारूचन्द्र कॉलेज, सान्ध्य विभाग। डेरा सँ नजदीक पड़ैत छल। कॉलेज ज्वाइन करिते मा केँ पत्र देलिऐ। ओकर तँ स्वाभाविके आनंदक सीमा नञि रहलै, परंच पत्नी, श्रीमती सीता ठकुराइन बाजल छली—आब बेटा पढ़ैवला भेलनिहें तँ अपने पढ़ए गेलाहए। लोक तँ नोकरीए-चाकरी लेल ने पढ़ैए आ से तँ करिते छथि। हमरा लागल छल जेना ई बात हमर पत्नी नञि हमर तत्कालीन समाज बाजि रहल हो। मा निश्चिते तकर अपवाद छलि। हमर पत्नी पढ़ल-लिखल नञि छथि। बियाहक पश्चात् कही तँ कोबरे सँ हम हुनका आखर सँ परिचय करेबाक प्रयास कयल, मुदा मात्रा-ज्ञान करा पायब संभव नञि भेल। एक तँ नोकरीक खोज मे शीघ्रे गाम छोड़ए पड़ल छल आ दोसर कारण ओ स्वयं छली—हमरा कि नोकरी करैक अछि, चिठिए पुरजी ने? से तते आबि गेल। आ से तेहन अयलनि जे हुनकर चिठी हमहीं टा पढ़ि सकैत छी—घर न खरच छ, टक' पठब' त पठब' न त सब मरब'। आ विडम्बना देखू जे तीन बालक मे केओ अपन मा सँ आगाँ नञि बढ़ि सकला। जीवकांत भाइ खजौली स्कूल मे छला, सम्मानित शिक्षक। हुनके सँ विचार-विमर्श क' अपन जेठ बालक केँ होस्टल मे देल। भाइक छोट बालक बी. झाक संग प्राय: एके वर्ग मे। मुदा दू-तीन मास मे होस्टल सँ पड़ा गेला। माध्यमिक परीक्षा तँ देलनि मुदा सम्मानक संग फेल केलनि आ दोबारा नञि देलनि। माझिल केँ सेहो जीवकांत भाइ यादव जी सँ ट्यूशनक व्यवस्था क' देने छलथिन, मुदा ओ ठामहि जुआ पटकि देलनि—हमरा आर जे काज कहब से कहू मुदा पढ़ल नञि पार लागत। तेहन-तेहन कांड करए लगला जे डरे छोड़ि देल। छोट बालक अपने संग कोलकाता मे छथि, कुथि-कुथि क' ओपेन स्कूल सँ दसम पास कयलनि। लोक सभ कहैए जे धीया-पुता केँ नञि पढ़ाओल। ठीके कहैए। तेसर अछि ननकिड़बी। एतै सँ बी.ए. आनर्स, एम.ए. (हिंदी) केलक।

1 अप्रील 1982। आफिस सँ घुरलौं तँ मन जेना अशांत बुझना गेल। बेर-बेर मा मन पड़ैत छल। 2 केँ आफिस गेलौं आ ओम्हरे सँ हावड़ा टीशन जा नार्थ बिहार एक्सप्रेस पकड़ि गामक यात्रा। कलुआही सँ रिक्सा सँ गाम जाइत काल भल्ली मे भेटली हमर एक भाउज (पितिऔतक पत्नी)। कहलनि—बौआ, एक दिन पहिने नञि आबि भेल? भौजी केँ की कहितियनि। हमरा की पता छल जे एक दिन मे

हमर दुनिया बदलि जायत। जे पुत्तर परदेसी भेल, देव पितर तीनू सँ गेल—कहबी जे हमरे संग चरितार्थ होयत से कहाँ जानल छल। नान्हि टा मे माक संग कार्तिक-माघ प्रात: स्नान करैत रही। बिनु पूजा कयने अन्न-जल नञि ग्रहण करैत रही। धर्म-कर्म आ ईश्वक प्रति आस्था तँ पहिनहि मार्क्सवादक संस्पर्श मे क्षीण-प्राय भ' गेल छल। तथापि अंतर मे जँ किछु बचल-खुचल छल होयत से ताही दिन विलुप्त भ' गेल।

माक पहिल वा दोसर बरखी मे गाम गेल रही। पता लागल जे बालक पर घटक अबै छथि आ पचीस-पचास हजारक बात होइछ। पत्नीक मन सेहो बियाहक पक्ष मे। चिंता भेल जे ई कहीं लोकक कहल मे आबि पाइ ने ल' लेथि। तँ हमरा समक्ष जे घटक एलाह तनिका गछि लेल। टोलक एक व्यक्ति सँ किछु कर्ज ल' बेटाक बियाह कराओल। कारण अपने तँ ततबे पाइ छल जाइ सँ माइक बरखीक खर्च संभव। आ बेटा-पुतोहु केँ गाम छोड़ि पत्नी आ छोट धीया-पुता केँ ल' कलकत्ता आबि गेलौं। आइ पत्नी अपन पोता केँ पढ़ेबा लेल पागल भेल छथि, मुदा हम जँ कोनो नव पोथी अनैत छी वा अपने पोथी छपबैत छी तँ ओ टोकि देबे करती—अनने तँ जाइ छी, मुदा राखब कतए? ओना कोनो साहित्यकार बंधु किंवा मैथिली आंदोलनी जँ आबि जाइत छथि तँ हमरा सँ बेसी प्रसन्नता हुनके होइत छनि आ हमर विचार जे भात-दालि आ एगो तरकारी जे अपने खाइ छी ताइ सँ बेसीक व्यवस्था नञि हो, ताकि पाहुन बोझ नञि बुझाथि, केँ ओ ओवरटेक करबाक हरसंभव प्रयास करती, से नञि भेने गृह-कलह। सुभाष सँ कमलेश जी धरि केँ एकर आभास भेल होनि से संभव थिक। एमहर ओ पेट मे अलसर सेहो पोसने छथि। डाकडर कहै छनि जे पेट खाली नञि रहनि, मुदा ओ दू सँ पहिने कहियो ने खयती। पूजापाठ करै छथि। अपने हम लो प्रेसरक मरीज छी, हुनका हाइ प्रेसर छनि। रोज प्रात: आठ बजे गोटी खयबाक बात। कहियो नौ बजे तँ कहियो दस बजे खाइ छथि। कहियो राति मे बजती—हमर देह जेना पताइए। आइ भरिसक गोटी नञि खेलिअइ! आ तखन जा क' गोटी खा लेती। आँखि सेहो खराप छनि। एक आँखिक नेत्र-नालीक ऑपरेशन प्राय: पाँच बर्ख पूर्व भेल छलनि, तेहन कांड बेसाहने छली जे अपनो डेरा गेल रही। तँ दोसर बाकिए छनि। संस्कार बड़ तेज। लहठी-सिनुरक संग मुइने ने कि सोझे स्वर्ग जाइत छथि महिला लोकनि। तेहने कामना छनि।

पी.यू. मे पढ़ैत रही ताही समय कोनो मंच सँ प्रबोध बाबूक भाषण सुनल जे छात्रक अभाव मे कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ कहियो मैथिली केँ हटा देल जा सकैछ। पी.यू. पास केलाक पश्चात हम एक दिन हुनका डेरा पहुँचलौं आ बी.ए. मे मैथिली रखबाक इच्छा प्रकट करैत सहयोगक आग्रह कयल, परंच ओ स्पष्ट कहलनि जे

एक टा विद्यार्थी सँ संभव नञि, कम सँ कम दसो टा विद्यार्थी तँ हेबाक चाही। मुदा हम तँ जे ठानि लेल से ठानि लेल। मैथिली रखबाक अछि तँ रखबाक अछि। पहुँचलौं अपन कॉलेजक भाइस प्रिंसिपल सी.एन. दास लग। ओ हमरा बड़ मानैत छलाह। तकरो कारण छलै। ओनहुना छात्र हिसाबें हम अधलाह नञि छलौं। मुदा कारण इएह टा नञि छलै। हम जहिया पी.यू. मे एडमिशन लेबाक लेल गेल रही ता एडमिशन बन्द भ' गेल रहै। कॉलेजक केअर-टेकर राधाकृष्ण चौधरी अपन लोक छलाह, नाटक करैत रही तँ नीक जकाँ चिन्हैत छलाह। हुनके संग गेल रही। दास साहेब हमर पूर्ण परिचय लेलाक पश्चात बाजल छलाह जे बिहारक पढ़ाइ ठीक नञि छै, ओतय सँ जे फर्स्ट डिविजन मे पास क' क' अबैछ एहिठाम पासो नञि क' पबैछ। हम कहलियनि, श्रीमान तकर कारण तँ ईहो छै ने जे ओइठामक माध्यम हिंदी छै। एइठाम ओकरा अंग्रेजीक माध्यम सँ पढ़य पड़ैत छै, परीक्षा देबए पड़ैत छै, जखनकि कॉलेज मे लेकचर प्राय: बांग्ला मे होइत छै। ओनहुना हम 1963 ई. मे मैट्रिक कयल आ तकर बादे सँ नोकरीक पाछाँ व्यस्त रहलौं, पोथी सँ सम्पर्क नहिये सन, तथापि हमर अनुरोध जे अपनेक कॉलेज मे तँ अबस्से केओ प्रथम श्रेणीक छात्र होयताह, हुनका बजाओल जाय। जँ हम हुनका सँ झूस प्रमाणित होइ तँ हम स्वत: आपस चल जायब। दास साहेब आपादमस्तक हमरा निहारैत फोन उठा ऑफिस मे आदेश देलथिन—राधाकेष्टो एक टा छेले के लिए जाच्छे, एडमिशन लिए लिओ। आ तकर पश्चात भरिसके कोनो दिन बितल होयत जहिया ओ हमर खोज-पूछारि नञि केने होथि। से दास साहेब बड़ सहानुभूति पूर्वक कहलनि जे मैथिलीक अध्यापक तँ नञि छै तखन बीस टाका फीस भरि नन-कॉलेजिएटक रूप मे परीक्षा द' सकै छी आ हम तहिना कयल। आर दस टाका खर्च क'क' दरभंगा बिल्डिंग सँ एगो फाटल-चिटल सिलेबस उपराओल। 'मिथिला भाषा रामायण' तँ अपना लग छल, मुदा 'कीचक' वधक नमो नञि सुनल। संयोग सँ एक दिन कोनो बैसारक क्रम मे प्रबोध बाबूक ओतय बैसल रही। हम आ नचिकेता। आर लोक सभ नञि जुमल छलाह। तैखन हुनक बुक-सेल्फ मे एगो दुधकट्टू सन पोथी पर नजरि पड़ल, बहार कयल—'कीचक वध'। ओहीठाम पढ़ि ओकरा यथास्थान राखि देल। एहिठाम लिखनाइ प्राय: अनर्गल नञि होयत जे हम अपन उत्तर-पुस्तिका मिथिलाक्षर मे लिखने रही।

सदन एवेन्यू बासा मे पढ़ाइ-लिखाइ मे असौकर्य हेबाक कारणें हमरा लोकनि अर्थात् हम आ भाइ साहेब 33/5, डॉ. देवदार रहमान रोड मे बासा लेल। पोस्टल जोनक हिसाबें ई टालीगंज मे पड़ितो, छल धरि लेकगार्डेन्स एरिया मे। लेक गार्डेन्स मे ओइ समय प्रबोध बाबूक अतिरिक्त श्रीकान्त मंडल, गुणनाथ झा आ मोहन चौधरी रहैत छलाह। गुणनाथ जी ओइ समय पूर्ण एक्टिव छलाह। रोज भिनसर केँ हम,

गुणनाथ जी आ श्रीकान्त अजीत दाक चाह दोकान मे अड्डा दैत रही। अजीत दा नीक लोक छल। ओ गनैत रहैत छल जे हम सभ कय कप चाह पिलौं। पाँच कप पुरिते कहैत—आपनादेर पाँच राउण्ड होए गेछे, आर देबा होबे ना। सीपीएमक समर्थक हेबाक कारणें एक राति एकरो दोकानक चीज-वस्तु तोड़ि-फोड़ि देल गेलै, ओ प्राय: फेर चालू नञि भेलै।

हमर आ गुणनाथ जीक ऑफिसो प्राय: एकेठाम छल। हमर आयकर भवन आ हुनकर मेट्रोपोलिटन बिल्डिंग प्राय: टू मिनिटक वाकिंग डिस्टेंस। तेँ रोज टिफिन टाइम मे हमरा लोकनिक बैसार होइत—कहियो ऑफिसे मे तँ कहियो कोनो चाहक दोकान मे। आ साँझक अड्डाक चर्च तँ अग्निपुष्प अपन आलेख मे कयनहि छथि। ओना शैली मे कहियो-काल गुणनाथ जी आ मोहन चौधरी सेहो रहैत छलाह आ तहिना रहैत छलाह दयानाथ झा आ रामप्रसाद राय।

लेकगार्डेन्स मे हम बहुत दिन रहल छी। आ एही अवधि मे हमरा पाँच टा डेरा बदलए पड़ल छल—कहियो मकान मालिकक कारणें तँ कहियो घर नीक नञि रहैक कारणें, तँ कहियो राजनैतिक कारणें जकर संकेत अग्निपुष्पक आलेख मे देखल जा सकैछ। मुक्तिक दशक केर रूप मे घोषित एहि सत्तरि दशकक हजारो मुक्तिकामी योद्धाक बलिदान भनहि मुक्ति नञि दिया पओने हो, मुदा ओ जे व्यर्थ नञि गेल ताइ मे संदेहक कोनो अवकाश नञि। जे से। एक टा घर तँ मात्र दू मास मे छोड़ए पड़ल छल। कुणाल सेहो छलाह। भिनसर जे नहाक' तौनी-लुंगी धोइ से दोसरो दिन धरि नञि सुखाए। पोथी-पत्रिका सड़ि गेल—तेहने सिमसिमाह घर। एगो घर मे संग छलाह बाबाक जमाए रत्नेश चौधरी। बाबा एकरा पोर्टेबुल घर कहैत छलाह। 'इतिहासहंता'क प्रकाशन एही घर सँ भेल अछि। एही एरिया मे किछु दिनुक पश्चात भेटला विनोद कुमार झा। गेल तँ रही कोनो दोसर मैथिलक खोज मे, मुदा ओइ घर सँ बहरेला विनोद जी। अपरिचित होइतो बेश आत्मीयता देखओलनि आ पश्चात हमरा लोकनिक बीच बेश घनिष्ठता भेल। बाद मे हमर ग्रामीण सतन झा सेहो लेक गार्डेन्स आबि गेलाह आ हमारा लोकनि 'देसकोस' पत्रिका बहार कयल। पत्रक संपादन हम स्वयं करैत रही कुणालक सहयोग सँ, मुदा संपादक मे नाम विनोद जीक देल गेलनि। पत्र केँ शनिक दृष्टि सँ बचेबाक लेल हम अपन नाम गुप्ते राखल। स्पष्ट छै जे हमर लिखल संपादकीय 'मिथिला मिहिर' जेना भीतर कवर पर अक्षरश: छपने छल से किन्नहुँ नञि छपैत जँ ओइ ठाम हमर नाम रहितै। हमर भाषा-ज्ञान पर प्रश्नचिन्ह ठाढ़ करैवला, हमर 'इतिहासंता' केँ इतिहास सेहन्ता लिखैवला 'मिहिर'क दुरभिसंधि हम बिसरियो केना सकै छी। वस्तुत: 'देसकोस' मे तालव्य 'श'क स्थान पर 'स'क प्रयोगक पृष्ठभूमिओ इएह छल जकर प्रयोग

सर्वप्रथम हम 'मिथिला भूमि'क कोनो अंक मे 'कलकतिया देखलक गाम' मे केने रही। विनोद जी हिमालया पब्लिशिंग मे कार्यरत छलाह आ तेँ प्रेस लाइनक नीक ज्ञान छलनि जे पत्रिकाक रूप-रंग आकर्षक बनेबा मे महत्त्वपूर्ण छल। मुदा मतपार्थक्यक कारणें प्रायः तेसर अंकक पश्चाते हम पत्र सँ स्वयं केँ पृथक क' लेल आ विनोदे जी ओकरा चलओलनि। हम 'देसिल' बयना नामे दोसर पत्र बहार कयल, जाइ मे उषाक कर्मी जनार्दन झा एवं रामाधार मिश्र, रिजर्व बैंकक निरसन लाभ आ यूबीआइक महेश्वर झा हमर सहयात्री छलाह। एतौ संपादक मे जनार्दन झाक नाम छपैत छल जखनकि संपादन हम स्वयं करैत छलौं। ई पत्रिका वस्तुतः आन्दोलनक मुखपत्र छल जकर मुख-पृष्ठ पर नामक नीचा—'संविधान बिनु मैथिलीक ओ मानचित्र बिनु मिथिलाधाम। डाहि-जारि सुड्डाह करब हम विद्रोही मिथिलाक जुआन।' छपैत छल। एहि पत्र मे 'मिथिला विभूति', 'गाम सँ दूर मिथिलाक मजदूर' आ 'लालबुझक्कर चिट्ठी' स्थायी स्तंभ छल जे हम स्वयं लिखैत छलौं। ई सभ 1981-82 ई. क घटना थिक।

जेना कि पहिनहि कहि आयल छी, कलकत्ता आयल छलौं नोकरीक उदेस मे, परंच से तेँ बहुत बाद मे भेटल, पहिने भेटल मैथिली। भाइ साहेब अखिल भारतीय मिथिला संघक वरिष्ठ सदस्य छलाह, स्वभावतः हमरो सम्पर्क ओही संस्था सँ आ ओकरे माध्यमे मैथिलीक कार्य। ओइ समय कलकत्ता मे कैक टा संस्था कार्यरत छल। 1952 मे डॉ. लक्ष्मण झाक मिथिला राज्य आन्दोलनक क्रम मे बनल मिथिला लोक संघ आ मैथिल संघक विलय 1957 मे प्रो. हरिमोहन झा आ मणिपद्मक प्रयासें भेल अबस्से छल, परंच से दीर्घस्थायी नञि भेल आ केसा-केसीक पश्चात् लोक संघ ग्रूप जकर नेतृत्व मे प्रो. प्रबोध नारायण सिंह, बाबू साहेब चौधरी, देवनारायण झा आदि छलाह, अखिल भारतीय मिथिला संघक पंजीकरण करा पृथक भ' गेल। दोसर ग्रूप, जाइ मे मिथिलेन्दु जी, उदित बाबू, पीताम्बर पाठक आदि छलाह से ऑल इण्डिया मैथिल संघ नामे कार्य करय लागल। एक ग्रूप संघ सँ पूर्वहि पृथक भ' मिथिला सांस्कृतिक परिषदक स्थापना कयलक जकर मुख्यकार्य भेलै पोथीक प्रकाशन। एहि संस्था मे महेन्द्रनारायण झा, परमेश्वर मिश्र, चन्द्रकान्त मिश्र, मुकुटधारी मिश्र, किशोरी कान्त मिश्र आदि छलाह। प्रकाशन समिति मे छलाह महेन्द्र ना. झा, मदन चौधरी, इन्द्रगोविन्द झा आदि। ई संस्था 'मैथिली प्रकाश' शोध-पत्रिका बहार करैत छल। नाटकक संस्था छल 'मिथिला कला केन्द्र' जकर संस्थापक वा स्तंभ छलाह शुकदेव ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, मोहन चौधरी आ लक्ष्मीनारायण मिश्र। संघक विभाजनक प्रभाव कला केन्द्र पर पड़लै, परिणामतः 1966 ई. मे अ. भा. मिथिला संघ समर्थक ग्रुप पृथक 'मैथिली रंगमंच'क स्थापना कयलनि आ बाकी सदस्य जे

ऑल इण्डिया मैथिल संघक समर्थक छलाह 1970 ई. मे 'मिथि यात्रिक' बनओलनि। एहि संस्था मे गुणनाथ झा, दयानाथ झा, फेकू मिश्र, राजेन्द्र मल्लिक, वीरेन्द्र मल्लिक, निरसन लाभ, शंकर झा, विश्वंभर ठाकुर आदि छलाह। मैथिली रंगमंच मे बाबू साहेब चौधरी, सीताराम चौधरी, मोहन चौधरी, शुकदेव ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, रामलोचन ठाकुर, जनार्दन झा, इन्द्रनारायण झा, अणिमा सिंह, नरेन्द्र झा आदि छलाह। रंगमंच नाटक मंचनक संगहि मंचित नाटकक प्रकाशन सेहो करैत छल आ दू टाका किंवा बेसीक टिकस किननिहार केँ एक प्रति देल जाइत छलै, जखनकि एक टाकाक टिकस लेनिहार मात्र मंचन देखि सकैत छल। हमर कलकत्ता-रंग-अभियान एही मैथिली रंगमंचक संग आरंभ होइछ—'सुखायल डारि : नव पल्लव' मे अभिनयक संग। निर्देशक छलाह प्रवीर मुखर्जी, बांग्लाक 'राजा-साजा'क निर्देशक ओ नाट्यकार। सीताराम चौधरीक एक कमराक डेरा, 7, अपूर्व मित्र रोड, कलकत्ता-26, मे रंगमंचक संगहि 'राजा-साजा' नाटकक सेहो रिहर्सल होइत छलै आ ओकर कलाकार लोकनि जेना—प्रभाष चक्रवर्ती, शिशिर दास, विलीन दास आदि सेहो प्रयोजने मैथिली नाटक मे अभिनय करैत छलाह। प्रायः मैथिली रंगमंच आ भारतीय मिथिला संघक सकल नाटक मे नायकक भूमिका करैक कारणें हिनका लोकनिक संगहि लाइटमैन सुशील दास ओ मेकअप मैन अजय घोष आदि हमरा 'हीरो' कहि संबोधित करैत छलाह। 1967 ई. क घटना थिक। बाबू साहेब चौधरीक 'कुहेस' नाटकक पूर्वाभ्यास होइत छलै। संस्थागत राजनीतिक कारणें चौधरीजी कालीकान्त ठाकुर केँ ल' अनलनि रामकुमारक भूमिका देबाक लोभ देखाक'। कालीकान्त कला केन्द्र मे छलाह फेस-फिगर सँ उत्तम कुमार बुझू। प्रवीर बाबू केँ ई बात अनसोहाँत लगलनि। ओ स्पष्ट कहलथिन जे चौधरीजी हम अहाँक सम्मान करै छी, मुदा जहाँ धरि नाट्य-मंचक प्रश्न छै ताइ मे अपनेक हस्तक्षेप हमारा पसिन नञि, हम रामलोचन केँ नायकक भूमिका लेल तैयार केने छी तेँ ओ रामकुमारक भूमिका छोड़ि आन भूमिका नञि करत। चौधरी जीक बड़ कहला पर ओ एही शर्त पर राजी भेलाह जे नाटकक शेष दृश्य ओ लिखता। सैह भेल आ रामकुमार जे जहर खा मरि जाइत छल तकरा अस्पताल पठा बँचाओल गेलै। एक नव भूमिका डाकडरक जोड़ल गेलै, जे हम केने रही। दुखान्त नाटक सुखान्त बनि गेल। ओना विडम्बना देखू जे ई नाटक बड़ बेसी मंचित भेलै आ बादक समस्त मंचन मे रामकुमारक भूमिका हमरे करय पड़ल छल—गोड्डा सँ धनबाद धरि।

1970 ई. मे गोड्डा मे कैरव जी एक पैघ आयोजन केने छलाह। दू दिनक प्रोग्राम। हमरा लोकनि नाटक मंचस्थ करै लेल गेल रही। दिन मे विचार गोष्ठी आ कवि-सम्मेलन होइ तथा राति मे नाटक। प्रायः समस्त वरिष्ठ कवि सभक समावेश

भेल छल। वयोवृद्ध 'द्विजवर' जीक दर्शन तथा किसुन जीक पांडित्य ओ संचालन क्षमताक परिचय ओहीठाम भेटल। पहिल राति हमरा लोकनि 'कुहेस' आ दोसर राति 'चोर' मंचित केने रही। दोसर दिन भिनसर मे गामक बाहरक पोखरि मे स्नान करै लेल जाइत काल देखल जे प्रायः सभ आँगनक कोनटा लग महिला लोकनि भीड़ केने रातुक नाटकक नायक रामकुमारक परिचय एक दोसर केँ दैत। सत्ते, तहिया हमरा अपना केँ कोनो फिल्मी हीरो सँ कम नञि बुझायल छल। गोड्डा हाइ स्कूलक अंगनइक दर्शकक भीड़ आइयो नञि बिसरि पाओलए। भरिसक एही आयोजनक प्रभाव छल जे 1972 ई. मे दुमका कॉलेज मे विदित जीक प्रयासे भव्य आयोजन भेल। एहि मे हम कविता पढ़ै लेल गेल रही। भोजन काल भाइ दोषी आ सरस जीक प्रतियोगिता मनोरम छल। मुदा गोड्डा अभियानक परिणाम भेल जे रंगमंच टूटि गेल। सीताराम चौधरी, मोहन चौधरी, श्रीकांत मंडल आदि गोड्डा जेबाक पक्ष मे नञि छलाह परंच बाबू साहेब चौधरी गछि लेने छलथिन आ तकरा अ.भा. मिथिला संघक प्रतिष्ठाक संग जोड़ि देल गेल छलै। एकर पश्चात् संघेक बैनर तर हमरा लोकनि धनबाद गेलौं आ ओतौ कुहेस मंचित भेल।

1973 ई. मे मैथिली रंगमंच केँ पुनर्गठित कयल गेल आ एइ मे मुख्य भूमिका हमर छल—भनहि लोक नञि मानओ। एही साल 'मिथि यात्रिक' 'शेष नञ' मंचित केने छल जाइ मे श्रीकांत मंडल केँ मंच निर्देशक बनाओल गेल छलै। रंगमंच मे ओ निर्देशन करैत छल। हमरा ओकर ई भूमिका देखि कचोट भेल। श्रीकान्त मे भनहि शिक्षाक अभाव छलै, मुदा ओ अभिनय मे पटु छल आ मंचक वा मंच तकनीकक नीक ज्ञान छलै—मैथिलीक कोनो रंगकर्मी सँ बेसी। आ सभ सँ महत्त्वपूर्ण ई जे ओ नाटक-मंचक समर्पित कर्मी छल। रंगमंचक बन्न होयब जेना ओकरा बेचैन क' देने होइ। ओ नाटक बिनु रहिए ने सकैत छल, तेँ हिंदी मंच धरि गेल। हमरा हृदय मे ओकरा लेल स्नेह आ सम्मान दुनू छल, परंच विवादो ओकरे संग होइत छल। से जे हो, रंगमंचक पुनर्गठनक समस्त योजना भाइसाहेब अर्थात नरेन्द्र झाक संग हुनके बासा मे बनल आ श्रीकान्तो केँ बादे मे कहल गेलै। अणिमा जी केँ अध्यक्ष बनाओल गेल। एइ बीच प्रबोध बाबू आ बाबू साहेब चौधरीक बीच सम्पर्क नीक नञि रहबाक कारणेँ चौधरी जी केँ ई बात नञि अरघलनि आ हम संघ सँ इस्तिफा द' देल। दोसर प्रयास नचिकेताक 'एक छल राजा'क मंचन सँ आरंभ भेल। 1974 ई. मे 'रंगमंच' नामक नाट्यविषयक पत्र हमरा संपादन मे बहार भेल मुदा ओकर प्रशंसा भेनाइए घातक प्रमाणित भेल। जखन हम दोसर अंकक सुर-सार करैत रचना लेल लेखक लोकनि केँ लिखलियनि तँ नचिकेता लिखलनि जे प्रेमशंकर सिंह सेहो पत्र लिखने छलथिन, 'रंगमंच'क संपादन ने कि उएह करता। हम पहिने श्रीकान्ते सँ निस्तुकी

करय चाहल। ओ कहलक जे हँ सभक एहने विचार छनि। ओ प्रोफेसर छथि, संपादक मे हुनक नाम रहने पत्रिका विश्वविद्यालयक कोर्स मे लागि जेतै। हमरा स्वाभाविके तामस भेल। पत्रिका कोर्स मे लागि जेतै आ बिना बैसारे सभक विचार—हमरा तकर कोनो सूचना नञि। ओना पहिल अंक मे सेहो एहन प्रयास भेल छलै। पत्रिकाक कवर टा बाकी छलै तखन वीरेन्द्र जी आ श्रीकान्त ने कि भाइ साहेबक सहमति सँ संपादक मे अणिमा जीकनाम देबा लेल प्रेस मे कहि एलथिन। प्राण सिन्हा, जे पत्रिका छापैत छल, उएह सूचना देने छल। जे हेतु ई प्रयास हमरा सँ बिनु विचारने भेल छलै तेँ हमरा स्वीकार नञि। परिणामतः 'रंगमंच'क दोसर अंक बहार नञि भ' सकल।

फेर 1975 ई. मे महेन्द्र मलंगियाक 'नसबंदी' खेलेबाक विचार भेल। अणिमा जीक कथन छलनि जे एकर नाम बदलि 'परिवार कल्याण' या एहने सन किछु क' देल जाइ, कारण 'नसबंदी' मे अश्लीलताक आभास छै। आन सदस्य सभ राजी भ' गेला परंच हम विरोध कयल। हमर मान्यता छल आ आइयो अछि जे नाटककार जे कहय चाहै छथि तकरा बेसी सँ बेसी प्रभावी ढंग सँ प्रस्तुत करबे मे निर्देशक आ कलाकारक सामर्थ्य सन्निहित छै, ओकर काट-छाँट करबा मे नञि। ओनहुना नसबंदी कोनो अश्लील शब्द नञि छै। मुदा श्रीकान्त अड़ि गेल आ मुख्य भूमिका लेल जे गौतम भारतीक चयन भेल छल तिनको मना क' देल गेलनि। हम एकरा चैलेंजक रूप मे लेल आ ओ भूमिका स्वयं कयल। निर्देशक कुणाल भेलाह जे कही तँ कलकत्ता मंचक लेल नवे छलाह। एही नाटक मे पहिल खेप अग्निपुष्प सेहो एक भूमिकाक निर्वाह केने छलाह। एही संग मलंगियाक 'लेभरायल अन्हार मे एक टा इजोत' आ गंगेश गुंजनक 'आइ भोर'क सेहो तैयारी भेलै परंच हॉल नञि उपलब्ध कराओल गेलै आ प्रबोध बाबूक छत पर अभिनयक आयोजन भेलै। ई एक टा विडंबना छलै जे पश्चात् चेम्बर ड्रामाक पहिल प्रस्तुतिक रूप मे मंचक उपलब्धि भ' गेलै। ओना एकर प्रस्तुति सदस्य लोकनि केँ तते नीक लगलनि जे ओही सालक वार्षिक अधिवेशनक अवसर पर रवीन्द्र सरोवर स्टेडियमक मंच सँ एकरा पुनः प्रदर्शित कयल गेल। किन्तु रंगमंच मे दड़ारि फाटि गेलै। 1976 ई. फरवरी मे हम, कुणाल आदि 'जादूगर' आ 'रिहर्सल' मंचित कयल। इमरजेन्सीक समय छलै आ जादूगर क्रीतदास प्रथाक पृष्ठभूमि मे रचित यात्रा शैलीक क्रांतिकारी नाटक। विपक्ष सगरो प्रचार कयलक जे ओ जेँ कि नक्सलाइट नाटक छै आ प्रतिबंधित छै तेँ कलाकारक संगहि दर्शक केँ सेहो अरेस्ट होयब निश्चिते। उदित बाबू केँ जखन कार्ड देबाक लेल गेलौं तँ उएह ई बात कहलनि। मुदा अचरजक बात जे आठ सय सीटवला सभागार मे तते लोक जुटल जे बहुतो केँ काते-कात ठाढ़ भ' नाटक देखए पड़लनि।

श्रीकांत मंडल आदि अप्रील मे डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल लिखित आ डा. वीरेन्द्र मल्लिक द्वारा अनूदित 'व्यक्तिगत' मंचित कयलनि आ एही संग मैथिली रंगमंचक रंग अभियान पर यवनिकापात भ' गेल। डॉ. प्रेमशंकर सिंहक इतिहास मे 'जादूगर' आ 'रिहर्सल'क तँ चर्च नहिञे भेल, अ. भा. मिथिला संघ, मैथिली रंगमंच, कुर्मी छत्रिय छात्रवृत्तिकोषक प्राय: समस्त नाट्यमंचक नायकक भूमिका मे अभिनय केनिहार रामलोचन ठाकुरक सेहो चर्च नदारद। ओना मैथिली रंगमंचक विकास मे कलकत्ताक योगदानक संबंध हम अपन 'स्मृतिक धोखरल रंग' मे लिखने छी। एहिठाम एगो आर बात लिखब प्राय: आवश्यक जे महेन्द्र मलंगिया अक्सरहाँ कलकत्ता अबैत रहैत छलाह। लेक गार्डेन्स मे हुनक ससुर रहैत छलथिन। मलंगिया जी केँ पएर रंगेबाक वेश सओख छलनि। ओ लेक गार्डेन्स सँ शेली कैफे धरि हमरा लोकनिक संग रहैत छलाह, चाइनीज चाह पिबैत छलाह, बांग्ला नाटक देखैत छलाह आ एही क्रम मे एही ठाम हुनक प्रसिद्ध नाटक 'ओकरा आँगनक बारहमासा'क प्रारूप बनल छल।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक क्रम मे हम बहुत रास दोहा, पोस्टर कविता लिखने छी। एक टाक बानगी—

मिथिला हमर देश हम मैथिल
हमर मैथिली भाषा
आन ओ मान ओ लोक भुवन भरि
ई अदम्य अभिलाषा

वस्तुत: यैह पृष्ठभूमि थिक हमर मैथिली आन्दोलनक। निर्विवाद बंगसंतानक मातृभाषा प्रेम सेहो हमर प्रेरणाक स्रोत स्वरूप ओ आत्मानुभूति आ आत्मबलक आधार रहल अछि। विभागीय पुस्तकालय मे पोथीक विशाल संभार हमरा बांग्ला साहित्ये नञि ओकर इतिहासोक अभिज्ञान देलक जाइ मे हमर पूर्वजक अवदानक अप्रतीम उल्लेख छल। अतुल प्रसाद सेनक प्रसिद्ध गीत 'आर मरि बांग्ला भाषा' हमरा आइयो नञि बिसरलैए। एकर किछु पंक्ति द्रष्टव्य—

मोदेर गरब, मोदेर आशा
आ मरि बांग्ला भाषा!

आछे कोइ एमन भाषा,
एमन दुख श्रान्ति-नाशा!
विद्यापति चण्डी गोबिन

हेम मधु बंकिम नवीन
आरो कतो मधुप गो!

ओइ भाषातेई प्रथम बोले,
डाकुन माये 'मा' 'मा' ब'ले;
ओइ भाषातेइ बलबो 'हरि'
सांग होले काँदा-हासा॥

भाषा-प्रेमक एहन अपरूप-उदस्त भाव विरल अछि। आ एइ भावक पृष्ठभूमि मे विद्यापतिक प्रभाव सेहो स्पष्ट। स्वभावत: बांग्लाक इतिहासकार दीनेशचन्द्र सेन कहै छथि जे हमरा लोकनि मिथिलाक ततेक ऋणी छी जे ओ लोकनि जँ कहैत छथि 'एक तँ बंगाली आ दोसर तोतराह' तँ तकरा अन्यथा नञि लेबाक चाही। मन पड़ैए भोलाबाबूक कथन, हमरे पूजी सँ बंगाली लोकनि सम्पत्तिक विशाल भंडार बना लेलनि आ हमरा लोकनि अपन पूजीओ गमा देल। एइ ठाम हम कहय चाहब जे हमर पूजी-निर्माण मे, जकरा हम मैथिलीक पुनर्जागरण वा मैथिली आन्दोलन कहैत छी, बंग-संतानक सहयोगिता-सहधर्मिता श्लाघनीय अछि। बात प्राचीन पांडुलिपि प्रकाशनक हो वा कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली पठन-पाठन प्रारंभक, साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यताक हो वा संविधानक आठक अनुच्छेद मे अन्तर्भूक्तिक। आचार्य रमानाथ झा कलकत्ता केँ मैथिलक लेल तीर्थस्थान कहने छथि आ से तीर्थस्थानक निर्माण मे निश्चिते प्रवासी मैथिली भाषीक संगहि बंग-सन्तानक अवदानो थोड़ नञि। आ यैह तीर्थस्थान थिक हमर कर्म भूमि।

हम अखिल भारतीय मिथिला संघ मे रही—साधारण सदस्य सँ सहायक सचिव, संयुक्त सचिव, प्रभारी सचिव मुदा सचिव पद कहियो ने प्राप्त भेल। जखनकि सचिवक समस्त दायित्वक निर्वहन करैत रहलौं। वार्षिक बैसार मे जखन सदस्य लोकनि कहथिन जे एइ बेर सचिवक पद रामलोचन जी केँ देल जाइन, कारण कैक साल सँ सचिवक समस्त कार्य वैह करैत छथि आ घुरन बाबू तँ मिटिंगो मे नञि अबै छथि! तँ चौधरी जी कहथिन, हमर विचार अछि जे एइ बेर घुरने बाबू रहथि। काज तँ रामलोचन जी करिते छथि आ करबे करता। हम अहाँ लोकनि सँ हुनका बेसी नीक जकाँ जानै छियनि, हुनका पदक लोभ नञि छनि। आ चौधरी जीक विचार फाइनल होइत छल। प्रबोध बाबूक संस्था छोड़ि देलाक पश्चात ओ एकछत्र नेता छला। आ हमरा पाइ आ पदक महत्त्व-मर्यादाक जे आभास कपरिया स्कूल मे भेल छल से मैथिली रंगमंच सँ मिथिला संघ धरि प्रखर सँ प्रखरतर रूपें हमरा आलोड़ित करैत रहल। संघ आन्दोलनात्मक क्रियाकलापक संगहि पोथी आ 'मिथिला दर्शन'

पत्रिका सेहो प्रकाशित करैत छल। जखन प्रबोध बाबू आ चौधरी जी मे मतांतर भेलनि तँ प्रबोध बाबू 'दर्शन'क प्रकाशन मना क' देलथिन। कारण मिथिला दर्शन प्रा.लि.क पूर्ण मालिकाना ओ ल' लेने छलाह। बाद मे चौधरी जी 'मैथिली दर्शन' नामे पत्र-प्रकाशित करय लगला। से चौधरी जी प्राय: कहितथि, रामलोचन जी, आब हम नञि सकै छी, दर्शन अहीं सम्हारू। अगिला अंग सँ संपादक मे अहींक नाम रहत, रचना सभ जमा करू आ संपादकीय लिखने आउ। हम सभ जोगार क'क' द' अबितिअनि मुदा जखन पत्रिका बहार होइत तँ हमर नामक पतो ने। एही क्रम मे हम नचिकेता सँ कथा लिखबओने रही जे जो हमरे डेरा मे बैसि लिखने छला—राजकक्ष। 1972 ई. क कोनो अंक मे ई कथा प्रकाशित अछि। कोनो लेख दितिअनि तँ कहितथि, हमरा विचार अछि जे एकरा फलाँक नामे छापि दिऐक, अहाँक कथा (वा कविता) तँ जाइत रहल अछि। जानि ने एहन कते लेख हमर आनक नामे छपल होयत।

'मिहिर' मे हम लिखबे ने कयल। भ' सकैए लिखबो केने छपैत नहि कारण झगड़ा रहै। ईहो झगड़ा अजीबे! एइठाम सिद्धार्थ रायक मिनिस्ट्री रहै। युवकल्याण मंत्री सुब्रत मुखर्जीक प्रयासे विराट मेला-प्रदर्शनीक आयोजन ब्रिगेड पैरेड मैदान मे—सप्ताहव्यापी। सांस्कृतिक आयोजन मे बिहार सँ आकाशवाणीक कलाकार 'विद्यापति बैले' प्रस्तुत केने छला। जहाँधरि मन पड़ैए विश्वनाथ मिश्र विद्यापतिक भूमिका मे रहथि। हुनक नृत्य तेहन भद्दा छल जे बंगाली दर्शक लोकनि छी:-छी: करैत छलाह—एतोबड़ो मानुष केँ एरा कोथाय नामिये एने छे। हमहूँ रंगमंचक संग जुड़ल रही आ नृत्य सेहो अभिनयेक अंग छै तँ नीक-अधलाहक बोध रहय। हम 'दर्शन' मे तकर आलोचना कयल। एकर जवाब मे 'मिथिला मिहिर' मे बेस पैघ आलेख छपलै, जाइ मे हमरा प्रति भरिपोख अपशब्दक प्रयोग कयल गेल। तर्क देल गेल छलै जे विश्वनाथ जी कुलीन छथि, दीर्घ दिन सँ एइ विभाग मे छथि। मन नञि अइ लेखक सुशेचौ छला वा श्रीठाकुर। हम तकर जवाब मे लेख पठाओल अग्रदूत नामे। हम अग्रदूतेक नामे अपन समस्त कथा लिखने छी। किछु दिनक पश्चात भीम भाइक सही कयल एक पत्र भेटल जे अग्रदूतक पूर्ण परिचय चाही, हमर लेख 'मिहिरक' लेखक केँ पढ़बाक लेल देल गेल छनि आदि। जवाब मे हम लिखल जे पहिने 'मिहिर' मे पूर्वोक्त लेखकक परिचय छापल जाय तखन हम अग्रदूतक परिचय देब। स्वाभाविक छै जे ओ लेख नञि छपलै। पश्चात हम दर्शन मे तकरा छापल। एकर क्रम कते दिन धरि चलैत रहलै। एकरे प्रतिक्रिया छलै 'इतिहासहंता'क समीक्षा मे—'ढाही लड़ता तँ कवि केना बनता।' आइ शेखर जी वा ठाकुर जी केओ वर्तमान नञि, तँ एइ मादे विशेष लिखब हम उचित नञि बुझै छी। परंच स्वीकार

करैत छी जे एक खेप हम दू गोट आलेख लिखि अपन बन्धु निरसन लाभ उर्फ जयदेव लाभ केँ देने छलियनि जे ओ अपन आखर मे अपना नामे लिखि 'मिहिर' मे प्रकाशनार्थ पठाबथि आ से छपलो छलै।

संघ हम छोड़िए देने रही आ रंगमंच सेहो बन्न भ' गेलै। हम अपन समय आब पढ़नाइ-लिखनाइ मे लगेबाक निश्चय कयल। 1975 ई. मे चारमिनारक खलिया पैकेट पर हाथ सँ मिनी कथा-कविता लिखि 'सुल्पा' नामे पत्रिका बहार कयल। कुणाल-अग्निपुष्प सहयोगी छलाह। ई एक प्रयोग मात्र छल। तीन पाइ दाम, गिरीश पार्क मे बेचनाइ। अग्निपत्र-7 नवम्बर 1974 ई. मे बहार भेल छल आ तकर बाद बहरेबाक संभावना प्राय: नञि छलै। जून 1976 मे हम एक दिन कुणाल केँ अपना ऑफिस बजा योजना बनाओल आ एक्के दिन मे आठम अंक, जे कि कविताक छल बहार कयल। मार्च 1979 ई. मे एकर बारहम अंक बहार कयल। एहि पाँचो अंकक संपादन हम असगरे केने छलौं। 1977 ई. मे छपल छल हमर पहिल कविता-संग्रह 'इतिहासहंता' जकर विमोचन यात्री जी कयने छलाह।

1980 ई. मे बिहारक मुख्यमंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र उर्दू केँ दोसर राजभाषा घोषित कयल जकर सर्वत्र प्रतिक्रिया भेलै। हमरा लोकनि केँ उर्दू सँ कोनो विरोध नहि छल परंच एतबा धरि सत्य जे मैथिलीक पथावरोधक उद्देश्यहि सँ एहन कयल गेल छलै। उर्दू आ हिंदी एइ देश मे ककरो मातृभाषा नञि छै आ देश विभाजनक समय एकर साम्प्रदायिक रूप खुलि क' लोकक सामने आयल छलै। हिंदी विद्वान डा. धीरेन्द्र वर्माक 'विचार-धारा' मे ई बात नीक जकाँ विवेचित कयल गेल अछि। विश्वक समस्त भाषा शास्त्री मानैत छथि जे भाषा भूमिक होइ छै ने कि जाति आ धर्मक जेना कि हिंदीवलाक प्रयासे जनगणना मे मिथिलांचलक भाषा देखाओल गेल अछि। विचारणीय विषय ईहो थिक जे खाली तथाकथित हिंदी-प्रदेशहिक मुसलमानक भाषा उर्दू छै जखनकि बंगाल, असम, उड़ीसा वा तमिलनाडू आदि प्रदेश मे एहन बात नञि छै। भाषा क्रांतिए बांग्लादेश गठनक पृष्ठभूमि छै आ एकर नायक सँ योद्धाधरि मुसलमाने छथि। से एहन कोनो घटना होइत छलै तँ हम तकर प्रतिवाद मे परचा छपा बँटैत छलौं, अखबार मे पत्र लिखैत छलौं। एहू खेप हम मैथिली सेनाक नामे परचा बहार कयल। कर्पूरी जीक मैथिली विरोधी निर्णयक समय सेहो हम एहिना केने रही। हमर एहि काज मे सहयोगी छलाह जनार्दन झा, निरञ्जन लाल, रामआधार मिश्र आ महेश्वर झा। एकर बाद हम मिथिला संघर्ष समितिक कमलेश झा आ सांस्कृतिक परिषदक किशोरी कान्त मिश्र सँ सम्पर्क कयल। हिनका लोकनिक प्रयासें 20 जून 1980 केँ विद्यापति विद्यामंदिर मे बैसार भेल जाइ मे उपस्थित सदस्य लोकनि अपन-अपन विचार रखलनि आ फेर हमरे संयोजकत्व

मे मैथिली मुक्ति मोर्चा बनल। पटनाक निखिल भारत मैथिली भाषी छात्र संघ सँ सम्पर्क कयल गेल। कलकत्ता आ तकर लगपासक अंचल मे चुनावी अभियान सन हमरा लोकनिक प्रचार अभियान चलल। हम स्वयं पोस्टर पर्चा ल' मिथिलांचलक भ्रमण कयल। लहेरियासराय मे टीशन मास्टर छला माधव मिश्र। हुनके ओइठाम डेरा देल आ हुनक सहयोगे जे ट्रेन रुकै ताइ मे पोस्टर साटी, परचा बाँटी। एवमक्रमे 9 दिसंबर, 1980 केँ पूर्ण तैयारीक संग पटनाक राजपथ पर जुलूस बहरायल। शताधिक लोक तँ मात्र कलकत्ते सँ गेल छला। 144 धाराक उलंघन-कयल गेल आ बिहार पुलिसक बर्बरताक उपेक्षा करैत जुलूस बढ़ैत रहल। पटनाक नथुनी झा, कलकत्ताक विजय पाठक आ साहित्यकार सुशील जी केँ बड़ बेसी मारि लागल छलनि, मुदा मैथिली आन्दोलनक इतिहास मे ई पहिल घटना थिक जाइ मे मैथिल सन्तानक शोणित सँ राजपथ लाल भेल छल। पहिल बेर बिहारे नञि बंगालक सेहो समस्त पत्र-पत्रिका मुखपृष्ठ पर ई समाचार छपने छल। ई एक अभूतपूर्व घटना छल जाइ मे कलकत्ताक समस्त संस्था एक मंच पर आयल छल। मुदा से स्थायी नञि भेल। 23-25 मई, 1981 ई. केँ दड़िभंगा टाउन हॉल मे अधिवेशन कयल आ आन्दोलन केँ माटि सँ जोड़बाक नाम पर एकरा 15 सदस्यक समिति बना तकर हाथ सौंपि देल। एहि समितिक अगुआ छला पं. देवनारायण झा। प्रस्तावक जीवकान्त आ समर्थक रामनन्द रेणु।

मैथिली मुक्तिमोर्चाक आन्दोलनक क्रम मे हमर उपलब्धि भेल जे ई आन्दोलन प्रवास सँ संभव नञि, कारण हमर अंचलक आर्थिक रीढ़ प्रवासेक मनिआडर पर सोझ अछि। 9 दिसम्बरक आन्दोलन मे जते लोक गिरफ्तार भेल छल आ तकरा सभ केँ भागलपुरक अँखिफोड़ा जहल पठेबाक योजना बनल छलै से जँ संभव भ' जाइत तँ की होइतै! संयोग जे केदार पांडे छला आ हुनक कोनो संबंधी पुलिसक आला अफसर छलथिन, तँ सभक रिहाइ संभव भेलै। से हमर एही उपलब्धिक परिणाम छल 'देसकोस'। हम निर्णय लेल जे आब पत्रिकेक माध्यमे आन्दोलनक वातावरण बनाओल जाय जे प्रवास सँ संभव छै।

1994 ई. मे साहित्य अकादेमी अनुवाद कार्यशालाक आयोजन केने छल जाइ मे प्रथम बेर हम आमंत्रित रही। अपन स्वभावक अनुरूपे हम आमंत्रण अस्वीकार क' देने छलिऐ। पश्चात नचिकेताक पत्र आयल जे हमरा रहबेक अछि। कार्यशाला हुनके नेतृत्व मे भेल छल। नचिकेता हमर बन्धु छथि, हमरा लोकनि एक संग नाटक खेलायल छी, मिथिला-मैथिलीक संबंध दिन-पर-दिन विचार-विमर्श केने छी। हमरा लोकनिक बन्धुत्व स्वार्थाश्रित नञि अछि तँ विच्छेदक संभावनाओ नञि। जहिया प्रबोध बाबू आ अणिमा जी सँ मतान्तर होइत छल तहियो हमरा लोकनिक

बन्धुत्व मे कोनो फर्क नञि पड़ल छल। स्वभावतः हम आमंत्रण स्वीकार कयल। कार्यशाला मे हमरा अतिरिक्त पं. गोविन्द झा, रमानन्द रेणु, कीर्तिनारायण मिश्र, शेफालिका वर्मा, सुभाषचंद्र यादव, महाप्रकाश, हरे कृष्ण झा, प्रमोद कुमार झा आदि छलाह। 'अनुकृति' नामे समकालीन मैथिली कविताक बंगानुवाद छपल अछि— देखि लिअ।

शक्ति चट्टोपाध्यायक पुरस्कृत पोथी 'जेते पारी, किन्तु केनो जाबो' क एक कविता पत्रिका लेल अनुवाद केने रही। नचिकेता केँ देखै लेल देलियनि। ओ कहलनि जे बड़ नीक अनुवाद भेलए, पूरा पोथीए ने किऐ करै छी। प्रकाशनक समस्या देखओलियनि तँ साहित्य अकादेमी केँ पठा देबा लेल कहलनि। साहित्य अकादेमी आदेश मे विलम्ब केलक तँ स्वयं छपेबाक नेआर कयल। कालीपद कोङारं मदति केलनि आ शक्ति चट्टोपाध्यायक पत्नी सँ अनुमति भेटि गेल। संयोग सँ ताबत अकादेमीक पत्र सेहो प्राप्त भेल आ तँ वैह छपलक। बंगला कवि कालीपद कोङारक मादे जीवकान्त भाइ लिखने छलाह। ई अपना क्षेत्रक भ्रमण केने छला आ मैथिली कविताक बंगानुवाद क' रहल छला। हमरा जहिया हिनका सँ भेट भेल तहिया ई लिखबाक स्थिति मे नइँ छला। हम चारि दिन तक हिनक खड़गपुर आवास पर रहि मैथिली कविताक बंगानुवाद हिनक पुत्रबधु आ सार केँ डिक्टेट केने छी। प्रायः शताधिक कविताक अनुवाद एहिना भेल अछि। केदार कानन हिनका मैथिली सँ हिंदी क'क' पठबैत छलथिन आ पूर्व मे जखन ओ स्वस्थ छलाह, हिंदी सँ बांग्ला करैत छलाह। कलकत्ता प्रवास मे रहबाक कारणें हमर नाम तँ ओनहुना लोक केँ मन नञि रहैत छै मुदा भाइ दोषी आ रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क अभाव हमरा खटकल छल आ हम दुनू गोटे केँ कविता पठेबाक आग्रहपत्र लिखने छलियनि। भ्रमर जी तँ जवाबो नञि देलनि मुदा भाइ दोषी दयानाथ झाजी सँ ल' लेबाक बात लिखलनि। पोथी प्रकाशनक क्रम मे हुनक समस्त कविता दयाबाबू लग छलनि परंच हमर लाख प्रयासक उपरान्तो हमरा कविता उपलब्ध नञि भेल आ तँ हिनका लोकनिक कविता नञि जा सकल।

गोविन्द बाबूक पुरस्कृत कथा-संग्रह 'सामाक पौती'क अनुवाद केने छली गौरी सेन साहित्य अकादेमीक लेल। रिभ्यू लेल अणिमा जी लग आयल छलनि। पटना सँ रमणजीक फोन आयल। ऑफिस मे नवीन जी कहलनि। अणिमा जी केँ फोन केलियनि तँ कहलनि जे अनुवाद नीक नञि छलै तँ घुरा देलियै। किछु दिनक पश्चात फेर सुधारक संग ओ पोथी एलै। अणिमाजी समाद देलनि संगहि ईहो कहलनि जे हुनका एखनो संतोषजनक नञि बुझाइत छनि तँ समय ल'क' जाइ, भोजन-भात सेहो ओतै हेतै। 6 सितम्बर, 2003 ई. केँ प्रातः दस सँ अपराह्न 5 धरि

हम दुनू गोटे मूल आ अनुवाद मिलबैत ठीकठाक करैत रहलौं। कोलोकियल शब्दक अनुवाद बड़ सहज नञि होइ। एके भाषाक विभिन्न अंचल मे विभिन्न तरहक कोलोकियल शब्द व्यवहृत होइछ जकर अर्थ झट द' आन अंचलक लोक समभाषा भाषी होइतो नञि बुझि पबैछ तखन अन्य भाषाभाषीक कथे की। हम पैंतालिस वर्ष सँ कलकत्ता मे छी आ दिन भरि बंगभाषिक बीच रहैत छी, बंगले बजैत छी, दू-एक टा अखबारो रोजे पढ़ैत छी, तैयो मानिक बंदोपाध्यायक 'पदमानदीक माझी'क अनुवाद हमरा घाम छोड़ा देलक आ बांग्लादेशक लेखक अखतरुज्जमा इलियासक कथा पढ़ैत काल दम लेबए पड़ैत छल। जे हो, 'समाक पौती'क बंगानुवाद छपलै। ई सभ बात हम ओइ साहित्यकार लोकनिक श्रम लाघव करबाक उद्देश्यें नञि लिखि रहल छी जे लोकनि हमर स्वार्थसिद्धिक संधान मे धुरखुर नोचि रहल छथि। हम, रामलोचन ठाकुर ई घोषणा करैत छी जे उपरोक्त समस्तकार्य मे हमर स्वार्थ सन्निहित अछि। हम अपन अदम्य अभिलाषाक बात पहिने लिखि आयल छी। हमरा ज्ञात अछि जे मैथिलीक बड़ थोड़ पोथीक आनभाषा मे अनुवाद भेलए। बांग्लाक बहुत पोथीक अनुवाद मैथिली मे भेल अछि, ई भिन्न कथा जे एहि मे अधिकांश हिंदीक माध्यमे भेल अछि। सोझे बांग्ला सँ मैथिली नहि। किन्तु मैथिलीक कतेक पोथीक बंगानुवाद भेल अछि से विचारणीय।

हिंदीक कोनो साहित्यकारक संस्मरण छनि—'क्या भुलूँ क्या याद करूँ'। वस्तुतः हमर तेहने सन स्थिति अछि। हमर जिनगी, हमर कार्यकलाप तते छिड़िऐल, तते अव्यवस्थित अछि जे ओकरा सिलसिलेवार ढंग सँ लिखि पायब सहज-संभव नहि, आ सेहो जखन बिना कोनो ड्राफ्ट, बिना कोनो नोटक सोझे लिखि रहल छी। बहुत किछु अग्निपुष्प लिखने छथि तँ तकर पुनरुक्ति प्रयोजनीय नञि। तखन एइठाम एक बात अबस्से कहय चाहब जे हमरा परंपराक स्वयंभू प्रहरी-प्रवक्ता लोकनि मार्क्सवादी कहै छथि तँ हमर तथाकथित मार्क्सवादी समाङ लोकनि हमर मैथिली प्रेम ल' क' संकीर्णता-पृथकतावादी। जिनका हम, हुनके शब्द मे, डेन पकड़ि मार्क्सवादक एकपेरिया पर चलब सिखाओल सेहो खुलि क' हमर आलोचना करैत छथि। ई लोकनि राष्ट्रक भाषा मे राष्ट्रक उत्थान हेतु आफन तोड़ने छथि। हम गछैत छी जे हम मार्क्सवादी नञि छी। मार्क्सवादी भेनाइ ओतेक सहज नञि छै। मुँह सँ बजने केओ मार्क्सवादी नञि होइछ, ओकर आचरण-अवस्थान से बना सकैत छै। हँ, हम मार्क्सवादी दर्शन सँ अबस्से प्रभावित छी, ई हमरा पसिन पड़ैए। हम मानैत छी जे एकमात्र यैह दर्शन मनुक्ख कें मनुक्खक रूप मे देखैत अछि, मर्यादा दैत अछि। सर्वे भवन्तु सुखिनः केर कल्पना-कामना केवल मार्क्सवादी व्यवस्था मे साकार भ' सकैछ। हम मानैत छी जे मैथिली हमर परिचिति थिक आ

मार्क्सवाद मे मातृभाषाक की महत्त्व छै सेहो हमरा बुझल अछि। हम मिथिला राज्यक खगता, ओकर उपयोगिता-उपादेयता मे विश्वास करैत छी, तेँ आइयो, थम्हल नञि छी। पचीस साल सँ 'सम्पर्क' चलि रहल अछि। प्रत्येक मासक दोसर रवि कें एकर बैसार होइ छै। एइ मे कथा-कविता पढ़ल जाइछ—नव, अप्रकाशित रचना। ताइ पर विचार-विमर्श होइछ। नव रचनाकार कें प्रेरित-प्रोत्साहित करब एकर लक्ष्य। किशोरीकान्त मिश्र, गंगा झा, नवोनारायण मिश्र, नवीन चौधरी, सुशील, मिथिलेश कुमार झा, अनमोल, आशीष कुमार मिश्र, कमल जी, विनय भूषण, सुरेन्द्र ठाकुर, देवीशंकर आदिक उपस्थिति रहैछ।

हम कतौ जाइ छी तँ हमरा कान्ह सँ झोरा झुलिते रहैछ जाइ मे रहैछ मैथिलीक पोथी-पत्रिका जे बेचबा मे हमरा कोनो असौकर्य नञि होइछ। कोनो पत्रिका हमरा पर रचनात्मक असहयोगक आरोप नञि लगा सकैछ, हँ बिनु मँगने हम कतौ रचना नञि पठबैत छी। आ से अपन लेखनक आरंभे काल सँ। 'कर्णामृत', 'प्रवासक भेंट', 'मिथिला समाद', 'अंतिका', 'आरंभ', 'घर-बाहर', 'जखन-तखन', 'भारती-मंडन', 'रचना' आदि पत्रिका कें हमर आर्थिक सहयोग सेहो भेटैत रहलैए, विज्ञापन किंवा बिक्रीक माध्यमे, अपवाद मे अछि 'समय-साल'।

हमरा किछु गोटे 'टेढ़' तँ किछु गोटे 'घमंडी' कहैत पाओल जेता। टेढ़ तँ हम नञि छी, ठकुरसोहाती सँ सेहो अनभिज्ञ। हम दाबीक संग कहि सकैत छी जे हमरा मन मे ककरो प्रति (मिथिला-मैथिलीक संदर्भ मे) बैमनस्यभाव नञि अछि। तर्क-वितर्क, आलोचना-प्रत्यालोचना भिन्न बात थिक। तहिना घमंड हमर अभिधान मे नञि अछि। हँ, अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वक प्रति, अपन भू-भाषाक प्रति गौरव-बोध अबस्से अछि। विद्यापति कहलनि जे तिरहुतिया कें अपन गुणक गौरव रहैत छै। हम ओहि भूमिक छी जाइ भूमि सँ 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' आ 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' क वाणी फुटल छल; एकर गौरव हमरा अछि। हम ओहि भू-खंडक संतान छी जकर संतान 'वयमिह पदविद्या...'क उद्घोष कयने छला आ 'एश्वर्य मदमत्तोसि...' कहि 'ईश्वरक सत्ता' कें चैलेंज कयने छलाह; तकर गौरव हमरा अछि। भाषा-चेतनाक प्रथम पुरुष, मातृभाषाक महिमा-महत्ताक प्रथम प्रवक्ता प्रतिष्ठाता कविपति विद्यापतिक वंशज होयबाक गौरव हमरा अछि। मैथिलीक प्रथम गद्यकार नाट्यकार कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक गामक होयबाक गौरव-बोध निर्विवाद हमरा अछि। हमरा लोकनि कें बच्चा मे शंकरक 'बालोहं जगदानन्द...' धोखाओल गेल छल। हमरा जनैत तकर तात्पर्य एही गौरव-बोध कें जगायब थिक। एहिठाम लिखब भरिसक अनर्गल नञि होयत जे अमर जी एगो 'श्वेतपत्र' प्रकाशित केलनिहें जाइ मे साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि रूप मे अपन उपलब्धिक

विवरण देने छथि। ओइ मे अनुवादक क्रम मे एकठाम हमरो नाम अछि जखन कि ओ ऑफर हम रिफ्यूज क' देने रहिऐक कारण—जे तीन गोट कथा अनुवाद लेल हमरा पठाओल गेल छल आ ओ कोनो दृष्टिएँ समकालीन मैथिली कथाक प्रतिनिधित्व नञि करैत छल। एकर गौरव हमरा अछि।

उपसंहार

नोकरी जीवन मे विभागीय परीक्षा पास करैत पाँच टा प्रमोशन प्राप्त कयल, एलडीसी सँ इन्सपेक्टर धरि। हमर आफिस जे समाङसभ जाइत छथि ओ जनैत छथि जे प्रवास मे बंग संतानक बीच हम कोन सान आ सम्मानक संग काज करैत छी। आन्दोलनक क्षेत्र मे मैथिलीक जे सभ सँ पैघ उपलब्धि, संवैधानिक स्वीकृति जे हमर विभूति भोला बाबू, किरण जी, आरसी बाबू आदि नञि देखि पाओल से हम देखल। रंगमंच मे जखन एक्टिव रही, लोकक प्रचुर स्नेह-सम्मान भेटल छल। पत्रकारिता आ साहित्य मे हमर की स्थान अछि से केना कही। हमर पहिल पोथी 'इतिहासहंता' ने कि साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ मात्र एहि दुआरे कतिया देल गेल छल जे हमर वयस अल्प छल, जेना कि भाइ दोषी कहने छला। ओना जयकान्त बाबू पश्चात कतेको बेर भेंट भेला पर कहने हेता जे हुनका पर अनर्गल ई दोष लगाओल गेलनि। वास्तविकता जे हो। हँ, अनुवादक लेल मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'भाषा भारती सम्मान' हमरा अबस्से प्राप्त भेल अछि। हम तँ मानैत छी जे इमानदारीक संग उचित दिशा मे उठाओल गेल प्रत्येक डेग महत्त्वपूर्ण होइत छै, मात्र सफलताए नञि। मन पड़ैत छथि गालिब—

यारब वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात।
कहते हैं कि गालिब का है अंदाजे बयां और।

अंतिका, अप्रैल-जून, 2008

चपल चरन चित चंचल भान

नरेन्द्र झा

मिथिला मे महाप्रलयक वर्ष छल 1934। एहि वर्ष एहि अंचल मे भयानक भूकम्प आयल। घर-दुआरि तहस-नहस भ' गेल। जमीन मे दरारि फाटि गेल। हमर पितामहक घर धराशायी भ' गेल छल। पुरना घराड़ी छोड़ि ओ सभ अपन पुरखाक खुनायल पोखरिक दक्षिणबारी भीड़ पर आबि क' बसैत गेलाह। ओही साल 22 सितम्बर कँ नवका घराड़ी पर हमर जन्म भेल। पंडित आ विद्वानक हमर गाम तरौनी संस्कृत शिक्षा मे नामी-गामी। हमरा गाम मे आब संस्कृत शिक्षा नाममात्रक। हमर गाम सकरी रेलवे स्टेशन सँ छह-सात किलोमीटर दक्षिण अछि। गामक पूब मे शिवसिंहक राजवाड़ा जे आब रजवाड़ा टोल अछि। महाराजक घोड़दौड़ पोखरि रजोखरि एतहि अछि। नेहरा गामक उत्तर सँ गोढ़ियारी गामक दक्षिण धरि एक कोस मे। एहि पोखरिक संबंध मे एक लोकोक्ति अछि 'पोखरि रजोखरि आर सब पोखरा, राजा शिवसिंह आओर सब छोकड़ा।' तरौनी गामक पश्चिम एक टा पोखरि अछि जे अन्हरी नाम सँ प्रसिद्ध अछि।

महाराज शिव सिंहक समय मे विशिष्ट विद्वान, सिद्धपुरुष तथा श्रोत्र स्मार्तकर्म निपुण लोक बसल छलाह जे विशेषत: करमहे मूलक श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह। ओ सब सम्प्रति उजान-अबाम गाम मे छथि। एतहि करमहे तरौनी मूलक श्रीधरक पौत्र आ रतिधरक पुत्र जनिक नाम रमापति छलनि संन्यास ग्रहण कयलाक बाद अपन नाम विष्णुपुरी रखलनि। हिनक समय 1425 सँ 1500 तक अछि। कविशेखर बदरीनाथ झा हिनक परिचय 'मैथिल गीत रत्नावली' मे लिखने छथि। विष्णुभक्ति रत्नावलीक प्रणेता चैतन्यदेवक परमगुरु माधवेन्द्रपुरीक संगी म.म. महेश ठाकुरक माम छलाह। एखनो हिनक विष्णुपुरैनी डीह तरौनी गाम मे प्रसिद्ध अछि। भक्तश्रेष्ठ वैष्णव महात्मा रोहिणीदत्त झा गोसांइ सिद्धपुरुष छलाह। महाराज छत्र सिंह (14म महाराज) कोनो कार्यवश ओहि प्रान्त गेल रहथि। तरौनी गामक एक टा गाछी मे

डेरा देलनि—इच्छा प्रकट कयलनि जे महात्मा रोहिणीदत्त झाक दर्शन हो। गोसांइ अत्यन्त वृद्ध छलाह। मात्र संस्कृत भाषा मे बाजथि। विद्वान सँ मूर्ख पर्यन्त हिनक भाषा बुझि जाइत छलथिन। जकरा जे वाक्य देथिन से फलित होइत छलै। महाराज भेट करय चाहलथिन परन्तु गोसांइ अत्यन्त वृद्ध छलाह तेँ अपन कुटी सँ बाहर नइँ आबि सकलाह। कर्मचारी द्वारा उत्तर-प्रत्युत्तर भेला सँ दुनू गोटे परस्पर प्रसन्न भेलाह। गोसांइक धैर्य तथा निर्लोभता सँ परितुष्ट भ' चलैत काल कुटीक खर्च चलेबाक हेतु किछु भूमिक सनद तथा सदावर्तक हेतु दरभंगा सँ अन्न सेहो पठा देल करथिन।

होराई झा आ रघुवर गोसांइ सन सिद्धपुरुषक यैह गाम छनि। व्याकरण शास्त्रक दृष्टि सँ तरौनी विशिष्ट विद्यापीठक रूप मे मान्यता प्राप्त क' लेने छल। अंतिम महामहोपाध्याय बलियासय सकुरी मूलक परमेश्वर झा छलाह। हिनका सँ पूर्व हमर कुल-मूलक विशिष्ट विद्वान म.म. परशुराम झा छलाह। म.म. परमेश्वर झा 39 गोट पुस्तक लिखने छलाह, जाहि मे धर्मशास्त्रक 23टा, साहित्यक 6टा, व्याकरण-कोशादि 6टा तथा मैथिलीक चारि टा। हिनक मैथिली ग्रंथ मे 'मिथिला तत्वविमर्श' मैथिलक ऐतिहासिक चित्रक ओ एलबम थिक जकर एक-एक पृष्ठ मिथिलाक गौरव केँ सुरक्षित रखने अछि। हमर पितामह राधाकृष्णक भक्त परोपट्टाक सुप्रसिद्ध जोतखी छलाह। माय कहैत छलि जे जखन हमर माँझिल पित्ती सतलखा गाम मे दोसर विवाह कयलनि तँ हमरा बजाक' कहलथि, 'एहि कनियाक पयर बड्ड अलच्छ अछि। घर नष्ट भ' जायत।' आ अंततः से भेबो कयल।

हमर पितामह जनिका परोपट्टाक लोक 'गुरु' कहैत छलनि, अपना पोखरिक भीड़ पर राधाकृष्णक मूर्ति स्थापित करबाक लेल मंदिर बनब' चाहैत छला मुदा राघोपुरक पछवारि ड्योढ़ी द्वारा रोक लगा देल गेल। गुरुबाबा एहि रोकक विरुद्ध मोकदमा क' देलनि। एहन सन नियम छल जे जमींदारी क्षेत्रक भीतर संबद्ध जमींदारक अनुमति बिना केओ मंदिर नहि बना सकैत छल। जमींदारक शोषण चरम पर छल। कर वसूली मे सब तरहक मनमानी आ अनैतिकता अपनायल जाइत छल। जमींदारक आतंक सँ परोपट्टाक सभ समुदायक लोक जमकल पानि सन छल, मुदा मंदिर बनेबा पर रोक लगला सँ सभ लोक आक्रोशित आ संगठित भ' गेल। गुरुबाबा अपन सभ संपत्ति बन्हक राखि देलनि। जमींदारक विरुद्ध लड़ाइ मे सभ सँ अगुआ हमर बड़का पित्ती भगीरथ झा आ बहिया गनौरा छल। हमर पितामह दरभंगा महाराजक सलाहकार पं. गिरीन्द्र मोहन मिश्र सहित राजक कतेको अधिकारीक बीच पूज्य ओ प्रतिष्ठित छलाह। मंदिर स्थापित करबाक मोकदमाक वकालत सेहो पं. गिरीन्द्र मोहन मिश्र कयलनि आ मोकदमा जीत गेलाक बाद गुरुबाबा मंदिर बना लेलनि आ ओकरे घर-आँगन आ दरबजा बूझ' लगला।

वैष्णव गुरुबाबाक अछैत केओ पोखरि मे माछ नइँ मारि सकैत छल। चोरा-नुका जँ कोनो मलाह पोखरि मे पैसल रहैत छल तँ ओकरा पानि मे पैसिक' भगबैत छलाह। ई पोखरि सेहो हमर पुरखेक, जे विशिष्ट जोतखी छलाह, देन छल। एहने विद्वानक परंपरा मे हमर पिता विद्यावाचस्पति पं. उपेन्द्र झा अन्तिम मूर्धन्य विद्वान आ साधक भेलाह। संस्कृत वाङमय मे विशिष्ट योगदानक लेल राष्ट्रपति हिनका गणतंत्र दिवसक अवसर पर 1984 मे सम्मानित कयने छलथिन। एहिना वैद्यनाथ मिश्र यात्री मैथिली मे आ नागार्जुन नाम सँ हिंदी जगत मे राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति पौलनि। बुद्ध, मार्क्स आ फ्रायड हिनक रचना मे रचल-बसल छथि। यात्रीजी भिक्षुक बनबा सँ पूर्व जन्मभूमि मिथिला केँ माँ सम्बोधन करैत हुनका चरण-कमल मे श्रद्धापूर्वक प्रणाम करैत, गामक मोहमाया केँ छोड़ि 'हम जाय रहल छी आनठाम, माँ मिथिले ई अन्तिम प्रणाम।' हमहूँ अपन माझिल पित्तीक व्यवहार सँ नक्यंत(अकच्छ) भ' तरौनी केँ त्यागि मगधक पटनावासी भ' गेल छी।

हमर प्रारम्भिक शिक्षा तरौनीक लोअर प्राइमरी स्कूल मे भेल। हाइ स्कूल एखनो गाम मे नइँ अछि। हँ, दू टा संस्कृत विद्यालय अवश्य छल। एक टा टोल विद्यालय जाहि मे प्रथमा तक ओ दोसर संस्कृत विद्यालय जाहि मे प्रथमा सँ आचार्य तक पढ़ायल जाइत छल। हमहूँ एही विद्यालय सँ प्रथमा परीक्षा प्रथम श्रेणी सँ पास कयने छलौं। लोअर प्राइमरी परीक्षा पास कयलाक बाद हमर नाम राघोपुर ड्योढ़ी मिडिल स्कूल मे लिखायल गेल। स्कूल हमरा गाम सँ आधा कोस दूर छलै। पैदल जाय पड़ैत छल। चारिम क्लास तक ओतहि पढ़ल। पाँचम क्लास मे 6-7 मास ओतहि पढ़लौं। बाद मे आगूक पढ़ाइक हेतु दरभंगा अपन पिताक संग रहय लगलहुँ। गाम मे हमरा सभ केँ सुखदेव झा (प्रसिद्ध नाम सुखे गुरुजी) खाँत अपने दालान पर आबिक' पढ़ा जाइत छलाह। सवैया, ड्योढ़ा आ हुट्ठा तक कंठस्थ करा देने छलाह, जे हमरा अग्रिम पढ़ाइ ओ धंधा मे सहायक भेल। दरभंगाक हमर निवासस्थान गुरुकुल आ आश्रम छल। भोर-साँझ संस्कृत छात्रक पाठ लगैत छल। हमर माय ओहि समय दरभंगा मे नइँ रहैत छलीह। गामे मे रहैत छलीह। पढ़ाइ-लिखाइक अलावा दुनू साँझ आश्रमक सदस्य लोकनि केँ मिल-जुलिक' भोजन बनबय पड़ैत छलै। वर्षाकाल मे जारनि कचाह रहला पर साँझुक महादेवक पूजाक बाद हमर पिता भोजन बनब' मे स्वयं भिड़ि जाइत छलाह। गर्मी ओ दुर्गापूजाक छुट्टी मे गाम चल जाइत छलहुँ। एहि तरहें अपन पिताक एहि आश्रम मे रहिक' 1956 मे हम बी.कॉम. परीक्षा पास कयलहुँ।

आब पैघ समस्या उठल जे हम आगू की पढ़ब ? हमर पिताक इच्छा छलनि जे हम चार्टर्ड एकाउंटेंटक पढ़ाइ करी। हमर गुरुजनक विचार छलनि जे अर्थशास्त्र

विषय मे पटना विश्वविद्यालय सँ एम.ए.क पढ़ाइ करी। अंततोगत्वा हम निश्चय कयल जे सी.ए. पढ़ब। हमरा सँ छोट तीन बहिन। हमर पिता हिनका लोकनिक विवाह-दुरागमन मे लागि गेलाह। मध्यम अर्थवित्तक परिवार। ओहि समय मे कलकत्ता छोड़ि पटना मे सी.ए. पढ़बाक व्यवस्था नइँ छलै। हमरा सुनल छल जे कलकत्ता मे लोक उपार्जन करैत पढ़ि लैत छथि। हमहूँ हिम्मत कयल आ 1966क जनवरी मे चार्टर्ड एकाउंटेट भ' गेलहुँ। एहि क्रम मे कलकत्ता ओ दिल्ली मे ट्रेनिंग भेल आ 1956 सँ नवम्बर 1975 तक दिल्ली ओ कलकत्ताक ऑडिट कार्यालय मे कार्यरत रहलहुँ। दिसम्बर 1975 सँ पटनावासी भ' गेल छी आ संभवत: अन्त मगहे मे होयत।

गाम जायब छोड़ि देल तकर मोन मे कचोट अछि। उपाय तत्काल नइँ देखि रहल छी। कहियो गाम मे सब तरहक साहित्यिक ओ शास्त्रीय चर्चा मे हमर समय बीतैत छल। गर्मी छुट्टी आ दुर्गापूजाक अवकाशक समय यैह सब होइत रहैत छल। छुट्टी मे यात्रीजी अबैत छलाह। हुनक नव-नव कविताक पाठ होइत रहैत छल। अधिकांश लोक एहि मे योगदान करैत छलाह। द्वितीय विश्वयुद्धक समय लोक उमाकान्त काका चटकक ग्राम तक सेनाक आगमनक गप्प घूर लग बैसिक' आनन्द लैत रहैत छल। किछु गोटे बदे बाबाजीक ग्रामोफोन सँ गीतक आनन्द सेहो लैत छलाह। कतेको दरवाजा पर पच्चीसीक खेल सेहो होइत रहैत छल आ जखन ककरो चिकू लागि जाइत छलनि, आनन्दमय वातावरण भ' जाइत छल। हमर गामक पोखरि चौसझा छल। माछ होइत छल, मखान नहि। माछ मरला पर चारि ठाम बाँटल जाइत छल। बाँटैत छलाह, लाल काका। भैयारी मे सब सँ कमजोर। चारू अँगना मे जँ ककरो ओतय पाहुन आयल तँ नीक माछ ओहि घर पठा दैत छलथिन। केओ विरोध नइँ क' सकैत छल। तहिना अपियारीक माछ बाँटल जाइत छल। चौसझा गाछी दू टा छल। आम सेहो लाल काका बँटैत छलाह। जुड़शीतल मे फुचुक्का आ दियाबाती मे कनसुप्तीक हुकालोली सेहो बना दैत छलाह।

हिनक दू टा घटना चिरस्मरणीय अछि। हमर पिता संस्कृत महाविद्यालय दरभंगा मे चपरासीक पद पर हिनका रखा देने छलथिन। ओहि समय प्राचार्य पं. त्रिलोक नाथ मिश्र छलाह। एक दिन प्राचार्य महोदय डँटलथिन। लालकाका बिगड़ि गेला आ प्राचार्य महोदय केँ कहलथिन हमरा गामक मन्दिर पर घंटी डोलयबाक हेतु अहाँ केँ राखब, कतेक दरमाहा लेब। नोकरी छोड़ि गाम चल अयलाह। गाम मे हमर एक पितिआइन पुछि देलथिन, 'दू टा बच्चा भ' गेल अछि, गुजर कोना होयत।' उत्तर देलथिन. 'नइँ बुझल अछि अहाँ केँ, आब बिनोबा सभ केँ जमीन देथिन।' एहने सुधंग छलाह हमर लालकाका।

'अंतिका' जनवरी-मार्च, 2008क अंक मे वीरेन्द्र मल्लिकक कविता 'एक टा छल गाम हमर' पढ़िक' अपन गामक चित्र हमरा आद्योपान्त स्मरण भ' गेल किन्तु आब ओहन हमर गाम नहि। समयक परिवर्तन। हमर घरक स्थिति आरो विषम। हमर पिता तीन भाइ—हमर पिता ओ छोट पित्तीक देहान्त भ' गेलनि। माँझिल पित्ती पं. सुरेन्द्र झा, जे स्वयं विशिष्ट पण्डित आ हमर आचार्य गुरु छथि, हमर तीनू भाइ आ पितिऔत भाइक गामक सभ सम्पत्ति हड़पि लेलनि। व्यवहारो मे सामंजस्य नइँ। हमरा मानसिक कष्ट भेल आ हुनका सँ विरक्ति भ' गेल। गाम छोड़ि मगहिया भ' गेल छी। कहि सकै छी पलायनवादी।

वर्ष 1954 मे हम आई.कॉम.क परीक्षा द' चुकल छलहुँ। अपन छोट पित्ती पं. देवेन्द्र झा सँ डॉ. लक्ष्मण झाक कतेको यशोगान सुनि चुकल छलहुँ। डॉ. झा पटना छोड़ि दरभंगा मे 'मिथिला मंडल' संस्थाक माध्यमे मिथिला-मैथिलीक काज क' रहल छलाह। हमहूँ ओतहि दीक्षित भ' गेलहुँ। परीक्षाक परिणाम आब' तक फुरसति छल। डॉ. झा नेपाल आ बिहारक बीच अंग्रेज शासक द्वारा 1816 मे मिथिलाक 5000 वर्गमील जमीन सुगौली (चम्पारण) सन्धिक अधीन गोरखा केँ द' देने छल आ बँटवाराक कार्यान्वयन लेल पक्का ईंटाक स्तंभ बनबा देलक। एकरे निरीक्षणक हेतु सात गोटेक दल डाक्टर झाक नेतृत्व मे सुरसंड टीशन जयनगर तक प्रत्येक गाम भ्रमण क' आ एहि बँटवाराक हेतु जनमानसक विचार सँ अवगत भेल। एहि दल मे हमहूँ छलहुँ आ हमर अर्थशास्त्रक प्राध्यापक डॉ. लक्ष्मीनारायण सिंह सेहो छलाह। एकरा 'पाया आन्दोलन' कहल गेल। यैह हमर प्रथम मिथिला-मैथिलीक काज छल। डॉ. झा एकर बाद 'दी नादर्न बॉर्डर' किताब 1955 मे लिखलनि। 1956 अगस्त-सितम्बर तक हम दरभंगा मे हिनके सबहक संग मिथिला-मैथिलीक काज करैत रहलहुँ। हमरा मिथिला छात्र संघक सचिव सेहो बना देल गेल छल।

एहि बीच एक टा पैघ घटना भेल—डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक अध्यक्षता मे मिथिला रिसर्च इन्स्टीट्यूट आ अन्य विद्यालयक संस्कृत पण्डितक साक्षात्कार। एहि मे डॉ. चटर्जीक व्यवहार मिथिलाक पण्डित समुदायक संग अशोभनीय भेल छलनि जे डॉ. झा केँ अप्रिय बुझा पड़लनि। संध्याकाल डॉ. चटर्जीक नागरिक अभिनन्दन लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी मे भेल छल जकर अध्यक्षता पं. गिरीन्द्र मोहन मिश्र कयने छलाह। धन्यवाद ज्ञापनक जिम्मा डॉ. झा केँ देल गेलनि। डॉ. झा धन्यवादक संग कतेको उलाहना डॉ. चटर्जी केँ देलथिन जे मैथिली भाषाक अहित मे हिनका द्वारा आ बंगाली अफसर द्वारा कयल गेल छल। डॉ. चटर्जी स्पष्टीकरण देलनि। एहि बीच दर्शक दीर्घा सँ एक सज्जन जोर सँ हिंदी मे बजलाह आ डॉ.

झाक निन्दा कयल। सभा समाप्त भेला पर डॉ. झा चिकरि उठलाह—जे के लुचवा छल जे उर्दू मे हमरा गारि देलक। यदि मैथिली मे बाजल रहितै, तखन कोनो प्रतिवाद नइँ करितथिन।

अगस्त 1956 मे हम सी.ए. पढ़बाक हेतु अत्यन्त अनचिन्हार महानगर कलकत्ता गेलहुँ। हम जाहि अभिभावक संग दरभंगा सँ जा रहल छलहुँ ओ मोकामा रेलवे स्टेशन सँ घुमि गेलाह। कारण, ओहि दिन वर्षा-पानि सँ कलकत्ताक स्थिति ठीक नइँ छलै। तखन कुमर बाजितपुरक प्रभाकर झा जिनकर पता हमरा लग छल, हम हावड़ा स्टेशन सँ बिहार प्रवासी छात्र निवास पहुँच गेलहुँ, जे हरिसन रोड (आब महात्मा गांधी रोड) पर छल। एतय प्रभाकर झा सी.ए.क छात्र रहि रहल छलाह। हमरो व्यवस्था ओ ओहि छात्र निवास मे क' देलनि। हम एहि छात्रावास मे नामांकन करा रहय लगलहुँ। प्रभाकर झाजी सेहो मिथिला-मैथिलीक कार्यकर्ता छलाह तेँ हुनका संग हमरा मैत्री भ' गेल तथा ओ हमर गार्जीयन बनल रहलाह। दोसर पता हमरा प्रबोध नारायण सिंहक छल जे ओहि समय मे नरेन्द्र सेन स्कावयर मे रहैत छलाह। ई हमर छात्र निवासक समीपे छल। भेट भेला पर हमरा सँ परिचय भ' गेलनि। संध्या काल पुनः आबय कहलनि कारण मिथिला संघक बैसार हिनके बासा पर आहूत छल। हम निश्चित समय पर पहुँचि गेलहुँ आ हमरा कार्यकारिणीक सभ सदस्य सँ परिचय करा देल गेल। एत' हम तखन बहुत उत्साहित भेलहुँ जखन एक टा मुसलमान कार्यकर्त्ता मैथिली मे भाषण कयलनि। कारण दरभंगा मे हम कोनो मुस्लिम कार्यकर्त्ता संग काज नइँ कयने छलहुँ। हमरा मिथिला निकेतनक सचिव सँ सेहो परिचय भेल। ई छात्र निवास हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु' चलबैत छलाह, जे ओहि समय मे मैथिल संघक अध्यक्ष छलाह।

राजेन्द्र छात्र भवन मे हम राजनन्दन लाल दासक संपर्क मे अयलहुँ। ओ राजनीतिशास्त्र मे एम.ए. क' रहल छलाह आ स्वयं अपन खर्चक व्यवस्था करैत छलाह। अध्ययन ओ अध्यापन दुनू। संगहि मिथिला-मैथिलीक कट्टर समर्थक। प्रभाकर झा सी.ए. पास क' दामोदर वैली कारपोरेशन मे नोकरी कर' लगलाह आ पंचेत डैम मे पठा देल गेलाह। हमहूँ राजेन्द्र छात्र भवन मे रह' लगलहुँ आ सी.ए.क पढ़ाइ करैत रहलहुँ। मिथिला-मैथिलीक काज जोर-शोर सँ चलैत रहल। दरभंगा मे डॉ. लक्ष्मण झाक सान्निध्य मे पड़ल बीज क्रमिक विकसित होइत गेल आ हम मिथिला-मैथिली आंदोलन मे अतिसक्रिय भ' गेलहुँ। बुझू जे—'चंचल चरन, चित चंचल भान'। एत' हम मार्क्सवादी साहित्य सँ अपना केँ जोड़ल आ बंधु-बांधवक बढ़िया ग्रुप तैयार क' लेलहुँ। ताबत साम्यवादी पार्टी मे विभाजन नइँ भेल छल। सदस्यताक हेतु आमंत्रण भेटल मुदा पार्टी दू भाग मे बँटि गेल। हमर किछु मित्र

सी.पी.आई. मे रहलाह। कारण एत' कम्यूनिस्ट नेता भोगेन्द्र झाक पैघ प्रभाव छलनि। हम तटस्थ रहि गेलहुँ आ मिथिला-मैथिलीक काज मे जुटल रहलहुँ। दरभंगा सँ संपर्क मे रहलहुँ। मिथिला विश्वविद्यालय ओ अन्य मिथिला-मैथिलीक काज चलैत रहल।

3 जुलाइ, 1959 मे हमर विवाह भ' गेल। पोस्टकार्ड पर मात्र दू पाँती लिखल पिताक पत्र भेटल। हुनक आदेशक पालन कयल। हमर सी.ए.क पढ़ाइ अढ़ाइ वर्ष व्यतीत भ' गेल छल। हमरा सबहक समय मे तीन हजार रुपया प्रीमियम देला पर आर्टिकिलशिप भेटैत छलै। पहिने हमरा जोगार नइँ भ' सकल तेँ हमरा दू वर्ष ऑडिट-क्लर्कशिप कर' पड़ल। हमरा सबहक समय मे चारि वर्षक ट्रेनिंग अनिवार्य छलै। हमर ट्रेनिंग डेढ़ साल पूरा भ' गेल छल आ अढ़ाइ वर्षक खोज मे छलहुँ। संयोगवश रामेश्वर ठाकुर चार्टर्ड एकाउंटेंट जे बिहार प्रवासी छात्र संघक प्रमुख सदस्य ओ राजेन्द्र छात्रभवनक निर्माण समितिक सचिव छलाह, राजेन्द्र छात्र निवास मे छात्र लोकनिक सुविधा-असुविधाक निरीक्षणक लेल आयल छलाह। हमरा सेहो साक्षात्कार भेल आ हम अपन अढ़ाइ वर्षक हेतु आर्टिकिलशिपक चर्चा कयलियनि। ओ स्वीकार क' लेलनि। हमरा अढ़ाइ वर्षक हेतु अढ़ाइ हजार रुपया प्रीमियमक रूप मे देब' पड़ल जे ओ प्रति मासक हिसाब सँ हमरा घुमा देलनि। ओहि साल ओ दिल्ली मे एस. वैद्यनाथ अय्यर एण्ड कंपनी कीनने छलाह। एहि मे हमरा आर्टिकिलशिप द' देलनि। दिसम्बर 1959 मे हमरा कलकत्ता छोड़ि दिल्ली जाय पड़ल। कार्यालय थापर हाउस, 124 जनपथ मे छल। कार्यालयक स्टोर रूम मे चपरासीक संग रहैत छलहुँ। आनठाम घर ल' क' रहब हमर सामर्थ्यक बाहर छल तेँ हेतु हम प्रयास कयल जे हमरा बाहरक ऑडिट भेट जाय। हमरा कार्यालय एहि योग्य बूझि दू बेर नाहन (हिमाचल प्रदेश) आ दू बेर जीवन बीमा निगमक काज सँ इन्दौर पठा देलक। दिल्ली सँ बाहरक काज लेला सँ हमरा आर्थिक बचत होइत छल, जाहि सँ दिल्ली मे रहला पर हमरा खर्च चलि जाइत छल। पढ़बा मे असुविधा होइत छल, तेँ हेतु हम अढ़ाइ सालक अपन ट्रेनिंग समाप्त कयलाक बाद जून 1962 मे कलकत्ताक एहि फर्मक काज ल' क' फिर गेलहुँ। दिल्ली प्रवास मे हमर मिथिला-मैथिलीक काज बन्द प्राय रहल। एक बेर बाबू साहेब चौधरी दिल्ली पहुँचल रहथि। हुनका संग तीन-चारि उच्चपदस्थ प्रशासनिक अधिकारी सँ संपर्क कयल तथा मिथिला-मैथिलीक विकासक चर्चा कयल।

जून, 1962 मे हम अपन ट्रेनिंग समाप्त क' कलकत्ता आबि गेलहुँ। सी.ए.क इन्टर परीक्षाक तैयारी मे लागि गेलहुँ। खर्चा चलयबाक हेतु फर्म मे काज करय लगलहुँ। इन्टर सी.ए.क परीक्षा देलाक बाद हमरा एक टा कंपनी मे सेक्रेटरी ओ

चीफ एकाउन्टेन्टक नोकरीक प्रस्ताव भेटल। हम पिता कें एहि मादे पत्र लिखलियनि। हमर प्रस्ताव कें नकारि देलनि आ फाइनल सी.ए.क परीक्षा मे भिड़ जयबाक आदेश भेटल। 1964क नवम्बरक परीक्षा मे फाइनलक एक पार्ट पास कयलहुँ। राजेन्द्र छात्रभवन, रतु सरकार लेन (चितरंजन एवेन्यूक समीप) मे बिहारी छात्र लोकनिक छात्र निवास बनिक' तैयार भ' गेल छल। प्रख्यात समाजसेवी सीताराम सेकसरिया एकर न्यासक अध्यक्ष आ रामेश्वर ठाकुर सचिव छलाह। हम बिहार प्रवासी छात्रसंघ मे एक सक्रिय कार्यकर्त्ता छलहुँ आ रामेश्वर ठाकुरक ऑडिट फर्म मे काज करैत छलहुँ तथा बड्ड सम्मान दैत छलियनि। सी.ए.क परीक्षा सन्निकट छलै आ कार्यालय सँ छुट्टी ल' क' परीक्षाक तैयारी मे लागल छलहुँ। रामेश्वर ठाकुर छात्र भवन मे घुमि-फिरिक' सब व्यवस्था देखि रहल छलाह। हिनक विरोधी लोकनिक छात्र सेहो एहि भवन मे रहैत छलाह। उपर तल्ला सँ हिनका देह पर सुराही भरल पानि केओ खसा देलकनि। विरोधीक उद्देश्य हिनका बेइज्जत करबाक छलनि। छात्र भवन मे भयंकर हल्ला-गुल्ला मचि गेल। अपना ग्रुपक छात्र मे हम सीनियर छलहुँ तेँ बहुत प्रभावी ढंग सँ विरोध कयल। फलस्वरूप, रामेश्वर ठाकुर हमरा अनुशासनहीनताक कारण छात्र भवन सँ निष्कासित क' देलनि आ अपन निवास स्थान मे जगह द' देलनि। हमर सब सामान एतहि पहुँचा देल गेल। जखन हमर ग्रुपक कार्यकारिणी सदस्य कें बुझल भेलनि, सचिव महोदयक एहि काजक भर्त्सना कयलनि। हमरा तुरन्त एक कोठली भेट गेल। नीचाँ मे प्रभाकर झा, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट रहैत छलाह। हम अपन भोजनक व्यवस्थाक लेल प्रेशरकुकर, चौकी, टेबुल आ एक कुर्सी कीनि लेलहुँ। अपन पढ़ाइ-लिखाइ ओ मिथिला-मैथिलीक काज मे लागि गेलहुँ। छात्र जीवनक शेषकाल मे एकर पैघ प्रतिफल भेटल।

1964 मे हमर पत्नी पन्ना झा बिहार विश्वविद्यालय सँ मनोविज्ञान विषय मे बी.ए. (आनर्स) कयलनि। अग्रिम पढ़ाइक उत्कट इच्छा ओ लगन छलनि। हमर सी.ए. परीक्षाक दोसर ग्रुप बाकी छल। कलकत्ता मे हम कोठली भाड़ा पर लेने छलहुँ। ओहो 1965 मे कलकत्ता आबि गेलीह आ कलकत्ता विश्वविद्यालय मे नाम लिखा लेलनि। आ नियमित रूपेँ क्लास कर' लगलीह। हम नवम्बर 1965 मे सी.ए.क दोसर ग्रुपक परीक्षा देल आ 1966क जनवरी मे परीक्षाफल प्रकाशित भेल आ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट भ' गेलहुँ। हमरा सन मध्यम परिवारक आर्थिक स्थिति वलाक हेतु ई असंभव छल। हमर ई साधाना सफल भेल संगहि अध्ययनक क्रम मे सतत प्रेरणास्रोत पिता विद्यावाचस्पति पं. उपेन्द्र झाक स्वप्न कें साकार कयल। सी.ए. पास कयला पर पिता सलाह देलनि जे योग्यताक अनुरूप अर्थ कमायब। बेसी पैसा मे अनेको विकार छै, तेँ एहि सँ बचब। हम एकरा गिरह बान्हि लेल। आद्यपर्यन्त एकर निर्वाह

क' रहल छी। प्राय: हुनका बुझल छलनि जे एहि धंधा मे गलत ढंग सँ अर्थोपार्जनक रास्ता छै। हम निश्चय कयलहुँ जे नोकरी नइँ करब आ चार्टर्ड एकाउन्टेन्टक धंधा-पेशा करब।

रामेश्वर ठाकुरक संग हमरा प्रैक्टिस करबाक उपयुक्त मौका नइँ भेटल। पुन: हमरा दरभंगा राज सँ संबद्ध कलकत्ताक एक विशाल कंपनी मे योग्यता अनुरूप नोकरीक प्रलोभन भेटल। हम अपन पिता कें सूचित करैत दरभंगा राज्यक उच्चाधिकारी सँ संपर्क करबाक हेतु कहलियनि। हमरा मुक्ति भेटि गेलि। हम पहिने जाहि ऑडिट फर्म मे काज सिखि रहल छलहुँ ओतहि 1967 मे पार्टनरशिप भेटि गेल। एहि फर्म मे हम नवम्बर 1975 तक प्रैक्टिस कयलहुँ आ अन्य असौकर्यक संग अपन अनुज आ पत्नीक समुचित व्यवस्था नहि भेलाक कारणें दिसम्बर 1975 मे अपन तीन टा छोट-छोट बच्चा, पत्नी आ अनुजक संग पटना आबि गेलहुँ आ अपन ऑडिट फर्म 'झा एण्ड एसोसिएट्स' नाम सँ चार्टर्ड एकाउन्टेन्टक प्रैक्टिस शुरू कयल। ने क्लाइन्ट, ने कार्यालयक समुचित स्थान, ने पोथी, ने अर्थ, ने समुचित सहयोग—सब प्रतिकूल परिस्थिति सँ लड़ैत आब हमरा लग सब किछु अछि। निवासक हेतु उचित आवास, कार्यालयक हेतु पटनाक केन्द्र मे स्थान, पत्नी मगध विश्वविद्यालयक विशिष्ट प्राध्यापक सँ अवकाशप्राप्त, अनुज विशिष्ट हिंदी दैनिक पत्रक संपादकीय विभाग सँ अवकाशप्राप्त आ दुनू बालक आ कन्या अपना-अपना जीविका मे अत्युत्तम।

हम मिथिला-मैथिलीक काज मे 1959 तक शिशुक भूमिका निभायल। दिसम्बर 1959 सँ जून 1962 तक दिल्ली, इन्दौर, ओ नाहन (हिमाचल प्रदेश) मे मात्र मिथिला-मैथिलीक काज कें स्मरण राखल। जुलाइ 1962 सँ नवम्बर 1975 तक प्रौढ़ भ' एहि काज मे तन-मन सँ लागि गेलहुँ। मिथिला राज्य आन्दोलन आ मिथिला-मैथिलीक उपेक्षाक विरोध मे आन्दोलन कें अपन धर्म आ कर्म बनायल। 27 जुलाइ 1952 मे दरभंगाक नगर भवन मे डॉ. लक्ष्मण झाक नेतृत्व मे सर्वसम्मति सँ मिथिला राज्यक माँग कयल गेल। पुन: 26 जुलाइ 1953 मे एहि नगर भवन मे दिल्ली ओ पटनाक तत्कालीन सरकार कें राज्य निर्माणक हेतु बाध्य कयल गेल। 22 नवम्बर, 1953 मे आधा मील लम्बा जुलूस कलकत्ताक सड़क पर मिथिला राज्यक नारा लगबैत शहरक गिरीश पार्क मे 15000 मैथिलक जनसभा भेल। कलकत्ताक प्रेस एहि माँग कें प्रमुख स्थान देलक। कल्याणी (पश्चिम बंगाल) मे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीक अधिवेशन आहूत छल। जानकीनन्दन सिंह 56टा कार्यकर्त्ताक संग मिथिला राज्य निर्माणक हेतु एहि अधिवेशन मे स्मारपत्र प्रस्तुत करबाक हेतु जा रहल छलाह जे बिहार सरकारक आदेश पर पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा 22 जनवरी 1954 मे आसनसोल मे बन्दी बनाओल गेलाह। फलस्वरूप, कलकत्ता, पटना, दरभंगा ओ

मिथिलांचलक अधिकांश गाम मे भयंकर प्रतिक्रिया भेल। अत्याचारी शासकक भर्त्सना आ राज्यक पुरजोर माँग कयल गेल। हमर भाषाक मान्यता नहि। पढ़बाक हेतु विश्वविद्यालय नहि। मैथिली भाषा केँ साहित्य अकादमी, भारतक संविधान ओ लोक सेवा आयोग मे स्थान नहि देल गेल छल। धिया-पुता केँ मैथिली माध्यम सँ शिक्षा नहि। दरभंगा मे रेडियो स्टेशन बनल मुदा मैथिली मे कार्यक्रम ओ समाचार नहि सुनायल जाइत छल। आब हमरा सबहक अधिकांश माँग सरकार मानि चुकल अछि। मात्र भाषाक आधार पर प्रान्तक निर्माण अधर मे लटकल अछि।

प्राचीन काल मे मिथिलांचल आर्थिक दृष्टि सँ स्वाबलम्बी छल। प्रत्येक आवश्यक वस्तुक उत्पादन ओ निर्माण एत' भ' जाइत छल। समाजक खास वर्ग उद्योग ओ धंधा मे संलग्न छल। आर्थिक विपन्नता, बेकारी एवं भाषाक संग अत्याचार भ' रहल छल तेँ 12 दिसंबर 1911 केँ बिहार ओ उड़ीसा बंगाल सँ अलग भेल। यैह मुख्य कारण छल जे 1935 मे उड़ीसा बिहार सँ अलग भेल। 1939 सँ आदिवासी महासभा एवं जयपाल सिंहक नेतृत्व मे झारखण्ड प्रान्तक माँग जोर पकड़लक, सतत संघर्ष चलैत रहल। अंत मे 15 नवम्बर, 2000 केँ झारखण्ड केँ बिहार सँ अलग कयल गेल। मुदा अलग राज्य मिथिला एखन धरि स्वप्न मे अछि।

1997-98 मे हृदय-रोगक ऑपरेशनक बाद सक्रिय रूपेँ मिथिला-मैथिलीक काज नहि क' सकब, से विश्वास भ' गेल। मैथिली पत्र-पत्रिका मे लेख आ पटना आकाशवाणीक भारती कार्यक्रम मे सक्रिय रूपेँ भाग लेब' लगलहुँ। फलस्वरूप, 'मिथिलाक आर्थिक विकास' (2000), 'मिथिलाक जनपदीय विकास' (2005), 'मिथिला मे जल संसाधन ओ प्रबंधन' (2006), तथा 'विकास ओ अर्थतंत्र' (2008) पुस्तक लोकक समक्ष प्रस्तुत कयल जाहि सँ कि मिथिला राज्य आन्दोलन सबल भ' सकय।

दिसम्बर 1975 मे पटना अयला पर सी.ए.क संख्या अत्यल्प छल। सी.ए.क इन्स्टीट्यूट दिल्ली मे आ क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर मे छल। शाखा कार्यालय पटना मे नइँ छल कारण पचास टा सी.ए. एत' नहि छलहुँ। पटना आ मुजफ्फरपुर केँ जोड़िक' कहुना 50क संख्या पुरायल तथा पटना मे शाखा कार्यालय स्थापित भ' गेल। हम परोक्ष रूप मे शाखा कार्यालयक काज मे सक्रिय रहैत छलहुँ। 1995-97क चुनाव मे सर्वसम्मति सँ एकर कार्यकारिणी मे सदस्य ओ एक वर्ष एकर चेयरमेन रहलहुँ। अपन इच्छाक विरुद्ध, किन्तु अपन जेठ बालक जे स्वयं सी.ए. छथि मात्र हुनकर सन्तोषार्थ। कारण, हम काज मे विश्वास करै छी, पदाधिकारी बनय मे नहि। आब हमर छोट सन गाम मे 1966क बाद 14-15 गोटे सी.ए. भ' गेल छथि। हम अपने घर मे तीन-चारि टा चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट छी।

पटना में मिथिला-मैथिलीक काज करयवला कतेको संस्था। मुख्य संस्था 'अचेतना' समिति अछि। हम एकर आजीवन सदस्य बनि गेल छी तेँ, मुदा ई संस्था कहुना साहित्यिक ओ सांस्कृतिक कार्यक्रम आ अपन विशिष्ट पुरखा केँ मात्र स्मरण करैछ। मिथिलाक आर्थिक विकास लेल कोनो कार्यक्रम नहि। एहि मंच सँ विभिन्न विचारधाराक लोक अपना क्षेत्रक सर्वांगीण विकासक लेल आवाज नहि उठा सकैछ। एक समय छल जखन एकर पदाधिकारी मात्र अपन समाँगक विकासक लेल, जे राज्य सरकार मे काज करैत छलाह, मात्र पैरवी करैत छल। मात्र व्यक्तिक विकास, सामूहिक विकासक कोनो चर्चा नहि। किछु पोथी छपने अछि। एक टा त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित भ' रहल छै। पोथी आ पत्रिकाक प्रचार-प्रसार नाममात्र। हम दरभंगा महाराजक आ हुनक संस्थाक ऑडिट गत पचास वर्ष कयने छी। महाराजक दरबार सेहो देखने छी। एहि संस्थाक कार्यकारिणीक सदस्यक वैह हाल जे महाराजक दरबार मे होइत छल। निर्णय राजा ल' लेलनि, हँ मे हँ सदस्य कयलनि। भ' गेल, मिथिला-मैथिलीक विकास।

मिथिला-मैथिली आन्दोलनक कर्मभूमि कलकत्ता हमरा छोड़य पड़ल। मैथिली आंदोलनक हमर नेता प्रबोध बाबू नहि रहलाह। संगठनात्मक काज केँ जोर-शोर सँ चलयनिहार बाबू साहेब चौधरी आ सुखदेव टाकुर नहि रहलाह। नाट्यकर्म केँ नव-नव दिशा देनिहार श्रीकान्त मंडलक अकाल मृत्यु भ' गेलनि। ललका पाग सिनेमा नहि पूरा क' सकला। वीरेन्द्र मल्लिक अपन प्रज्वलित मैथिली साहित्यक रचना छोड़ि कर्मकांडक पोथी मे ओझरायल रहैत छथि। एसगर रामलोचन ठाकुर की-की करताह! हमहूँ अपन पत्नी पन्ना झा आ अनुज अग्निपुष्प ओ कुणाल केँ मगधक एहि भूमि मे ल'क' चलि अयलहुँ। जत' मिथिला मैथिलीक रचनात्मक काज नहिए बराबर होइछ। अग्निपुष्प 'संवाद' अनियतकालीन पत्रिका कुहरि क' निकालि रहल छथि आ कुणाल नाटक ओ मैथिलीक एक टा सीरियल बनाब' मे लागल रहैत छथि। पन्नाजी मैथिल महिला संघक कार्यक्रम मे लागल रहैत छथि। हम कहुना क' चारि गोट पोथी मिथिलाक आर्थिक विकासक संबंध मे पाठकक समक्ष प्रस्तुत क' चुकल छी। एतावता। डॉ. लक्ष्मण झाक संग युवावस्था मे मिथिला राज्यक जे स्वप्न हम देखने छलहुँ से बुझि पड़ैय जे पूरा नहि होयत बाँचल जिनगी मे।

अंतिका, जनवरी-जून, 2009

जल दर्पण–स्वच्छ नयन

उषाकिरण खान

सासु मोरा गेलनि नैहर ननदि बसु सासुर रे
ललना रे ईहो देह सरिसव फूल चढ़ल मास आठम रे...

सोहरक पात्र सँ पहिने परिचय भेल पाछाँ सुनलहुँ। बाइस वर्षीया कृषकाय पीयर आसन्न प्रसवा स्त्रीक आँगुर पकड़ने घुँघरल कुंचित केश मे श्वेत साटनक रिबन बन्हने, श्वेत घेरदार फ्रॉक पहिरने जे बाला ऐन गौरांग प्रभु कमिश्नर रादरफोर्डक सोझाँ ठाढ़ि भेलि। कमिश्नरक गौरांग कन्या गाउन पहिरने छलि फूलदार जाहि पर तितली आबिक' बैसि गेलै। बालिका आँगुर छोड़ा तितली पकड़' बढ़लि। गौरांगीक हँसैत आँखि, बालिकाक निर्भय कृत्य। तितली उड़ि गेल, बालिका ओकरा पाछाँ दौड़लि। पीयर आसन्न-प्रसवा स्त्री अपना एकाकी होयबा आ चंचल बालिकाक कारणें परेशान होयबाक दलील द' अपना आजन्म कैदी स्वतंत्रता सेनानी पतिक पैरौल पर रिहाई वास्ते दरखास्त देबय आयल छलीह। कमिश्नर तैयार नइँ भेलथिन। हँ, राजनीतिक कैदीक पत्नी होयबाक कारणें नर्सिंग होमक स्वतंत्र कोठरी, स्वतंत्र सेविका आ सब सुविधा प्रदान कर'क आदेश पारित कयलथिन।

ओम्हर बालिकाक पाछाँ सिपाही सभक दौड़ब आ तकरा रोकब मिस रादरफोर्डक त्वरित कार्य भेलनि। बालिकाक अतिशय चंचलता पर मुग्ध गौरांगी ओकरा कोरा मे उठा लेलथिन आ दुनू हाथ मे चॉकलेट देलथिन जे जखन पीताभद्युति माय लग अयलनि तँ ओ छीनिक' फेकि देलथिन। गौरांगी युवती आबि चॉकलेट उठा लेलथिन आ दोसर लेमनचूसक दोना द' कहलथिन, 'सॉरी, यह इण्डियन है। मैं भूल गई थी। सॉरी प्लीज बेबी को लेने दो।'

'नो' मायक दृढ़ अंग्रेजी उत्तर। आ कखनहुँ मायक मुँह तकैत बकौर लागल मिनी कखनहुँ गौरांगीक पछतायल मुँह देखैत। रिक्शा पर चढ़ि जनाना अस्पतालक नर्सिंग होम चल अयली।

बेर-बेर मायक मुँह सँ ओ घटना सुनल-सुनायल जाइत रहल तँ मोन अछि। घटना स्मरण करबैत रहबाक पैघ कारण जे हमरा सभ सन नेन्ना कें पढ़ेबाक लेल ओ गौरांगी युवती अपना दिवंगता मायक नाम पर लेडी रादरफोर्ड बालिका विद्यालय फोललनि ओ विद्यालय लहेरियासरायक प्रथम उच्च कन्या विद्यालय अछि। 'चॉकलेट विदेशी छलै, लेमनचूस किऐ ने लेबय देलें?' पैघ भेला पर मिनी पुछथिन।

'ओकरे टाकाक ने छलै?'

'आब किऐ ओकर नाम लैत छें?'

'तखन हमर दुख अपार छल, आयु छोट छल आ ओकरा मात्र अंग्रेज कमिश्नरक बेटीक रूप मे चिन्हैत छलिऐ, पाछाँ ओकर काज जे नीक भेलै तँ नाम लैत छी।'

मिनी सन्तुष्ट।

गांधी आश्रमक तर्ज पर हमरा सभक घर-परिवार ब्राह्मण-राजपूत-कायस्थ-मुसहर-दुसाध-मुसलमान इत्यादि जतेक जाति होइत हेतै से सभ एक्के चूल्हिक रान्हल एके संग बैसिक' खाए, 'सहनो भुनक्तु...'। ओही लागले आश्रम, भजनावलिक गीत श्लोक संध्या पाठ होइक—ईशावस्यं मिद्म सर्वम्... समापन...ओम तत्सत श्रीनारायण तू... सँ होइक। कोनो आडम्बर युक्त पूजा नइँ होइत देखने छलिऐ। भाँति-भाँतिक राजनीतिक साहित्यिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्व सभ सँ साक्षात्कार होइक बालिका मिनी कें। गंभीर आ गरमागरम बहस मे भाग लेबय लेल सतत वाचाल मिनी अपना नाम कें सार्थक करय लेल बैसैत रहय। बाबूजी आ हुनका मित्र सभक उल्लास, मुदा मायक मात्र दृष्टिनिक्षेप सँ हलक सूखि जाइत छलै, से आइ धरि होइत छै। सोझाँ मे चिरदुखिनी चिर-तपस्विनी कौस्तुभ स्तंभ माय रहै तँ बोलती बंद।

एल.आर. गर्ल्स स्कूल मे एक टा छलथिन ओस्तानी जी, मिस खलको। हुनका सलाह पर मात्र सवा पाँच बरिसक मिनी कें पटनाक लोदीपुरक ऐंगस गर्ल्स आवासीय विद्यालय मे राखि देल गेल। स्कूल मे साउथ अमेरिकन टीचर्स रहथिन। किछु भारतीय सेहो। मिनीक संग स्कूल सँ जे लिस्ट गेल छलै तकर दोबर—फ्रॉक, पैन्टी, रूमाल, स्वेटर इत्यादि छलै। जलपानक सामग्री छलै आ पॉकेटमनी प्रिंसीपल लग छलनि। मुदा भनहि पैघ छरदेवाली होउक, विस्तृत मैदान आ सुन्दर फुलवारी होउक, मिनी घोर उदासी मे डूबि गेली। ओ चुप जकाँ भ' गेलि। बेसी मोन नइँ लगनि। मिशन स्कूल छलै। अविभाजित बिहारक आदिवासी क्षेत्रक ईसाई कन्या सभ रहथि। मात्र मिनी बाहरी रहथि जकरा सभ गोटा 'गैर मसीही लड़की' कहैक।

स्कूल मे ईसाई पाबनि सभ खूब धूमधाम सँ मनाओल जाइक। जेना गुड फ्राइडे, आ ईस्टर। एखनो अप्रिल मास अबैत छै तँ मिनी कें मोन पड़ैत छनि—कोना खजूरक हरियर डारि-पात कान्ह पर ल' लोदीपुरक स्कूल सँ चलैत-बुलैत सभ गोटा गिरजाघर

पहुँची। गेट सँ बहराथि तँ बड़का कड़ाह मे घी खौलैत, दोसर मे चासनी औंटाइत, तस्ला सन धोधिवला हलुआइ जिलेबी छनैत। ओइ जिलेबीक स्वाद मिनी संगे सभ छात्र-छात्रा केँ बूझल छलनि। रवि दिन केँ चारि-चारि टा सँझुका जलपान मे भेटै। आगाँ बढ़ि दहिना मोड़, ताहि सँ आगाँ गोलघर जतय साल मे एक बेर पिकनिक करय आबथि सभ गोटा। ताहि सँ आगाँ बामा तरफ बाँकीपुर गर्ल्स स्कूल आ आर आगाँ दहिना तरफ कलक्टरक बंगला। तकरा बाद खुल्ला मैदान, गांधी मैदान जाहि मे छब्बीस जनवरी केँ झंडोत्तोलन लय किछु बालिकाक जे चुनाव भेल ताहि मे मिनी सेहो चुनल गेलीह। चुनल जे गेलीह तखन की सभ भेल तकर रोचक कथा पाछाँ कहब। ओ कथा अपना पूर्ण रस-परिपाक संगे अपने सभक समक्ष उपस्थित होयत। नः से अझुकी मिनी कहै छथि जे हँसब जूनि।

गांधी मैदानक विस्तार पार करैत-करैत गिरजाघर आबि जाइक। तखन प्रार्थना। जीवन पटना मे बीति गेलनि मिनीक, लहेरियासराय मे कए दिन? मुदा ईस्टर केर मौका परक ओ मुक्त-भ्रमण जे आनन्द देलकनि से कहाँ? तकर सुखक वर्णन धर्मराज-सभा मे आधा सोन बनलि अर्धतुष्टा सपनउर जकाँ मिनी सेहो नइँ क' सकैत छथि।

पिता केँ शिक्षाक प्रति एतेक आग्रह जे अपन प्राणाधिक एकमात्र पुत्री केँ पढ़य मे कोनो रियायत नइँ। गर्मीक छुट्टी मे भरि मोहल्लाक समवयस्क बालक-बालिका लोकनिक चिर प्रतीक्षित सेहन्ता पूर होइत छलनि। बंगाली टोला बला अहाताक चबूतरा आ चबूतराक कात मे विशाल लतामक गाछ पर चढ़ब, कूदब, फानब, एक्कर-दुक्कर सँ ल' डेंगा पानी धरि खेलायब सभ टा सेहन्ता। भरि दुपहरिया कम्पाउण्डर साहेबक घरक पछुआड़ वला सिमरक गाछ तर बैसिक' हलुआ-पूरी छनाइक। घरे घर सँ आटा-चीनी घी इत्यादि अबैक। बनबय मे सभक मुँह-कान, हाथ-पयर कारी सेहो होइक आ जरि-झरकि सेहो जाइक। माय लोकनि केँ प्राय: कमे पता लगैक। एहने काल मे गर्मीक तातिल खतम होयबा सँ पहिनहि लताम गाछ पर सँ कूदैक प्रतियोगिता करबा काल पयर मे सीसाक टुकड़ा गँथा गेल। पाँच इंच कटि गेल। तुरत डाक्टर-वैद्य भेल, ड्रेसिंग भेल मुदा स्कूल जायब नइँ रुकल। बाबूजी कोरा मे टाँगिक' ट्रेन मे चढ़लाह, फेर स्टीमर पर चढ़लाह आ ओहिना दीघा घाट उतरि स्कूल मिनी दाइ केँ पहुँचा देल गेल। प्रिंसिपल केँ दबाइ इत्यादिक अतिरिक्त टाका दए घूरि गेलाह। माय घर मे कनैत रहलीह, तँ कहलथिन, 'बेटी केँ आँचर मे झाँपिक' नइँ राख'क अछि अहाँ केँ।'

मिनी जनैत अछि, जे अपना नवविवाहिता पत्नी केँ गांधीजी लग गांधी आश्रम मे छोड़ि आबि सकैत छथि ओ बेटी सँ की-की ने अपेक्षा करैत हेताह। की बाबूजी

अंतरिक्ष मे सँ ताराक बीच बैसल देखैत हेताह, की बेटी मिनी हुनकर कल्पनाक अनुरूप भेलनि? के जानए? पयर मे बैन्डेज आ ज्वराक्रांत शरीर, मोनक पीड़ा मोनहि दबैत बाबूजीक दू खण्ड महाभारत केर, राजगोपालाचारी बला (हिंदी अनुवाद) दैत कहलनि, 'एखन दौड़-भाग तँ हेतौ नइँ, ई पढ़िहें।' मिनी पहिने सिकरूमक बिस्तर पर पछाति छात्रावासक बरामदा पर बैसलि दुनू खाट महाभारत पढ़ि गेलीह। कतेको प्रश्न मोन मे उठलनि। ईशू ख्रीस्त जकर रोज प्रार्थना करैत छथि से आ ईश्वर कृष्ण की एक्के छथि?

आब एक टा रोचक कथा—मिनी ब्लू-बर्ड अर्थात 'नीली चिड़िया' केर रूप मे गांधी मैदान मे परेड मे शामिल भेलीह। नीक परेड करै वाली छलीह तँ सभ सँ आगाँ छलीह। आगाँ छलीह तँ तत्कालीन वयोवृद्ध राज्यपाल माधव श्री हरिअणे सँ हुनका हाथ मिलेबाक रहनि। आब एक टा बड़का लोचा। नीली चिड़िया जे दू टा आँगुर देखाक' शपथ लैत छल ताहि मे एक प्वाईंट ईहो रहै जे 'हम दोस्ती प्यार दिल से करेंगे, सो बायाँ हाथ मिलाएँगे।' माने जे जौं अहाँ हैण्डशेक करी तँ बामा हाथ सँ। मिनी धर्मसंकट मे पड़ि गेली। किछु दिन पूर्व महाभारत पढ़िक' समाप्त केने रहथि। ताहि मे राजा ययाति देवयानी केर बामा हाथ पकड़ि कूप सँ बहार करैत छथि। तखन देवयानी हुनका कहैत छथिन, 'अहाँ हमर बामा हाथ पकड़लहुँ आब हम अहाँक पत्नी भेलहुँ।' आ से साँचे ओ ययातिक पत्नी भ' गेलथिन। आठ वर्षक मिनी पोथि पढ़ि तँ गेलि, ज्ञानक अर्जीण भ' गेलै। ओ गमलक ई बुढ़बा हमर पति भ' जायत तँ झट द' दहिना हाथ आगाँ क' देलक। घुरला पर प्रशिक्षिका सजाय देलथिन जे ओ बिसरि कोना गेल जे बामा हाथ मिलेबाक रहै। मिनी की कहैत, मोनक शंका मोनहि रखलक। गंगा, कोसी आ सुवर्णरेखा मे कतेको क्यूसेक पानि बहि गेलै। कत्ताक ऋतु-परिर्वतन भेलै। पतिक संग उत्तर सँ दक्षिण-बिहार सेहो बउआयलि आ कालान्तर मे लेखिका भ' स्थापित भ' गेलि। ओइ कथाक एक्सटेंशन ई छै जे—सारिका मे 'कुसुमित कानन कुँज बसी' नामक रिपोर्ताज पटना शहर पर छपल छल। ताहि मे अइ प्रसंगक वर्णन छल। 'सारिका'क वृहत्त पाठक वर्ग मे कैक टा एंगस गर्ल्स स्कूलक प्राक्तन छात्रा रहथि। ताहि मे मिनीक सीनियर गर्ल्स गाइडक कैप्टन सरोजिनी एक्का सेहो रहथि। ओ 'सारिका' केँ पत्र लीखिक' पता माँगलनि आ तखन हमरा एक टा वृहत्त पत्र देलनि। ओहि मे ओ जिकिर केलनि कि, 'आइ 'सारिका'क रिपोर्ताज पढ़ि ओ घटना सद्य: मोन पड़ैत अछि आ सपरिवार चर्च क' खूब हँसै छी?' ईहो लिखलनि जे, 'तुम जैसे किरण चौधरी से उषाकिरण खान हो गई हो मैं भी अब सरोजिनी कुजुर हूँ।' अपन परिवारक ब्यौरा देलनि।

ख्यात कथा लेखिका उषाकिरण खान, किरण आ मिनीक नगदा पर आगाँ-

पाछाँ होइत रहैत छथि। एंगस गर्ल्स स्कूल मे जखन समारोह होइक तँ प्राय: आदिवासी नृत्यगान किंवा बंगाली नृत्यगान होइक जाहि मे भाग लेब हिनका नीक लगनि। चारि बरिसक ऐंगस गर्ल्स स्कूलक प्रवास हिनका व्यक्तित्वक नींव केँ बहुरंगी, ठोस स्थायित्व प्रदान कयलकनि। जखन मिनी चारिम वर्ष ऐंगस गर्ल्स स्कूल मे गेलीह तखन छोट भाइ जे आब नइँ अछि, सेहो संगे गेलै। ओ छोट छलै। ऐंगस गर्ल्स स्कूल लग पुलिस लाइन छलै, ताहि दिन मे पटनाक आबादी कम छलै। आ संभवत: फायर-ब्रिगेड स्टेशन लगहि मे कतहु छलै। राति-बिराति कतहु आगि लागि गेलै कि अभ्यास करैक से नइँ जानि, मुदा ओ सायरन सूनि बच्चा सभ डेराइ। हमर भाइ कहियो बालक-आवास मे नइँ रहैक। डरे बहिन लग चलि अबैक। ओकरा स्कूल मे एकोरत्ती मोन नइँ लगै। एहने समय मे पिताक मित्र लखन जी (डॉ. लक्ष्मण झा) भेट करय अयलथिन। हुनका सभ टा खेरहा पता चललनि। ओ जिद अरोपिक' मिनी आ बउआ केँ ल' गेलथिन। तँ सन चौवनक गर्मी छुट्टीक पश्चात पटना प्रवासक पटाक्षेप भ' गेलै।

मझौलियाक मगन आश्रम, तरवाराक आश्रम, रजवा गाँव आ लहेरियासरायक चबूतरा सुन्न छोड़ि बाबूजी गांधी-आश्रम स्थापित करय घोर कोसिकन्हा मे चल गेलाह। पकड़िया नामक स्थान पर अमृत ज्ञानशाला नामक स्कूल स्थापित कयलनि, तकरे संगे कैक टा बुनियादी गृह उद्योगक केन्द्र स्थापित कर'क योजना छलै। रजवाक अपन जमीन बेचि पकड़िया लग चिरैया सँ बकुनिया धरि सैकड़ो बीघा खेत जे कास-पटपटीक जंगल रहै, बेस सस्त कीनि लेलनि। जखन ट्यूबवेल गड़ाओल गेलै तखन हमरा लोकनि आ माय गेलहुँ। चारूकात जंगल आ पानि। झगड़ुआक कुजरनी अबै एक मुजेली मुर्गीक अंडा नेने, आ माय केँ कहै, 'मर्राइन, सुनलियैह, तू लोग मुर्गी अंडा खाइ छहो, ई राखि लहो आ अल्लू दहो।'

आँगन-घर राति केँ सुग्गर खूनि जाइक। धीया-पुता केँ तँ नीक लगै। जाबत लहेरियासराय आबि नाम लिखेलनि स्कूल मे, ताबत नाव पर लग्गा चलेनाइ सिखथि, जन सभ संगे कमठौनी सिखथि, मूँग तोड़थि मुदा कीड़ी-मकोड़ी सँ बड्ड डेराथि। मूज आ सीकीक मौनी-पौती आ गहना बनेनाइ सीखथि, कुम्हार-घर जाक' चाक चलेनाइ सीखथि। आ भाँति-भाँतिक उकठाह काज अपना भाइ तथा पकड़ियाक संगी-साथी संग करथि। उकठ मे चिड़इ आ बगरा जँखन उड़ि जाइक तँ ओकर चोचा उतारब सँ ल' राति मे साँपक मणि ताकब धरि शामिल छै। मिनी दाइ प्रत्येक प्रकारक गमार उकठ केर सिरमौर रहथि तँ अपना केँ समृद्ध बुझैत छथि—हिनका लग जाहि समाजक डाइरेक्ट अनुभव छनि से भेनाइ लेखिकाक लेल कम संभव छै।

लखन जी अपना रौ मे मिनी दाइ केँ एल. आर. गर्ल्स स्कूल मे नइँ द' एम.एल.

एकेडमी मे नाम लिखा देलखिन। हुनकर कहब छलनि जे, 'लड़की आ लड़का मे की अन्तर छै? तँ एत्तहि पढ़तै।' स्कूल हमरा घर सँ गनिक' हमरा छोटका डेग सँ एगारह डेग पर छलै। हमर संगी सभ टा एल. आर. मे पढ़य। हम छिटकि गेल रही से हमरा भीतर बैसल मिनीक मोन नइँ लगै।

ताही बीच मे वज्राघात जकाँ भेलै—पिता एक दुर्घटना मे दिवंगत भ' गेलाह। बहुत दिनुका लेल मिनी स्वयं सरोवर मे डुबकी लगा गेलीह।

माय केँ जहिया गीत गुनगुनबैत सुनी तँ मुग्ध भ' जाइ। ओ गायकक बेटी छथि, स्वर साजल छनि। मुदा की गबथि से सुनू—गीत गोविन्द गाबथि, मीराक भजन गाबथि आ धीया-पुता केँ सुतबै काल हिंदी मे लोरी गाबथि—

चाँद मामा ने अमृत चुराया जी
चोरी-चोरी अकेले ही खाया जी।

छोट बच्चाक लेल अवश्य मैथिलीक गीत—सुतू-सुतू बउआ बिलड़बा काटय कान माय गेल अछि कूटय पीसय/बाबू गेल खरिहान। सुनने रही। क्रीड़ा गीत सभ सेहो खेल-खेल मे सुनने रही जेना—अटकन मटकन दहिया चटकन।

राति मे कथा सुनबथि तँ अधिकतर बोधकथा। माय स्वयं ताहि जमाना मे अर्थात 1936 मे प्रथम श्रेणी मे मिड्ल बोर्ड पास केने रहथि। ओ हिंदी संस्कृत तथा किछु-किछु अंग्रेजी जनैत छथि। हम अपना आप केँ अर्थात किरण आ क्रमश: किरण सँ उषाकिरण खानक यात्रा केँ स्वयं सरोवरक दर्पण मे देखैत छी तँ पबैत छी जे माय केर सुघड़ कौशल सँ किछु भाग अवश्य ग्रहण कयल। आ हिंदी आ मैथिलीक एहि लेखिकाक व्यक्तित्व आ कृतित्व मे जे चमक छै तकर स्रोत माय आ बाबूजीक विद्या-ज्ञान-संवेदना अछि। लोककला, लोकगीत, लोकसंस्कार सँ हमर परिचिति मिथिलाक मादे सीमित नइँ अछि। जन्म आ मातृ-पितृ संस्कार लहेरियासराय दरभंगाक अछि। ओ लोकनि पनिचोभ आ मझौलिया सन नगरक सन्निकट ग्रामक वासी छलाह तँ संस्कार, भाषा आ जीवन-पद्धति तेहने छलनि। अधिकांश समय कोसिकन्हाक कीरतपुर ब्लॉकक पकड़िया मे बीतल, अद्यावधि सैह अछि तँ ताहि ठामक सभ्यता आ संस्कृति गहेगह समायल अछि। लोककला आ लोकगीत इत्यादि सँ हमरा पकड़िया मे परिचय भेल। पकड़िया मे चारि घर किसनौत यादव, बीस घर दुसाध, दू घर कुजरा, एक घर मोची, एक घर कुम्हार छल। बाबूजी संगे एक घर धानुक, एक घर खतबे, एक घर मुसहर रजवा सँ कनैत पीटैत आयल जकरा ओ जमीन द' बसा देलनि। चारि डेग पर दू टा मुसहरी तथा आर गाम सभ छलै। ओकरा सभक

गीतनाद, ओकरा सभक कला-कौशल संस्कार सभ टा हमरा अपन लागल, आइयो धरि ताही सँ तादत्म्य बूझि पड़ैत अछि।

मैथिली मातृभाषा छल। लहेरियासराय लग सगरो सैह बाजल जाइत छलै। स्कूल मे शिक्षिकाक अतिरिक्त सभ मैथिली बजैत, मुदा लिखब-पढ़ब मैथिली मे होइत छै ई कने पैघ भ' जनलहुँ। तखन जखन हमरा चबूतरा पर बाबूजीक संगे प्रतिदिन संध्याकाल (जखन रहथि) लखनजी (डॉ. लक्ष्मण झा), लक्ष्मी बाबू (लक्ष्मी ना. सिंह), कृष्णकान्त मिश्र प्रभृत्ति केर चौकड़ी जमै। विभिन्न मैथिली पत्रिकाक मादे गप-शप होइक। ताही समय मे हमरा मोन अछि जे कल्पना शरण नामक रहस्यमयी लेखिकाक संवेदनशील कथा 'रंगीन परदा'क चर्च सुनने रहियै। 'रंगीन परदा' पढ़लहुँ, किन्तु किछु दिमाग मे नइँ अँटल। पढ़'क विषय तखन अनन्त छल, पुराकथा, धार्मिक पुस्तक अर्थात श्रीमदभागवत, महाभारत, विष्णु पुराण, बाल्मिकीय रामायण, तुलसी रामायण इत्यादि। एगारहम वर्ष सँ महादेवी वर्मा, निराला, हरिऔध पढ़ब प्रारम्भ कयल। पढ़ब प्रारम्भ भेल तकर कारण छै मनोरंजन। अन्ताक्षरीक वास्ते हमरा लोकनि पद्यक पोथीक पोथी रटि जाइ—मीरा-सूर-तुलसी-रैदास-कबीर-रहीम-रसखान ताहि क्रम मे स्मरण करी।

स्कूल मे स्वागत गान, विदागान आ छोट-मोट नाटक सभ टा लिख'क सम्पूर्ण भार हमरा पर रहय तेँ हिंदी लेखन एक टा शगलक रूप मे प्रारम्भ भ' गेल। मैथिलीक प्रति साकांक्ष नइँ रही। एल.आर. गर्ल्स स्कूल मे एक टा छात्रा हमरा सँ सीनियर रहथि ओ सुन्दर सुर वाली रहथि। एक टा स्कूली कार्यक्रम मे मैथिली गीत गओलनि। गीतकार रहथि मायानन्द मिश्र आ गीतक बोल-सुर-तान सभ टा हमरा आइ धरि तीरे-नीम-कश जकाँ गड़ल अछि। छल—

नभ-आँगन मे, पवनक रथ पर कारी-कारी बादरि आयल।

हम कवि मायानन्द जीक मैथिली भाषाक साहित्य केँ गम्भीरता सँ लेबय लेल बाध्य भ' गेलहुँ। यात्री ककाक मैथिली उपन्यास 'पारो' पढ़लहुँ। 'पारो'क एको टा संवाद हमरा नइँ भेटल। हम किछु ने बुझलियै तखन। कने पैघ भेलहुँ तँ 'नवतुरिया' पढ़लहुँ ओ पूर्णतया बुझलहुँ। स्कूल धरि मैथिली साहित्य सँ एतबहि परिचय छल।

पिताक असमय दुर्घटनाग्रस्त भेला सँ हमरा अन्तर मे एक टा खाली खोन्ह भ' गेल। हम चुप भ' गेलहुँ। हमर बाल संगी इन्दु (आब नइँ अछि) आशा, इंदिरा, विमला इत्यादि कने विचलित रहय। आशा आ शान्ता, अजरा आ जमीला बहुविध प्रयास करैक हमरा भीतर सँ मिनी केँ बहार कर'क, मुदा ओ अपना मूलस्वरूप मे कतहु हेरा गेलै तँ नइँ भेटलै। बाह्य दुनियाक अनेक अभाव मनुष्य अन्तर्मुखी भ' झेलि लैत अछि। तहिना भेल, हम कविता लिखय लगलहुँ। संगी-साथीक अतिरिक्त

यात्री-कका जनै छलाह। कॉलेज मे अयलहुँ तखन आकाशवाणी सँ बजाओल जाइ। पन्द्रह टाका पारिश्रमिक भेटय। ततेक हर्ष होअय से की कहल जाय। समय ससरैत गेलै। चीन भारत पर हमला क' देलकै आ तखन यात्री कका इत्यादि 'चीन को चुनौती' नामक कविता लिखय लगलाह। हमरा लोकनि राति-दिन एकट्ठा भ' भारतीय सेनाक जवान लेल स्वेटर-मफलर-टोपी मोजा-दस्ताना बुनाइ करी आ पठाबी मोटाक मोटा। एक दिन सुनलहुँ जवान सभक ऊनी वस्त्र आ भोजनक पैकेट जे हवाइ जहाज सँ खसाओल गेलै ओ चीनी ठेकाना पर खसि पड़लै। हमरा लोकनि रेडियो सूनि स्तम्भित भ' गेलहुँ। लागल जेना हमरे सभक बुनलाहा वस्त्र चीनी ठेकाना पर खसि पड़ले जाहि मे प्रत्येक छात्रा अपन सम्पूर्ण शुभकामनाक डोरि बन्हने छलै। केओ छात्रा रात्रि भोजन नइँ ग्रहण कयलनि। भूख सँ सर्दी सँ छटपटाइत अपना जवान सभक पीड़ा भोगैत ककरहुँ नीन नइँ भेलै। छात्रावासक 350 बहिन फौजी भाइ लोकनिक पीड़ा सँ ओतप्रोत रहथि।

एहना मे आकाशवाणीक सम्भवत: चौपाल सर्वभाषा कवि-सम्मेलन आयोजित कयलक। श्री मधुकर गंगाधर हमरा कहलनि, 'तुम मैथिल हो, मैथिली मे एक कविता लिखकर लाओ।' हम चुपचाप हुनका दिस ताकय लगलौं, 'अरे भइ न हो तो हिंदी मे लिख लो और उसे मैथिली मे अनुवाद कर लो, मायानन्द जी को दिखा देना।'

'अगर लिखना होगा तो मौलिक लिखूँगी।' हम कहलियनि। ओ प्रसन्न भेलाह। पहिल मैथिली रचना हमर वैह कविता छल। रचनाक नाम छल—'सामाक गीत' जे भारतीय फौजक जवान वास्ते छलै।

राष्ट्रीय आपदाक घड़ी मे प्रथम मैथिली रचना हमरा मैथिली लेखनक प्रस्थान बिन्दु अछि। ओ दिन छलै आ अझुका दिन—हमर मैथिली रचना मोन मे मातृभाषा मे आकार लैत अछि आ हम मातृभाषा मे पहिने लीखि देब तखनहि फेर हिंदी मे ओकर अनुवाद करब।

हिंदी रचनाक भूमि मिथिला छै। मिथिला भूमिक ओ क्षेत्र जतय सँ कोनो रचनाकार हमरा रचना करय धरि नइँ उपचरल छलाह। आबहु कहाँ? हमर प्रथम कथा जे धर्मयुग मे छपल छल तकरा वक्तव्य मे ई दर्ज अछि। कोसी तटबन्धक पेट मे 'नो मैन्स लैण्ड' केर वासी उषाकिरण खान चाहैत छथि जे अइ ठामक दुख-सुख, संस्कृति सभ्यता आ संवेदना सम्पूर्ण भारत जनै तेँ हिंदी मे लिखलहुँ आ धर्मयुग सन व्यापक आवश्यक पत्रिका मे लिखलहुँ अछि। धर्मयुगक व्यापकता हमरा व्यापक बना देलक।

यद्यपि सन् सतहत्तर अबैत-अबैत हम अपना लेखनीक मौन सँ त्रस्त भ' किछु लिखबाक चेष्टा करय लगलहुँ। बारह वर्षक पछाति कलम धरक इच्छा छल। यात्री

कका आयल छलाह, हमरा लोकनि कोनो गेस्ट हाउस मे रही। हुनका सँ भेट करय बटुक भाइ अयलाह। ओ कहलनि, 'अहाँ तँ, कवयित्री छी, आब किछु लिखियौ।' हम उत्तर देलियनि, 'मुदा कविता नइँ कथा लिखब।' यात्री कका कहलनि, 'गुड डिसीजन!' आ प्रसन्न भेलाह। कहलनि, 'तों जाहि परिवारक छह, जे सब देखलह-भोगलह तथा आइ जे देखै छह तकर कथा लिखह। तीस वर्ष मे स्वातन्त्र्य चेता आम भारतीय, खास भारतीय आ राजनीतिक उठापटक कत' ल' गेलै देश केँ से मैथिल भ' क' लिखह।'

'हमरा सक नै होयत।' कहने रहियनि।

'तोरा सक हेतह। दुनू भाषा पर पकड़ छह, लागि जा।'

प्रथम मैथिली कथा बटुक भाइक कारणें 'बड़गाछ तर' लिखलहुँ फेर कैक टा ने लिखलहुँ। यात्री ककाक इच्छानुसार 'अनुत्तरित' लिखलहुँ, 'दुर्वाक्षत' आ 'हसीना मंजिल' लिखलहुँ। एखनहुँ बूझि पड़ैत अछि जे किछु लिखब सोचैत छी, तँ यात्री कका पाछाँ ठाढ़ भ' लिखबैत छथि।

नेन्ना मे जखन बाबूजीक मुँहें क्रान्तिकथा सुनी, हुनक स्वनामधन्य संगी अग्रज लोकनि लग बैसी तँ फेर पूछी, 'हम किऐ ने तखन जन्म लेलहुँ, हमहूँ स्वतंत्रता संग्राम मे हिस्सा लितहुँ।' बाबूजी कहितथि, 'आब तोरा सभ केँ देशक पुनर्निमाणक चिन्ता कर'क छौक।' हम गम्भीरतापूर्वक देशक पुनर्निमाण पर विचार करी। कोना करी? बाबूजीक कन्हा मझधारे मे छूटि गेल। ताहि सँ मात्र हमरहि आ हमरे परिवार वा समाजक क्षति भेल हो से नइँ, हुनक नव बनल मित्र जे पाछाँ हमर ससुर भेलाह—पं. बहादुर खान शर्मा केर परिवार आ पुत्र केँ सेहो भारी क्षति भेलनि। कोसी तटबन्धक स्वरूप आ उपयोगिता पर बाबूजी जे संगठन बनाक' क' सकैत छलाह से नइँ भेल। अमृत ज्ञानशालाक अँकुर फूटिते कुम्हला गेल। हमर माय छः गोट दुधपीबाक चिन्ता मे लागि गेलि। हम स्कूल पास कयलहुँ ताहि सँ पहिने हमर विवाह भ' गेल। हमरा संगे घुन जकाँ बेचारे रामचन्द्र खान जी सेहो पिसा गेलाह। कोसिकन्हाक पानि मे डूबल खेत आ खर्चीला शिक्षा भारी प्रत्यवाय। विवाहक बाद हमरा स्वाध्यायक सुझाव देल गेल, मुदा से ने हमरा माय केँ स्वीकार रहै आ ने पति केँ। हम पटनाक मगध महिला कॉलेज आबि गेलहुँ। हमरा संगे हमरा स्कूलक आठ टा संगी अयलीह। पति पटना कॉलेजक मिन्टो हॉस्टल मे रहथि। रवि दिन छात्रावास मे एक घंटा भेट होयबाक प्रावधान छलै. मुदा डिस्टिंक्शन धारी, तीव्रबुद्धिक सुन्दर जीजाजीक लेल होस्टलक संगी सभ 'पलक पाँवड़े' बिछाक' राखय। तखन हमरा लोकनि प्रेमपत्र पर निर्भर करी। ई प्रेमपत्रक सिलसिला हमरा आधुनिक शब्द-भंडार सँ परिचय करओलक। रामचन्द्र जीक भाषा हिंदी किंवा मैथिली आधुनिक भावबोध सँ भरल

रहै छल। अनायास हम अधिक सुविज्ञ होइत गेल होयब।

बी.ए. करय पटना कॉलेज गेलहुँ प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व मे ऑनर्स, इतिहास आ मैथिली अंग्रेजी संग मे। मैथिलीक कक्षा मे कहियो-कहियो मात्र प्रो. आनन्द मिश्र आबथि मुदा जे किछु कहने हेताह ओ उपयोगी आ उत्साहवर्धक रहय। मैथिली कक्षाक हमर संगी सभ कहता जे बाजयबला भाषा पर सभ हमर खूब हँसी उड़ाबथि। प्रथम टर्मिनलक परीक्षाफल ल' डॉ. लेखनाथ मिश्र आ प्रो. आनंद मिश्र संगहि बजओलनि हमरा सभ केँ आ शाबाशी देलनि जे, 'उषाकिरण केँ सभ सँ बेसी नंबर अयलनि अछि।' तँ हम मैथिली लेखनक लेल तैयार भ' रहल छलहुँ।

प्रभास कुमार चौधरीक पहल पर आशुतोष सिंह ठाकुरक आवास पर एक टा मैथिली गोष्ठी भेल छल जाहि मे पत्रिका निकालबाक योजना सेहो छलै। नाम पर बेश घमर्थन भेलै। फेर हमर सुझाओल नाम 'अभियान' पत्रिकाक लेल उचित बूझल गेल। ई सभ घटना हमरा अन्तर्पट पर छपाइत गेल आ मैथिली लेखनक लेल आत्मविश्वासक नींव रखलक।

हम अपना आप केँ साहित्य सरोवरक स्वच्छ जल-बिम्ब मे निहारै छी तँ एके टा चेहरा देखाइत अछि जे पूर्णरूपेण मैथिल अछि, मुदा भारतवर्षक उत्तरीय माथ पर नेने।

अंतिका, जुलाइ-सितंबर, 2009

नयन-उपनयन

नरेन्द्र

ई अनुमान करब कठिन छै जे लोक अइ धरती पर कहिया आयल। ओ सोचब कहिया शुरू कयलक। बाजब कहिया शुरू कयलक। कोन काल मे गीत गायब आ हँसब-कानब शुरू कयलक। आ सब सँ बढ़िक' ओकरा मे अनुभूति करबाक गुण कहिया विकसित भेलै। अइ सबहक हिसाब-किताब बहुत मोश्किल छै। तहिना हम लिखब कहिया शुरू कयलहुँ ई बतेनाइ कठिनो अछि आ निरर्थको। हम अपन पहिल कविता कहिया लिखलहुँ तकरो आब कोनो लेखा-जोखा नइँ अछि। हमरा जहिया सँ होश अछि तहिये सँ हमरा संग कविता अछि। कविता हमर रक्तप्रवाह मे अछि। कविता हमर हृदयक स्पन्दन मे अछि। कविता हमर फेफड़ाक साँस-साँस मे अछि। असल मे हम अपना केँ कविता सँ अलग क'क' देखिये नइँ सकैत छी। तथापि कि कविता सँ अलग हमर कोनो अस्तित्व नइँ अछि?

नेनपन मे जेँ कि हमर कोनो वैचारिक आधार नइँ छल तँ कविता मात्र कविता लेल करैत रही। कोनो उद्देश्य नइँ छल। ने अपन कोनो भाषा, ने मोहावरा, ने चिंतन, किछु ने। विचारक पहिल संस्कार जे भेल से आरएसएस मे जाक'। ओत्तहि जाक' ई पहिल बेर अवगति भेल जे हम मनुक्ख नइँ हिंदू छी। आ हमर ई देश हिंदुस्तान नइँ हिंदुस्थान अछि। जे हमरा हिंदू साम्राज्यक स्थापना लेल अपन तन-मन-धन न्यौछावर क' देबाक चाही—मातृभूमि से हमको प्यार, सर्वस्व अर्पण को तैयार। ओही ठाम ईहो बूझल भेल जे गाय हमर सभक माय अछि आ ओकर हत्या कर'वला सब मातृहंता आ पापी अछि। विधर्मी अछि। तँ ओकरा सब सँ घृणा करबाक चाही, 'यह देश धरम का नाता है, गो हमारी माता है।' पहिल बेर जनतब भेल जे हमरा लोकनिक सब सँ पैघ धर्म आ कर्तव्य हिमालय सँ ल'क' कन्याकुमारी धरि अखंड हिंदू साम्राज्यक स्थापना कयनाइ अछि। जे हमर सभक आदर्श पुरुष शिवाजी छथि। ओइ काल मे हम मैट्रिको पास नइँ रही। 67-68क गप्प अछि। सतमा आकि अठमा

मे पढ़ैत हैब। जेना कि कहि चुकल छी कविताक लुतुक लागि गेल छल। खूब लिखी। जे मोन मे आबय से लिखी। नदी पर, पहाड़ पर, फूल पर, चिड़ै पर, बादल पर, महात्मा गांधी पर, नेहरू पर, एत' धरि जे कुकूर-बिलाड़ि पर पर्यन्त। देशक महानता द' अथवा चीन-पाकिस्तानक दुष्टता मादे किछु नइँ बूझल छल, मुदा सुजलां-सुफलां आकि सारे जहाँ से अच्छाक तर्ज पर थोकभाव मे लिखी। चीन आ पाकिस्तान केँ धोखेबाज, जालिम आ हमलावर साबित करी। हमर साथी-संगी सब ओ कविता कते बूझै छल से तँ नइँ कहि, मुदा खूब मानै छल। ओ सब अपना सँ बेसी काबिल आ बोधगर बूझै छल। शिक्षक वर्ग सेहो मोजर दै छल। मुदा कविता एखनधरि कत्तौ छपल नइँ छल। सेहन्ता हुअय जे बालक, चुन्नू आकि पराग मे कविता छपय, मुदा कतौ पठाबी से ने तँ भीतर सँ हिम्मति होइ छल आ ने अवगतिये छल।

तँ शाखा मे पहिले-पहिल गेलहुँ खेलक लोभे। ओइ ठाम रंग-बिरंगक खेलक आयोजन कयल जाइ। एहन-एहन खेल जे पहिने ने तँ कहियो देखने-सुनने रही आ ने खेलायल रही। दोसर आकर्षण छल 'लेजिम' बजेनाइ। आ तेसर छल लाठी भाँजब सिखनाइ। ओइ अवस्था मे ई सब हमरा लेल आने-आन बच्चा जकाँ खूब कुतूहलपूर्वक आ रोमांचक छल। मुदा सब सँ बेसी जे आकर्षित कयलक से वरिष्ठ स्वयंसेवक द्वारा सम्मान देनाइ। ओइ उम्र मे घर सँ बाहर धरि प्राय: लोक तुम-ताम सँ सम्बोधित करैत छल। मुदा शाखा मे छोट सँ छोट स्वयंसेवक केँ नामक आगाँ 'जी' लगाक' संबोधित कयल जाइ आ सब केँ 'आप' कहल जाइ। एतबे ने अपना सँ छोटो केँ 'नमस्ते' कहल जाइ। ई सब हमरा सम्मोहनक हद धरि प्रभावित कयलक। बड्ड सम्मानबोध होअय। शाखा हमरा घरक सोझाँवला मंदिर पर लगै छल। ओकर मुख्य शिक्षक रहथि—जीवेश्वर जी। ओ लोकल रहथि। जीवेश्वर जी जीवनदानी रहथि। बहुत नीक उच्चारणक संग हिंदी बाजथि। गला बहुत सुंदर रहनि। एक सँ एक गीत गाबथि। गीत हमहूँ गबैत रही। से ओ हमरा पाँजि लेलनि। जल्दीये हमरा पर विश्वास क'क' कैक तरहक जवाबदेही सब देब' लगलथि। एत' धरि जे जहिया हुनका कोनो कारण सँ शाखा नइँ अयबाक रहनि तँ सब टा कार्यभार हमरे द' जाथि। ई एक टा अलग तरहक गौरवबोध छल। अनेरो सब मे शेषर बनबाक अनुभूति। तँ हम शाखा लगाबी। सावधानदक्ष, अरमड कराबी। वामवृत्त; दक्षिणवृत्त; आ क्षिप्र चल:। सब टा कंठस्थ भ' गेल छल। तकर एक टा कारण ई रहै जे मिडिल स्कूल मे स्काउट मे रही आ आब हाइस्कूल मे एन सी सी ल' लेने रही, तँ कवायद आ परेडक मोटामोटी ज्ञान तँ छलहे। शाखा मे सेहो सब टा सैन्य शिक्षा रहै। अन्तर खाली यैह जे माध्यम रहै संस्कृत। माने देवभाषा। माने शुद्ध स्वदेशी। तँ शाखा लगाबी। खूब ह्वीसिल बजाबी आ अंत मे भगवा ध्वजक सोझाँ सब गोटे पंक्तिबद्ध ठाढ़ भ'क'

सावधान दक्षक मुद्रा मे ध्वजगान शुरू करी—

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे, त्वया हिंदू भूमे सुखंवर्द्धितोऽहम।
महामंगले पुण्यभूमे त्वदर्थे प्रतत्यो सकाये नमस्ते-नमस्ते॥

तकरा बाद भारत माता की जय। आ तखन एक-दोसरा केँ नमस्ते-नमस्ते क'क' अपन-अपन घर जाइ।

शाखा मे बरोमहल पैघ-पैघ नेता सभक कार्यक्रम राखल जाइ। बेसी तर नेता नागपुरक। ओ सब 'बौद्धिक' रहथि। ओ सब टा बौद्धिकक लब्बोलुआब यैह जे मुसलमान महान क्रूर, नीच, पातकी, नृशंस आ दगाबाज होइत अछि। ओ सब हिंदुस्तानी नइँ अछि। बाहरी अछि आ हमर सबहक उदारता किंवा भलमानसाहतक लाभ उठाक' एत' कुंडली मारिक' बैसल अछि। ई सब हिंदुस्तानक संस्कृति केँ नष्ट क' रहल अछि। धर्मक नाश क' रहल अछि। हिंदू केँ भठाक' मुसलमान बनब' चाहैत अछि आ संपूर्ण हिंदुस्तान केँ पाकिस्तान मे बदलि देबाक घृणित षड्यंत्र मे लागल अछि। जानि-बूझिक' ओ सब अपन जनसंख्या बढ़ब' लेल परिवार नियोजनक विरोध करैत अछि आ गनगोआरि जकाँ बच्चा जनमबैत अछि। ओ सब राष्ट्रक दुश्मन अछि। अन्न-पानि खाइत अछि हिंदुस्तानक आ आत्मा बसै छै मक्का-मदीना मे। हिंदू बढ़य नेम सँ आ मुसलमान बढ़य कुनेम सँ। ओ सब सभ टा आचार-व्यवहार सनातन धर्मक ठीक उनटा करैत अछि। ई सब अइ देशक अखंडता केँ तोड़' चाहैत अछि। उग्रवादी अछि। आतंकवादी अछि। बल्कि पाकिस्तानी एजेंट अछि। तेँ ओकरा सब सँ घृणा करबाक चाही। ओ सब इस्लामी देश मे हिंदू महिलाक इज्जति लूटैत अछि। स्तन काटि दैत अछि। गुप्तांग दागि दैत अछि। पुरुष सभ केँ जीविते आगि मे झरकाक' मारि दैत अछि। हमरा सभ केँ धर्मक रक्षार्थ, हिंदूक रक्षार्थ ओकरा सब सँ बदला लेबाक चाही। सठे साठ्यं समाचरेत। धर्मयुद्ध मे हमरा लोकनि आइधरि अही दुआरे पिछड़ि गेलहुँ जे हम सब संगठित नइँ छी आ चाणक्य नीति केँ आत्मसात नइँ कयने छी। युद्ध मे जायज, नाजायज किछु नइँ देखबाक चाही। महान उद्देश्यक प्राप्ति लेल कोनो टा कल-बल-छल अनैतिक नइँ छै। अही मोर्चा पर हमसब आइधरि पिछड़ैत रहलहुँ तेँ विदेशी सब आबिक' घर-दुआर मे कब्जा जमयने रहल। आब सचेत होयबाक समय अछि। देश-कालक माँग अछि। भारतमाता बलिदान माँगि रहल छथि—गर्व सँ कहू हम हिंदू छी। ई हमरा लौंकनिक उदासीनतेक परिणाम अछि जे विधर्मी सब हमरे देश मे रहिक' जाहि गाय केँ हम सब माता कहिक' पूजैत छी तकर निर्ममतापूर्वक हत्या करैत अछि। ओकर मासु खाइत अछि। देश भरिक मंदिर केँ मस्जिद मे बदलने जा रहल अछि। जबरदस्ती लोकक मुँह मे गोमांस ठूसि क' इस्लाम धर्म मानबा लेल मजबूर करैत अछि। हमरा लोकनि केँ अइ

अनलकांत (गौरीनाथ) द्वारा संपादित 'अंतिका' मे 'अपना नजरि मे' नाम सँ एक टा स्तंभ छपैत रहल अछि, जाहि मे अनेक रचनाकारक संक्षिप्त आत्मकथा प्रकाश मे आयल। आब ओ केदार काननक संपादन मे पुस्तकाकार आबि रहल अछि।

मैथिली मे आत्मकथा आ जीवनीक लेखन बड़ विरल अछि। एहना स्थिति मे एतेक रास रचनाकारक आत्मकथात्मक इतिवृत्तक प्रकाशन परम संतोषक विषय थिक।

लेखक द्वारा रचित संसार आकर्षक होइत अछि; लेकिन लेखकक अपन जीवन तँ पाठक लेल अतत्तह रहस्यमय आ विस्मयकारी होइत अछि। लेखक के अंतरंग जीवन के झलक पयबा लेल पाठक मे भारी उत्सुकता रहैत छै। साहित्य मे जाहि जादुई भव्यताक दर्शन ओ करैत अछि, तकर मूल धरि पहुँचबाक लेल ओ लेखकक जीवन-सागर मे उतरय चाहैत अछि। ओहि अतल तल केँ स्पर्श करबाक लेल व्यग्र रहैत अछि, जतय साहित्य रूपी मोतीक स्रोत आ प्रेरणा नुकायल छै।

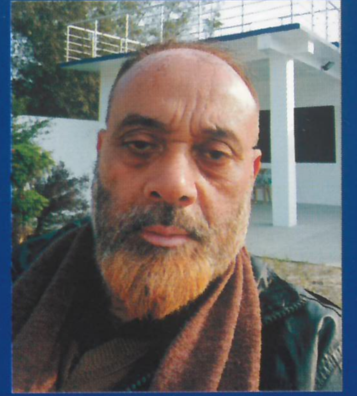
ई पोथी पाठकक ओहने चिर संचित अभिलाषा केँ परिपूर्ण करैत अछि।

—सुभाष चंद्र यादव

'अंतिका' अपन प्रकाशनक थोड़बा कालखंड मे जे अविस्मरणीय काज सब क' सकल ताहि मे 'अपना नजरि मे' स्तंभक बहुत महत्त्व छै। 'अपना नजरि मे', मने स्वयं अपना जीवन केँ देखबाक, लेखकक नजरिया। अपना समयक कृतकार्य लेखक लोकनि सँ ई लिखबाओल जाइत छल। खूब मन सँ लोक लिखितो छला।

परिभाषा मे जँ बान्हब तँ जीवनक एक अर्थ होयत। मुदा, वास्तविकता मे जँ देखब तँ तते विविधता भेटत जे बुझू बेहोश केँ होश मे आनि क' ठाढ़ क' देत। जीवन-दर्शन, जीवन-मूल्य आ जीवन-दृष्टि जें कि हरेक सचेत लोकक भिन्न-भिन्न रहैत छै, जे अपन पृष्ठभूमि आ परवरिश सँ प्रोग्राम्ड भेल रहै छै, तँ आदमी बदलने पूरा परिदृश्ये बदलल देखाइत अछि, भने एक्के मिथिला मे किऐ ने सब क्यो विकसित भेल होथि आ एक्के मैथिली मे सब क्यो लिखने होथि। जाहि समय मे ई अंक सब आयल रहय, बहुत ललक संग एहि आत्मकथ्य सब केँ पढ़ल गेल आ हमरा पक्का भरोस अछि, आजुक पाठक सेहो एहि रचना सब केँ साँस रोकि क' पढ़बा जोग पौता। जीवन जते रोमांचक होइ छै, ताहू सँ बेसी रोमांच छै जीवन-कथा पढ़बा मे।

—तारानंद वियोगी



केदार कानन

जन्म : 10 जुलाइ, 1959 केँ सुपौल, बिहार।

शिक्षा : एम.ए (मैथिली आ हिंदी)

कृति : 'आकार लैत शब्द', 'व्योम मे शब्द' (कविता-संग्रह), 'अक्ष पर नचैत' (जीवकांत पर केंद्रित)।

'मैथिली कविताएँ', 'प्रायश्चित', 'निशांत की चिड़िया', 'तुमि चिर सारथि' आदि पोथीक मैथिली सँ हिंदी अनुवाद, 'भारतीय परंपराक भूमिका', 'मगध', 'अकाल मे सारस', 'देवताक घाटी' आदि पोथीक हिंदी सँ मैथिली अनुवाद आ 'चंदु मेनन' एवं 'राजा राममोहन राय'क अंग्रेजी सँ मैथिली अनुवाद प्रकाशित छनि।

महत्त्वपूर्ण मैथिली पत्रिका 'संकल्प' आ 'भारती मंडन'क संपादक। दर्जनाधिक पोथी आ कतेको पत्रिकाक संपादन-सहयोगी। अनेक महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिका मे हिनका द्वारा अनूदित रचना निरंतर छपैत रहलनि अछि।

साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार सहित कतेको सम्मान सँ सम्मानित।

सम्प्रति : प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, सुखासन, मधेपुरा सँ प्राचार्य पद सँ सेवा-निवृत्तिक बाद स्वतंत्र लेखन आ संपादन मे व्यस्त।

संपर्क : किसुन कुटीर, गुदरी बाजार,



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4

मूल्य : ₹ 275/-

